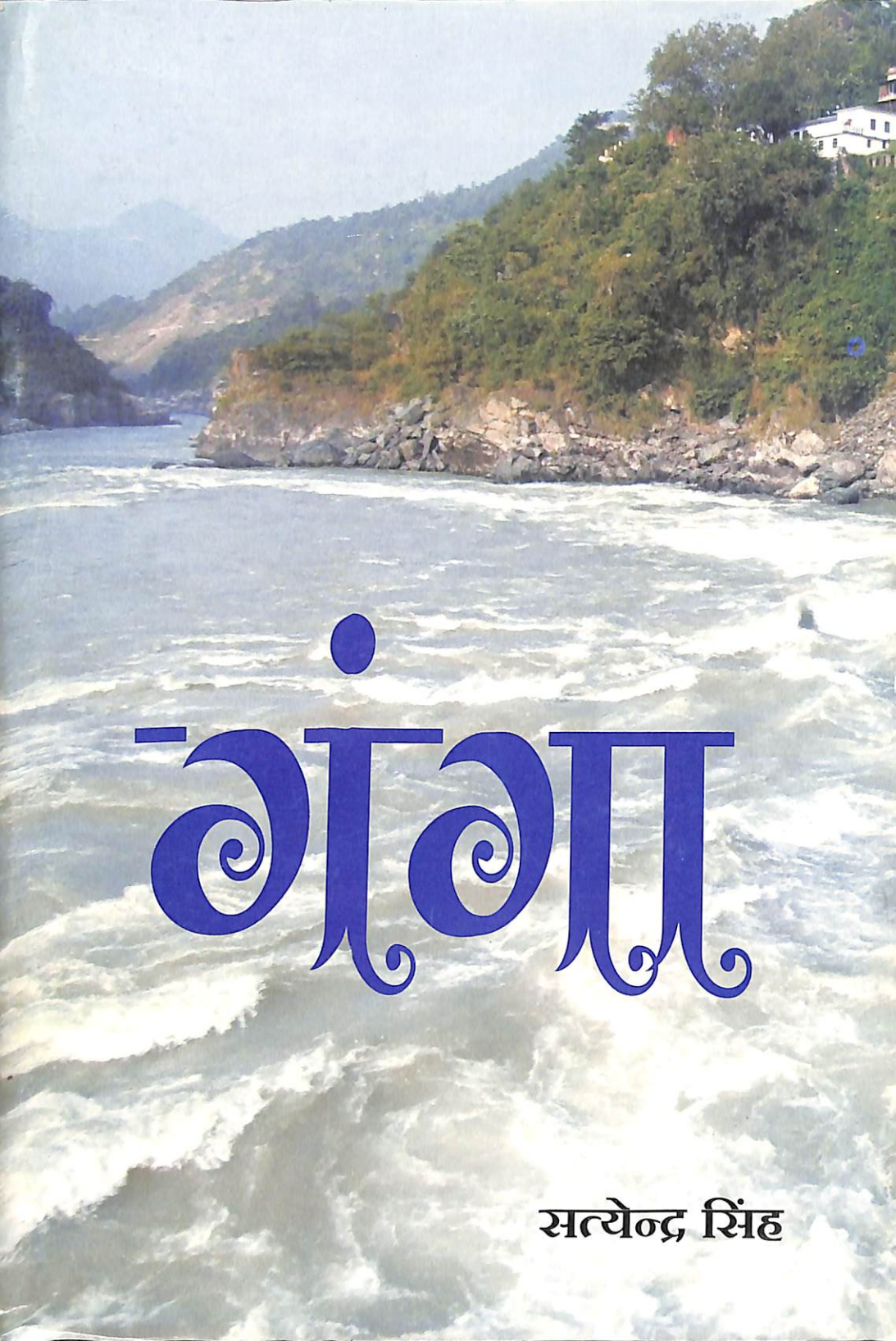

गंगा

सत्येन्द्र सिंह

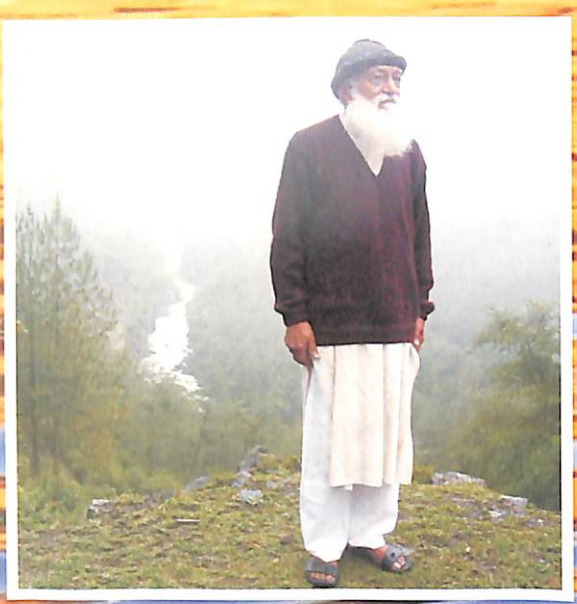

डॉ. जी.डी. अग्रवाल
गंगा की दुर्दशा को देखकर
चिन्ता मग्न

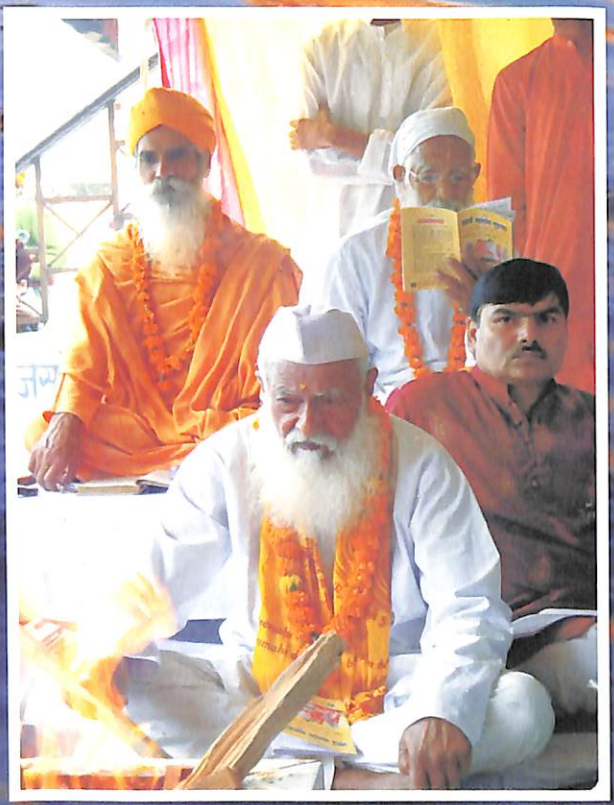

डॉ. जी.डी. अग्रवाल
गंगा संरक्षण यज्ञ करते हुए

स्वर्गाद् गां गतवतीति गंगा

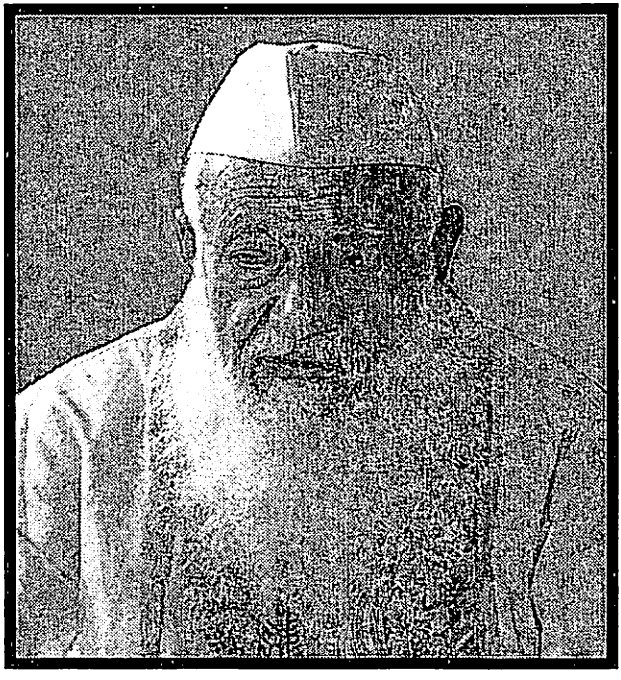

गंगा संरक्षक डॉ. गुरुदास अग्रवाल को सादर समर्पित

तरुण भारत संघ

(धार्मिक ग्रन्थों से संकलित गंगा संबंधी विवरणों के आधार पर)

स्रोत
श्री हरिवंशपुराण, पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, स्कन्द पुराण, नारद पुराण, महाभारत, ऋगवेद संहिता आदि।

मूल्य
रुपए 60/- मात्र

प्रथम संस्करण
26 जनवरी, 2009

प्रकाशक
तरुर्ण भारत संघ
भीकमपुरा किशोरी वाया थानागाजी,
जिला : अलवर - 301022, राजस्थान
फोन : 01465-225042
ई-मेल watermantbs@yahoo.com

वितरक
जल बिरादरी,
34/46, किरण पथ,
मानसरोवर, जयपुर 302020
फोन : 0141-2393178
ई-मेल jalbiradari@gmail.com

प्रेरक एवं मार्गदर्शन
मनोहरसिंह राठौड़, अरुण तिवारी

संपादन
ज्ञानेन्द्रसिंह रावत

रूपांकन एवं मुद्रण
कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

"हे नदियों ! भरण पोषण को लक्ष्य करके आपके पार जाने के अभिलाषीजन पार हो गए। ज्ञानीजनों ने आपके निमित्त उत्तम स्तुतियों को अभिव्यक्त किया। आप अन्नों की प्रदात्री और उत्तम ऐश्वर्यवती होकर नहरों को जल से परिपूर्ण करें और शीघ्र गमन करें। हे नदियों ! आपकी तरंगें रथ की धुरी से टकराती रहें । हे दुष्कर्महीना, पापरहिता, अनिन्दनीया नदियो! आपको कोई बाधा न हो।

हे सरिताओं ! आप भली प्रकार से सदैव गतिशील रहने वाली हैं। मेघों का ताड़ित होने, बरसने के बाद आप जो कल-कल ध्वनि नाद कर रही हैं, इसीलिए आपका नाम 'नदी' पड़ा। वह नाम आपके अनुरूप ही है।"

विषय सूची

1. प्राक्कथन 5

2. आमुख 7

3. भूमिका 9

4. गंगा का अर्थ, पूजन एवं अवतरण 13

5. गंगा की उत्पत्ति के विषय में भविष्यवाणी 17

6. पुराणों में गंगा की उत्पत्ति का वर्णन 18

7. गंगावतरण के उपाख्यान की महिमा एवं माहात्म्य : 26
   - बाल्मीक रामायण में विश्वामित्र और श्री राम का संवाद,
   - पदम पुराण में ब्राह्मण और व्यास जी का संवाद,
   - स्कन्द पुराण में भगवान महादेव और विणु का संवाद,
   - नारद पुराण में मोहिनी और वसु का संवाद

8. गंगा जी के दर्शन, स्मरण तथा उनके जल में स्नान करने का महत्व 35

9. कालविशेष और स्थल विशेष में गंगा-स्नान की महिमा 37

10. देश विशेष के योग से गंगा स्नान फल 39

11. गंगा जी के तट पर किये जाने वाले स्नान, तर्पण, पूजन तथा विविध प्रकार के दानों की महिमा 41

12. गंगाजल और तुलसी 44

13. गंगा सहस्त्रनाम 45

14. वेदों में नदी-विश्वामित्र संवाद 70

प्राक्कथन

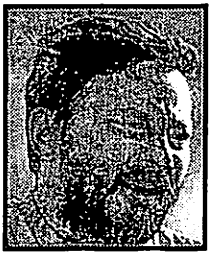

सरिताओं में श्रेष्ठ जह्नु पुत्री गंगा ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर उतरी थीं, इसलिए यह तिथि पुण्यदायिनी मानी गयी है। गंगाजी के अवतरण के उपलक्ष में भारत सरकार और राज्य सरकारों की ओर से हर वर्ष भारतीय जनता को शुभकामनाएं दी जाती हैं। भारतीय समाज में गंगा अवतरण एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में गंगा अवतरण को ज्येष्ठ मास, शुक्लपक्ष, हस्त नक्षत्र, दिन बुध, तिथि दशमी गरकरण, आनन्द योग, व्यतीतपात, कन्या राशि, चन्द्रमा और वृष राशि के सूर्य– इन दस योगों से युक्त दशमी तिथि दस पाप हर लेती है, इसलिए उसे **'दशहरा'** कहते हैं। जो इस 'दशहरा' में गंगा जी के पास पहुंचकर प्रसन्नचित हो, विधिपूर्वक गंगाजी के जल में स्नान करता है, वह भगवान विष्णु के धाम को जाता है।

गंगा जी के गुणों को हमारे ऋषि–मनीषियों ने अपने–अपने ज्ञान–विज्ञान से सोच–समझकर भारतीय समाज के बीच गंगा की तरह स्वीकार कर प्रवाहित किया है। ऐसा नहीं है कि गंगा जी का गुणगान केवल हमारे ऋषि–मुनियों ने ही किया है। ईश्वर तत्व शक्ति में अवतरित राम, कृष्ण, शिव, विष्णु, ब्रह्मा, मनु, वामन जी, वराह भगवान् का अस्तित्व भी गंगा में समाहित है। रामायण के राम विश्वामित्र से गंगा के किनारे बैठ गंगा जी का गुणगान सुनते हैं, तो गीता के उपदेश में कृष्ण अपने को नदियों में भागीरथी गंगा को अपना स्वरूप मानते हैं। गंगा जी विष्णु भगवान के चरण कमलों में शरणागत रहती हैं, तो ब्रह्मा जी के कमण्डल में निवास करती हैं। भगवान शिव गंगा को अपनी जटाओं में धारण करते हैं, तो वराह रूप धारी भगवान् अपनी शुद्धि के लिए गंगा में स्नान करते हैं।

गंगा जी के दर्शन मात्र से मनुष्य के दस प्रकार के पाप–बिना दिये हुए किसी की वस्तु ले लेना, हिंसा करना और परायी स्त्री के साथ संबन्ध रखना–ये तीन प्रकार के शारीरिक पाप यथा–माने गये हैं। कठोरतापूर्ण वचन, असत्य, चुगली तथा अनाप–शनाप बातें बकना–ये चार प्रकार के वाचिक पाप कहे गये हैं। दूसरे का धन हड़पने की बात सोचना, मनसे किसी का अनिष्ट–चिन्तन करना और झूठा अभिनिवेश, 'मरण–भय' ये तीन प्रकार के मानसिक पाप हैं, नष्ट हो जाते हैं। श्री मनु के अनुसार गंगा के दर्शन से मनुष्य में दस धर्म अनायास समाहित होते हैं। ये धर्म निम्नवत हैं।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीविद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।

धैर्य, क्षमा, मन का निग्रह, चोरी न करना, बाहर–भीतर की पवित्रता, इन्द्रियनिग्रह, सात्त्विक बुद्धि, अध्यात्म विद्या, सत्य और अक्रोध।

गंगा के प्रति भारतीय जन की धार्मिक आस्था प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में प्रकृति व उसकी प्राकृतिक संरचना से जुड़ी हुई होती है। अगर किसी कारणवश भारतीय आस्था आहत होती है, वहां प्रकृति–विनाश की झलक साफ दिखाई देने लगती है। यह सब गंगा के अस्तित्व को देख, समझ सकते हैं। भारतीय समाज की जीवनशैली में अब आस्था–विकास–विनाश का योग बन गया है। समाज की बदलती जीवनशैली के लिए विकास चाहिए। विकास के लिए कुछ न कुछ तो विनाश करना ही होगा। विकास के लिए विनाश करने से आस्था टूटती है। आस्था टूटने से समाज टूटता है। समाज टूटने से प्रकृति की संरचना नष्ट होती है। यह सब आजकल भारतीय समाज में देखा जा सकता है।

भारतीय समाज का टूटना प्राकृतिक संपदा से विमुख होकर एक साधन के रूप में उपभोग करना मात्र बचा है। आज के आधुनिक विकास की लहर प्रकृति और समाज की आस्था को तोड़ती नजर आ रही है। जहां कहीं कुछ आवाज उठती है तो उसे विकास में अवरोध मानकर दबा दिया जाता है। देश की पवित्र नदियों को विकास की बलि चढ़ाया जा रहा है। गंगा जैसी देव नदी को भी नहीं छोड़ रहे हैं जो भारतीय समाज की आस्था का केन्द्र–बिन्दु है। इसके किनारे बैठ कर मनुष्य परम सुख प्राप्त करता है। ऐसी देव नदी का संरक्षण करना वर्तमान पीढ़ी का पहला कर्तव्य बनता है। उसे अपने जीवन के लिए गंगा को भी संरक्षित करना होगा।

तभी भारतीय प्रकृति की संरचनाओं का संरक्षण होगा। यह सब किसी के कहने से नहीं, स्व अपनी आत्मा की आवाज से ही प्रेरित होना और कार्य करना ही पूर्ण संकल्प है, यह मानकर चलना होगा। यही हमारे जीवन का पाथेय है।

राजेन्द्रसिंह

अध्यक्ष, तरुण भारत संघ

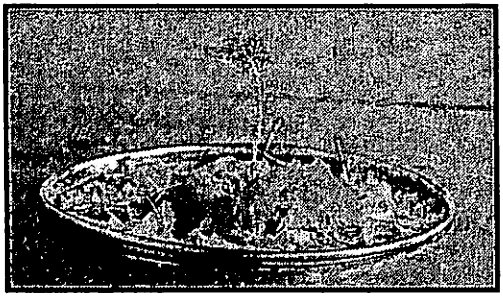

आमुख

गंगा सेवा अभियान के माध्यम से जल बिरादरी ने गंगा को एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक के रूप में संवैधानिक मान्यता व संरक्षण की मांग केन्द्र सरकार के सामने रखी थी। जल बिरादरी व अन्य संस्थओं के पिछले एक वर्ष के अथक प्रयास के परिणामस्वरूप प्रधानमंत्री की पहल से गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित किया।

गंगा स्वरूप का एक आध्यामिक पक्ष है व दूसरा भौतिक पक्ष। दोनों का पक्ष का मानव मात्र के लिए जानना बहुत महत्वपूर्ण व कल्याणकारी है। आध्यात्मिक पक्ष मुक्तिदायक है व भौतिक पक्ष जीवनदायक है। इस पुस्तक में आध्यात्मिक पक्ष का विविरण है। भौतिक पक्ष के लिए अभी लेखक का प्रयास जारी है।

गंगा केवल हिन्दुओं की आस्था का ही केन्द्र नहीं, बल्कि गंगा दुनिया की अस्मिता की पहचान भी है। यह सबकी है, पूरी दुनिया की है। गंगा के किनारे जुटने वाले कुंभ में सभी का स्वागत होता है। गंगा किनारे न कोई हिन्दू होता है, न मुसलमान, न सिक्ख, न ईसाई, न अमीर, न गरीब, न राजा , न प्रजा यहाँ तो सभी गंगा की संतान हैं। गंगा के प्रति श्रद्धा के पुष्प चढ़ाने आये श्रद्धालु, भक्त होते हैं।

गंगा नदी का पानी विश्व की सभी नदियों के पानी से अलग, अमृतमयी है। इस तथ्य को अनेकों देशों के वैज्ञानिकों ने स्वीकारा है। गंगा केवल एक नदी नहीं है, 'गंगा' भारतीय संस्कृति की महाधारा है। गंगा जल केवल जल नहीं रोगविनाशक अमृत जल है।

किन्तु जो गंगा कभी दूसरों को जीवन देती थी। वह आज जीवन लेने वाली बन गई है। जिसे युगों-युगों तक अमृत धारा कहा गया, वह खुद आज एक मृतधारा हो गई । उसका जल इतना विषैला हो गया है कि बीमारी देने व प्राण लेने वाली बन गई है। गंगा में प्रदूषण बढ़ रहा है। तट के सभी शहरों व गांवों का कचरा, शौचालयों का मल, कारखानों का कचरा व उत्सर्जन गंगा में बहाया जाने लगा है। गोमुख से गंगा सागर तक प्रदूषण बढ़ रहा है। गंगा जल अब आचमन करने योग्य नहीं रहा। गंगा के आस-पास के भूजल के शोषण की बढ़ी हुई रफ्तार ने भी गंगा ने पेट खाली किया है। गंगा को समृद्ध करने वाली सहायक नदियां यमुना,

रामगंगा, तमसा, गोमती, सई और सरयू आदि भी अब जलाभाव व प्रदूषण की शिकार हैं। आज समाज के सामने सबसे बड़ा प्रश्न है कि गंगा की हालात का जिम्मेदार कौन हैं? क्या हम खुद? इतनी बड़ी आस्था वाले भारत में गंगा की दुर्दशा क्यों? गंगा आज समाज से प्रश्न कर रही है। जबाव दीजिए कि गंगा मानव-प्रदत्त पाप धोने कहां जाये? क्या सबका कारण समाज व सरकार की बदलती मानसिकता, नदियों के प्रति उपेक्षा और उदासीनता व नदियों को कमाई का साधन मान लेना है?

गंगा को राष्ट्रीय प्रतीक घोषित कराना मात्र ही हमारा उद्देश्य नहीं था, बल्कि गंगा को पुनः अमृतमयी बनाना है। इसके लिए राष्ट्रीय जल बिरादरी ने पांच सूत्रीय कार्यक्रम चलाने की घोषणा की है। आप भी इसे पढ़ने के बाद महाअभियान में भाग लेकर जीवन सफल बनाएं।

डॉ. मनोहर सिंह राठौड़
पर्यावरण एवं विकास अध्ययन केन्द्र, जयपुर

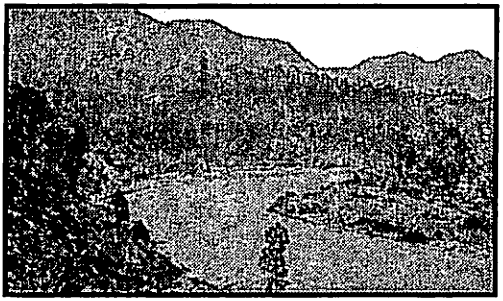

'गंगा का संरक्षण प्रकृति का संरक्षण है'

भूमिका

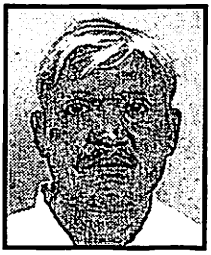

आज विज्ञान का युग है, मनुष्य ब्रह्माण्ड की खोज में लगा हुआ है। ऐसा ही एक महाप्रयोग जेनेवा स्थित यूरोपियन आर्गेनाइजेशन की प्रयोगशाला के नियंत्रण कक्ष में प्रोटोन पुंज छोड़ने के साथ हुआ। कुछ ही क्षणों में दुनिया के वैज्ञानिकों में उल्लास का माहौल छा गया। कम्प्यूटर के स्क्रीन पर उभर आए दो बिन्दु प्रयोग की प्रारम्भिक सफलता के संकेत थे। इस महाप्रयोग में प्रत्यक्ष रूप से करीब 40 और अप्रत्यक्ष रूप से करीब डेढ सौ भारतीय वैज्ञानिक जुड़े हुए थे। महाप्रयोग में भारत का 150 करोड रुपये का भी सहयोग रहा। इतना ही नहीं महाप्रयोग के लिए बनाए गए उपकरणों में भारतीय कल-कारखानों का भी सहयोग रहा है। इस महाप्रयोग में दुनिया के लगभग आठ हजार वैज्ञानिक मौजूद थे। तीस वर्षो से तैयारियां चल रही थीं और खरबों खर्च हुए।

गांव देहात में और लोगों की जुबान पर 10 सितम्बर का दिन प्रलय के दिन के रूप में छाया हुआ था। लोगों में घबराहट थी कि कहीं इस प्रयोग से प्रलय न आ जाये जिससे सब कुछ खत्म हो जाएगा। इसके लिए दो दिन पहले टी.वी. चैनलों और अखबारों के माध्यम से जनता में वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के वक्तव्य आ रहे थे, कि ऐसा कुछ नहीं हैं जिससे प्रलय की आशंका हो। हमारे देश के निवर्तमान राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का भी महाप्रयोग के विषय में स्पष्टीकरण आया कि महाप्रयोग से किसी को कोई खतरा नहीं है। मैं उस सुरंग में जा चुका हूँ। वैज्ञानिक वहां एक **'कण'** का पता लगा रहे हैं ताकि खुलासा किया जा सके कि धरती की उत्पत्ति कैसे हुई ?

आज 10 सितम्बर है, मैं अपने ऑफिस में बैठा हुआ भारतीय सभ्यता-संस्कृति के संवाहक वेद-पुराणों में 'गंगा' को खोज रहा था। जहां गंगा शब्द लिखा मिलता, वहीं निगाहें ठहर जाती और उसको विस्तार में पढ़ने की जिज्ञासा बनती, फिर वेद-पुराणों के पृष्ठ को उलटता-पलटता और पढ़ता। इसमें पूरा दिन निकल गया। गंगा की उत्पत्ति और महिमा के विषय में जितना पढ़ा, समझा, उससे कहीं ज्यादा अपने जीवन में प्रत्यक्ष देखा है। आज के भौतिक युग में भारतीय लोक जीवन की आस्था गंगा के प्रति कम नहीं हुई बल्कि बढ़ी है। मैं गंगा के किनारे का रहने वाला हूँ। गंगा जी में आस्था जन्म से ही है, क्योंकि गांव के जन समुदाय की गंगा जी तीर्थ है, घर-घर गंगाजल रहता है। परिवार के सभी शुभ कर्मों में गंगाजल की जरूरत होती है। गांव समाज में 'गंगा' से बढ़कर अभी कोई संकल्प न देखा

और न ही समझा है। जैसे–गंगा जी की कसम, गंगा की सौगंध, मंदिर में गंगाजल हाथ में रखना आदि अभी वचनबद्धता का प्रतीक बना हुआ है। गंगा की मिट्टी गंगोटी को भी घर में रखना कभी नही भूलते। जीवन की अन्तिम यात्रा के समय मुंह में तुलसी पत्तों के साथ दो बूंद गंगाजल डालना तो जीवन की अन्तिम महोषधि है। इसे गांव के सब गरीब– अमीर लोग करते हैं। इस प्रकार घर में गंगा का अस्तित्व सदैव बना रहता है।

सवाल उठता है कि आज वैज्ञानिक युग में देश की पवित्र पावनी गंगा को वेद–पुराणों में देखने–समझने की ऐसी क्या जरूरत पड़ी ? हाल ही में रामेश्वरम् को लेकर देश में बवाल मचा राजनैतिक दृष्टि से, विकास की दृष्टि से, देश की सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टि से, धार्मिक आस्था की दृष्टि से। इसका न्याय तलाशने के लिए रामेश्वरम् परियोजना को उच्चतम न्यायालय में जाना पड़ा। सर्वोच्च न्यायालय को रामेश्वरम् के संबन्ध में साक्ष्य के रूप में भारतीय वेद –पुराणों से स्पष्टीकरण देने पड़े। जबकि उसकी वैज्ञानिक रूप से कोई वैधता नहीं है। बस ! वह समुद्री किनारा है। फिर भी भारत के करोड़ों लोगों की आस्था का प्रतीक पवित्र स्थान है। न्यायालय ने पौराणिक प्रमाण को कितना स्वीकार किया, यह तो वही जानती है। इतना अवश्य है कि करोड़ों लोगों की आस्था बने रामेश्वरम् के संरक्षण के लिए न्यायालय ने रामेश्वरम् परियोजना के दूसरे विकल्प तलाशने के लिए व्यवस्था जरूर दी है।

दुनिया जानती है कि गंगा भारतीयता की प्रतीक है, सभ्यता–संस्कृति की संवाहक है। युगों–युगों से आध्यात्म और धार्मिक आस्था का केन्द्र बनी हुई है। गंगोत्री से गंगा सागर तक करोड़ों–करोड़ भारतीय जन प्रतिदिन गंगा में स्नान करते हैं। अपने धार्मिक अनुष्ठान करके सांसारिक कष्टों से मुक्ति और सुख–समृद्धि का अनुभव करते हैं। कुंभ –महाकुंभ जैसे पर्व गंगा के तट पर ही होते हैं। ऐसे पर्वों को देख दुनिया के लोग आश्चर्यचकित होते हैं, अपनी जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए तथा देखने–समझने के लिए गंगा के तट पर आते हैं और वहीं रम जाते हैं।

गंगा प्रकृति की सृष्टि रचना की कृति के रूप में हिमालय के हिम शिखरों से बनती, बहती हुई उत्तर–पश्चिम की नदियों को अपने में समाहित करते हुए गंगा सागर में विलीन हो जाती है। गंगा और समुद्र के मिलन क्षेत्र को 'गंगा सागर' कहते हैं। गंगा की लंबाई हजारों किलोमीटर है और चौड़ाई सैकड़ों किलोमीटर है, जो अमृत जल से परिपूर्ण है। जो विशुद्ध रूप से ब्रह्माण्ड की रचना काल के समय से ही जल पल्लवित हो भारतीय जीवन में समाहित है। गंगा को बचाने के लिए भारतीय जन मानस को तैयार करने में भारतीय जन को ही आगे आना होगा। भारतीय जन आगे आने के लिए संघर्षरत हो रहे हैं।

मैं देश और विदेशों के उन सभी वैज्ञानिकों से अनुरोध करूंगा कि ब्रह्माण्ड के विषय में जिज्ञासु होना और उसे समझने के लिए अथक परिश्रम करना आवश्यक है। जैसे आज ही ब्रह्माण्ड को समझने के लिए तीस सालों तक खरबों के खर्च पर हजारों वैज्ञानिक संगठित भाव से जुटे रहे। वैज्ञानिक सृष्टि के सृजन के रहस्यों को जानने–समझने के लिए एक **'कण'** को तथ्य रूप में देखना चाहते हैं। लेकिन गंगा जैसी महानदी को बिल्कुल नजर अंदाज कर रहे हैं, जो ब्रह्माण्ड रचना के समय प्रकृति ने स्वयं अपनी सृष्टि द्वारा बनायी है। गंगा के अस्तित्व को विकास के नाम पर विकासशील वैज्ञानिक नष्टकरने में लगे हुए हैं।

दुनिया के वैज्ञानिकों के लिए एक और महाप्रयोग करना होगा जब गंगा सृष्टि रचना से विलुप्त हो जायेगी। उस प्रयोग से क्या गंगा सजल रह पायेगी या नहीं? गंगा के प्रति जैसी भारतीय जन की धार्मिक आस्था, श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्म जुड़ा है, क्या उसे वैज्ञानिक दे सकेंगे? इसके लिए अभी से प्रयास करने होंगे। ब्रह्माण्ड के अस्तित्व को समझने के लिए संसार के वैज्ञानिकों ने भौतिक प्रयोग रूप में तीस साल का लम्बा समय लगाया है और कितना लगेगा, यह नहीं बताया जा सकता। गंगा का अस्तित्व पृथ्वी से खत्म होने में वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी रोज आती है कि जलवायु परिवर्तन से ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। गंगा में पानी की आवक कम हो रही है। इस सब का जिम्मेदार कौन हैं? सुख सुविधा के लिए प्रकृति रचना का नष्ट होना क्या मानवीय सभ्यता का विकास कहा जा सकता है?

विकास कैसा? प्रकृति के द्वारा रची गई सृष्टि में भारतीय जनों की आस्था को नष्ट करना। प्रकृति ने भारतीय जन में स्व प्रकृति से जुड़े रहने की शक्ति प्रदान की है, उसके बिना भारत का समाज, भारत की सभ्यता और संस्कृति का कोई अस्तित्व ही नहीं है। 'गंगा का संरक्षण प्रकृति की सृष्टि का संरक्षण है।' संरक्षण का दायित्व और कर्तव्य भारतवासियों का है।

इस बात को विदेशी शख्शियतें भी स्वीकारती हैं । गांधी विचारधारा के दृष्टिकोण रखते हुए अमरीका तथा अमरीका की जीवन पद्धति को बदलने का अभियान चलाने वाले अल गोर जैसे प्रबुद्ध जन हैं । अल गोर अमेरिका में क्लिंटन के दूसरे शासनकाल में उपराष्ट्रपति थे। उन्हें शान्ति के लिए नोबेल पुरस्कार भी मिला है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'ऐन इनकन्वीनियेन्ट ट्रूथ' में सबसे ज्यादा चिन्ता विश्व की जलवायु में आ रहे परिवर्तनों को लेकर पर्यावरण के दृष्टिकोण से गांधी के भारत की नदियां उन्हें ज्यादा दुखदायी लगीं, यद्यपि उन्होंने दुनिया में हो रहे जलवायु परिवर्तन के लिए विकसित देशों को जिम्मेदार माना है। विशेषतः अमेरिका को।

उन्होंने लिखा है कि भारत इस बात की तरफ ध्यान नहीं दे रहा है कि हिमालय में उसका जीवन अटका है। हिमालय के पठार से गंगा और ब्रह्मपुत्र निकलती है। हिमालयी हिमनद भारत के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, और वे पिघलते जा रहे हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि 1950 से 2050 के बीच हिमनदों का बर्फ क्षेत्र करीब एक चौथाई कम हो जायेगा। भारत को सावधान और चिंतित होनी चाहिए। वे भारतीय परम्पराओं से भी प्रभावित हैं। उन्होंने अपने परिवार, अपनी वंश परम्परा आदि के बारे में लिखा है कि भारतीय परम्परा की अनेक धारणाओं की पुष्टि होती है। नदियों का महत्व, पेड़ –पौधों का महत्व, सादा जीवन–उच्च विचार, प्रकृति से सहयोग, पृथ्वी की पवित्रता आदि को उन्होंने अपने जीवन और वंश के जीवन से जोड़ा है।

भारतीय आध्यात्मिक मनीषियों ने जन समुदाय को गंगा और देश की पवित्र नदियों से जुड़े रहने के लिए जो धार्मिक आस्था का विकास किया, उससे भारतीय समाज आज तक जुड़ा हुआ है। लेकिन आज के विकास में लालच भाव आने से गंगा और गंगा जैसी देश की पवित्र पावनी कल्याणमयी नदियों का अस्तित्व ही खत्म होता जा रहा है। गंगा को समझने के लिए और उससे जुड़े रहने के लिए जो दृष्टान्त दिये हैं, उनकी एक झलक इस पुस्तक में वेद–पुराणों से संकलित करने का प्रयास किया है। आशा करता हूं कि यह पुस्तक गंगा से भारतीय समाज को जोड़ने में सहायक बनेगी।

आओ! हम सब मिलकर गंगा के संरक्षण में लगें। अपने देश के आध्यात्म, धार्मिक आस्था, सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण करें। इसी आशा के साथ हम सब एक हैं।

–सत्येन्द्र सिंह

कार्यकर्त्ता, तरूण भारत संघ

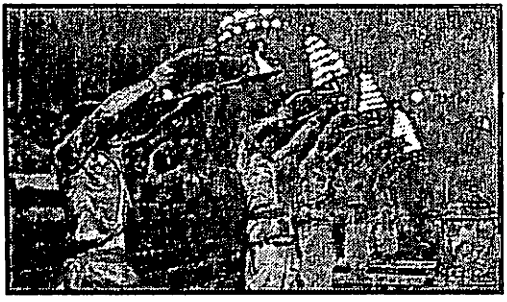

गंगा का अर्थ, पूजन एवं अवतरण

'स्वर्गाद् गां गतवतीति गंगा'

1. **श्री हरिवंश पुराण** में गंगा के प्रादुर्भाव के संबन्ध में वैशम्पायन जी और जनमेजय के संवाद में वृतान्त है कि–अलुप्त ज्ञानशक्ति सम्पन्न परमेश्वर से औषधियों के स्वामी सोम उत्पन्न हुए । उस समय सोम के उत्पादक उस परमेश्वर स्वरूप ऊर्ध्वलोक से गिरती हुई जलधारा ही थी, जिसने भगवान् महेश्वर को भूतनाथ के दर पर अभिषिक्त किया । वह जलधारा उस समय स्वाभाविक रूप से भूतनाथ महेश्वर का अभिषेक करके इस महान् कर्म का सम्पादन करने के पश्चात् कलकल नाद करने लगी। उसके कारण वह नदी कहलाती है।

सा ब्रह्मलोकं सम्भाव्य अभिभूय सहस्रधा ।
गां गता गगनाद् सार च ।।

''ब्रह्मलोक महत्व बढ़ाकर मार्ग रोकने वाले पर्वतों के सहस्त्रों टुकड़े करके वह देवी गगन से भूतलपर अवतीर्ण हुई। अतः **'गां गता'** इस व्युत्पत्ति के अनुसार उसका नाम गंगा हुआ। वह सात धाराओं में विभक्त होकर सब ओर फैली। ''

राजेन्द्र ! वह भगवती गंगा अनेकानेक नदियों और तीर्थों के रूप में सहस्त्रों की संख्या में विभक्त हुई है और बारंबार विभूतिभेद से अनेकानेक रूप धारण करती है। उस गंगा से प्रकट हुए सोमदेव अन्न आदि के पौधों को बढ़ाकर इस भौतिक लोक की और अपनी सुधामयी किरणों से परलोक की भी पुष्टि एवं रक्षा करते हैं । इस लोक की वृद्धि होने से जरायुज आदि प्राणी बढ़ते हैं। पृथ्वी, जल और तेज– इन तीनों महाभूतों के जो व्रीहि आदि फल हैं , उनकी भी वृद्धि होती है। फिर उन व्रीहि आदि फलों और मनुष्य आदि प्राणियों से मनीषी पुरुषों की समस्त क्रियाओं का यथायोग्य आरम्भ होता है।

2. श्री हरिवंशपुराण में वराह भगवान के द्वारा विभिन्न दिशाओं में पर्वतों और नदियों का निर्माण के विषय में वैशम्पायन जी जनमेजय को बताते हैं कि – भगवान वराह का सम्पूर्ण विश्व जिनका कर्म है, उन प्रजापालक श्री हरि ने वहां अपने लिए एक स्थान बनाया, जो उनका सम्पूर्ण भूतों से सम्मानित उत्तम आसन है। तदनन्तर भगवान् ने हिमराशि–सदृश महापर्वत हिमालय का निर्माण किया, जो दुर्गम एवं गहन है। वह बहुत–सी कन्दराओं से अंलकृत होता है।

शिशिर प्रभवां चैव नदीं द्विजगणायुताम् ।
चकार पुलिनोपेतां वसुधारामिति श्रुतिः ।।

उन्होंने हिमालय से प्रकट होने वाली एक दिव्य नदी की भी सृष्टि की, जिसका नाम वसुधारा 'गंगा' है। असंख्य द्विज उसका सेवन करते हैं। उसके तट विशाल हैं। वह नदी सारी पुण्यमयी पूर्व दिशा को अपने सैकड़ों स्रोतों से व्याप्त करके उसकी शोभा बढ़ाती है। उसके वे स्रोत मोती और शंक के समान उज्ज्वल आभा से अलंकृत एवं अमृत के तुल्य मधुर जल से परिपूर्ण हैं। वही नदी अपने तट पर उत्पन्न हुए अधिक कमनीय वृक्षों से विभूषित हैं। वे वृक्ष सदा फूल और फलों से सम्पन्न, सघन तथा दूर तक छाया करने वाले हैं।

गंगा पूजन का मंत्र – हमारे धार्मिक शास्त्रों में गंगा की स्तुति के लिए मंत्र इस प्रकार है :

'ॐ नमो गंगायै विश्वरूपिणी नारायण्यै नमो नमः ।'

भगवान श्री नारायण से प्रकट हुई विश्वरूपिणी गंगाजी को बारंबार नमस्कार है।

श्री गंगा जी की वन्दना – गंगा जी के सम्मुख श्रद्धा भाव से इस स्तोत्र को पढ़ें:

'ॐ नमो दशहरायै नारायण्यै गंगायै नमः ।'

ॐ शिवस्वरूपा श्री गंगा जी को नमस्कार, कल्याणदायिनी गंगा को नमस्कार है, देवि गंगे! आप विष्णुरूपिणी हैं, आपको नमस्कार है। ब्रह्मस्वरूपा ! आपको नमस्कार है, रुद्ररूपिणी ! आपको नमस्कार है । शंकरप्रिया ! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। देवस्वरूपिणी! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। औषधिरूपा ! आपको नमस्कार है। पाप नाश करने वाली जीवनरूपा आपको नमस्कार है। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक–तीनों प्रकार के क्लेशों का संहार करने वाली आपको नमस्कार है। प्राणों की स्वामिनी आपको नमस्कार, नमस्कार है। शान्ति का विस्तार करने वाली शुद्धस्वरूपा आपको नमस्कार है।

सबको शुद्ध करने वाली तथा पापों की शत्रुस्वरूपा आपको नमस्कार है। भोग, मोक्ष तथा कल्याण प्रदान करने वाली आपको बार–बार नमस्कार है। भोग और उपभोग देनेवाली भोगवती नाम से प्रसिद्ध आप पाताल गंगा को नमस्कार है। मन्दाकिनी नाम से प्रसिद्ध तथा स्वर्ग प्रदान करने वाली आप आकाशगंगा को बार–बार नमस्कार है। आप भूतल, आकाश और पाताल–तीनों मार्गों से आने वाली और तीनों लोकों की आभूषणस्वरूपा हैं आपको बार–बार नमस्कार है। गार्हपत्य, आहवनीय और आपको नमस्कार है। शिवलिंग धारण करने वाली आपको नमस्कार है । सुधाधारामयी आपको नमस्कार है ।

जगत् में मुख्य सरितारूप आपको नमस्कार है। रेवती–नक्षत्ररूपा आपको नमस्कार है। बृहती नाम से प्रसिद्ध आपको नमस्कार है। लोकों को धारण करने वाली आपको बारंबार

नमस्कार है। आप पृथ्वीरूपा हैं, आपको नमस्कार है, आपका जल कल्याणमय है और आप उत्तम धर्मस्वरूपा हैं, आपको नमस्कार है। नमस्कार है। बड़े-छोटे सैकड़ों प्राणियों से सेवित आपको नमस्कार है। सबको तारने वाली आपको नमस्कार है। नमस्कार है। संसार-बन्धन का उच्छेद करने वाली अद्वैतरूपा आपको नमस्कार है। आप परम शान्त सर्वश्रेष्ठ तथा मनोवांच्छित वर देने वाली हैं, आपको बारंबार नमस्कार है। आप प्रलयकाल में उग्ररूपा हैं, अन्य समय में सदा सुख का भोग कराने वाली हैं तथा उत्तम जीवन प्रदान करने वाली हैं, आपको नमस्कार है। आप ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मज्ञान देने वाली तथा पापों का नाश करने वाली हैं, आपको बार-बार नमस्कार है।

प्रणतजनों की पीड़ा का नाश करने वाली जगन्माता आपको नमस्कार है। आप समस्त विपत्तियों की शत्रुभूता तथा सबके लिए मंगलस्वरूपा हैं , आपके लिए बार-बार नमस्कार है। शरणागतों, दीनों तथा पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली और सबकी पीड़ा दूर करने वाली देवि नारायणि ! आपको नमस्कार है। आप पाप-ताप अथवा अविद्यारूपी मल से निर्लिप्त, दुर्लभ दुःख का नाश करने वाली तथा दक्ष हैं, आपको बारंबार नमस्कार है। आप सबसे परे हैं। मोक्षदायिनी गंगे ! मेरी आप में ही स्थिति हो। आकाशगामिनी कल्याणमयी गंगे ! आदि, मध्य और अन्त में सर्वत्र आप हैं। गंगे ! आप ही मूल स्कन्द पुराण-प्रकृति हैं, आप ही परम पुरुष हैं तथा आप ही परमात्मा शिव हैं; शिवे ! आपको नमस्कार है । जो श्रद्धापूर्वक इस स्तोत्र को पढ़ता और सुनता है, वह मन,वाणी और शरीर द्वारा होने वाले पूर्वोक्त दस प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है।

गंगाजी का अवतरण- सरिताओं में श्रेष्ठ, जह्नु पुत्री गंगा ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर उतरी थीं , इसलिए यह तिथि पुण्यदायिनी मानी गयी है। ज्येष्ठ मास, शुक्लपक्ष, हस्त नक्षत्र बुध दिन दशमी तिथि गरकरण, आनन्द योग, व्यतीतपात, कन्याराशि, चन्द्रमा और वृषराशि के सूर्य-इन दस योगों से युक्त दशमी तिथि दस पाप हर लेती है। इसलिए उसे **'दशहरा'** कहते हैं। जो इस **'दशहरा'** में गंगा जी के पास पहुंचकर प्रसन्नचित्त हो विधिपूर्वक गंगाजी के जल में स्नान करता है, वह भगवान विष्णु के धाम में जाता है।

गंगा जी के माता–पितातुल्य – पुराणों में परम पिता ब्रह्मा जी, हिमालय, माता–मैना, श्री राधा कृष्ण, जह्नु, भागीरथ माने जाते हैं।

गंगा के पति रूप में – धार्मिक ग्रन्थों में भगवान विष्णु–शंकर, समुद्र और शान्तनु महाराज को स्वीकारा है ।

गंगा के पुत्र रूप में – कार्तिके, गणेश जी, बसु नाग व गंगापुत्र भीष्म, समस्त भारत की सजीवता को पुत्र रूप में स्वीकारा गया है ।

गंगा जी पर अधिकार क्षेत्र – गंगा के विषय में एक दृष्टांत है कि एक बार जब पाण्डव पांचाल देश द्रोपदी के स्वम्बर में जा रहे थे, चलते–चलते संध्या काल हो गया था। रास्ते में गंगा घाट पड़ा, वह वहीं रात्रि विश्राम करना चाहते थे। गंगा में चित्ररथ नाम का गंधर्व अपनी पत्नियों के साथ स्नान व जल क्रीड़ा कर रहा था । संध्या की लालिमा होते और प्रातःकालीन लालिमा होने तक का रात्रिकालीन समय गंधर्व, राक्षस, दैत्य, दानव, यक्ष आदि के अधिकार का होता है । वे अपनी स्वेच्छा से कभी भी गंगा में स्नान कर सकते हैं तथा गंगा क्षेत्र में विचरण कर सकते हैं। मनुष्य जाति के लिए गंगा पर केवल दिन का समय होता है। इस समय आप गंगा के तट पर नहीं रह सकते। पाण्डवों को गंगा तट पर आया देख वह क्रोधित हो बोला।

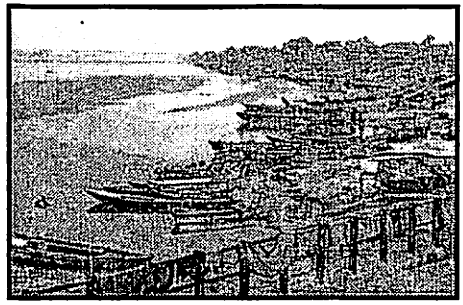

चित्ररथ गंधर्व की बात सुन कर अर्जुन ने कहा, गंगा जी सबकी मां है। इसके पास दिन–रात के समय कभी भी कोई भी आ सकता है। गंगा जी पर किसी का अधिकार नहीं हैं । गंगा मां, पहाड़ों की तराई क्षेत्र और समुद्र सबके हैं। इन पर किसी का अधिकार नहीं हो सकता । जगत का कल्याण करने वाली पुण्यदायनी गंगा मां के अमृत जल से तो सब पवित्र होते हैं ।

अर्जुन की बात सुनकर चित्ररथ गंधर्व क्रोधित हो अर्जुन से युद्ध करने लगा। अर्जुन ने चित्ररथ द्वारा छोड़ी गई शक्ति को बृहस्पति जी के अस्त्र से काट दिया और उसके स्वर्ण बालों को पकड़ कर युधिष्ठिर के चरणों पर पटक दिया । चित्ररथ की प्राण रक्षा के लिए उसकी पत्नियों ने युधिष्ठिर से प्राण दान मांगा । गंधर्व की स्त्रियों को हाथ जोड़ रोते–विलखते देख, युधिष्ठिर ने चित्ररथ को अभय कर दिया । चित्ररथ ने अपनी पराजय स्वीकारते हुए पाण्डवों से सन्धि कर ली और तीन दिव्य उपहार भी दिये । अर्जुन ने भी मित्रतावश चित्ररथ को भेंट दी । गंगा पर से गंधर्व, राक्षस और यक्षों का रात्रिकालीन एकाधिकार का अन्त हुआ ।

गंगा की उत्पत्ति के विषय में भविष्यवाणी

एक बार महर्षि अगस्त्य के आश्रम पर आकर देवताओं ने प्रार्थना की, देवताओं के वचन सुनकर अगस्त्य जी ने पूछा – आप लोग किसलिए यहाँ आये हैं, और मुझसे क्या चाहते हैं? उनके इस प्रकार पूछने पर देवताओं ने कहा –'महात्मन् ! हम आपसे देवों के कल्याण के लिए वरदान चाहते हैं। महर्षे! आप कृपा करके समुद्र को पी जाइये। आपके ऐसा करने पर हम लोग देवद्रोही कालकेय नामक दानवों को उनके सगे–संबन्धियों सहित मार डालेंगे । महर्षि ने कहा–'बहुत अच्छा , देवराज। मैं आप लोगों की इच्छा जरूर पूरी करूंगा।' ऐसा कहकर वे देवताओं और तपःसिद्ध मुनियों के साथ जलनिधि समुद्र के पास गये। उनके इस अद्भुात कर्म को देखने की इच्छा से बहुत से मनुष्य, नाग, गन्धर्व, यक्ष, और किन्नर भी उन महात्मा के पीछे–पीछे गये।

महर्षि अगस्त्य समुद्र के तट पर जा पहुंचे। समुद्र भीषण गर्जना कर रहा था। वह अपनी उत्ताल तरंगों से नृत्य करता जान पड़ता था। महर्षि अगस्त्य ने समुद्र को पी जाने की इच्छा से उन सब को लक्ष्य करके कहा –' देवगण ! सम्पूर्ण लोकों का हित करने के लिए इस समय मैं इस महासागर को पिये लेता हूं ; अब आप लोगों को जो कुछ करना है, शीघ्र ही कीजिए । ' यों देखते–देखते महर्षि समुद्र को पी गये । यह देखकर इन्द्र आदि देवताओं को बड़ा विस्मय हुआ तथा वे महर्षि की स्तुति करने लगे–'भगवान ! आप हमारे रक्षक और लोकों को नया जन्म देने वाले हैं। आपकी कृपा से देवताओं सहित सम्पूर्ण जगत् का कभी उच्छेद नहीं हो सकता ।' इस प्रकार सम्पूर्ण देवता उनका सम्मान कर रहे थे । गन्धर्व हर्ष नाद कर रह थे और महर्षि के ऊपर दिव्य–पुष्पों की वर्षा हो रही थी।

महर्षि अगस्त्य ने समूचे महासागर को जलशून्य कर दिया । जब समुद्र में एक बूंद भी पानी न रहा, तब सम्पूर्ण देवता अपने हाथों में दिव्य अस्त्र–शस्त्र लिए दानवों पर प्रहार करने लगे । महाबली देवताओं का वेग असुरों पर असह्य हो गया । इसलिए पूर्ण शक्ति लगाकर यत्न करते रहने पर भी देवताओं के हाथ से वे मारे गये । दानवों को मारा गया देख देवताओं ने नाना प्रकार के वचनों द्वारा मुनिश्रेष्ठ अगस्त्य का स्तवन किया तथा इस प्रकार कहा– महाभाग ! आपकी कृपा से संसार के लोगों को बड़ा सुख मिला । कालकेय दानव बडे ही क्रूर और पराक्रमी थे, वे सब आपकी शक्ति से मारे गये। लोक रक्षक महर्षि ! अब इस समुद्र को भर दीजिए। आपने जो जल पी लिया है, वह सब इसमें वापस छोड़ दीजिये।

मुनिश्रेष्ठ अगस्त्य जी बोले – 'वह जल तो मैंने पचा लिया, अब समुद्र को भरने के लिए आप लोग कोई दूसरा उपाय सोचें ।' महर्षि की बात सुनकर देवताओं को विस्मय भी हुआ और

विषाद भी। देवता लोग समुद्र को भरने के विषय में परस्पर विचार करते हुए ब्रह्माजी के पास गये। वहां पहुंचकर उन्होंने हाथ जोड़ ब्रह्माजी को प्रणाम किया और समुद्र के पुनः भरने का उपाय पूछा। तब लोक पितामह ब्रह्मा ने उनसे कहा– 'देवताओ ! तुम सब लोग इच्छानुसार अपने–अपने अभीष्ट स्थान को लौट जाओ, अब बहुत दिनों के बाद समुद्र अपनी पूर्वावस्था को प्राप्त होगा। महाराज भगीरथ अपने कुटुम्बी जनों को तारने के लिए गंगा जी को लायेंगे और उन्हीं के जल से पुनः समुद्र को भर देंगे।' ऐसा कह कर ब्रह्माजी ने देवताओं और ऋषियों को वापस भेज दिया ।

पुराणों में गंगा की उत्पत्ति का वर्णन

पदम पुराण : सृष्टि आरम्भ करते समय ब्रह्माजी ने प्रकृति से कहा– देवि ! तुम सम्पूर्ण लोकों का आदि कारण बनो, मैं तुम से ही संसार की सृष्टि आरम्भ करूंगा। यह सुन कर परा प्रकृति सात स्वरूपों में अभिव्यक्त हुई; गायत्री, वाग्देवी, लक्ष्मी, उमादेवी, शक्तिबीजा, तपस्विनी, और धर्मद्रवा – ये सात परा प्रकृति स्वरूप हैं। उनमें सातवीं प्रकृति धर्मद्रवा है, जो सब धर्मों में प्रतिष्ठित है। उसे सबसे श्रेष्ठ देखकर मैंने अपने कमण्डल में धारण कर लिया।

फिर परम प्रभावशाली भगवान् श्री विष्णु ने बलि के यज्ञ के समय इसे प्रकट किया। उनके दोनों चरणों में सम्पूर्ण महीतल व्याप्त हो गया था। उनमें से एक चरण आकाश एवं ब्रह्माण्ड को भेद कर मेरे सामने स्थित हुआ। उस समय मैंने कमण्डल के जल से उस चरण का पूजन किया। उस चरण को धोकर जब मैं पूजन कर चुका, तब उसका धोवन हेमकूट पर्वत पर गिरा। वहां से भगवान् शंकर के पास पहुंचकर वह गंगा के रूप में उनकी जटा में स्थित हुआ। गंगा बहुत कालतक उनकी जटाओं में ही भ्रमण करती रही। तत्पश्चात महाराज भगीरथ ने भगवान् शंकर की आराधना करके गंगा को पृथ्वी पर उतारा।

वे तीन धाराओं में प्रकट होकर तीनों लोकों में गयीं; इसलिए संसार में त्रिस्रोता के नाम से विख्यात हुई। शिव, ब्रह्मा तथा विष्णु – तीनों देवताओं के संयोग से पवित्र होकर वे त्रिभुवन पावन करती हैं। भगवती भागीरथी का आश्रय लेकर मनुष्य सम्पूर्ण धर्मों का फल प्राप्त करता है। पाठ, यज्ञ, मन्त्र, होम, और देवार्चन आदि समस्त शुभ कर्मों से भी जीव को वह गति नहीं मिलती, जो श्री गंगा जी के सेवन से प्राप्त होती है। गंगाजी के सेवन से बढ़कर धर्म–साधन का दूसरा कोई उपाय नही हैं इस लिए नारद ! तुम भी गंगाजी का आश्रय लो। हड्डियों में गंगाजी का स्पर्श होने से राजा सगर अपने पितरों तथा वंशजों के साथ स्वर्ग लोक में पहुंच गये मुनिश्रेष्ठ नारद ब्रह्माजी के मुख से यह बात सुन कर गंगाद्वार 'हरिद्वार' में गये और वहां तपस्या करके ब्रह्मा जी के समान हो गये । गंगाजी सर्वत्र सुलभ होते हुए भी गंगाद्वार, प्रयाग, और गंगा सागर–संगम–इन तीन स्थानों में दुर्लभ है–वहां इनकी प्राप्ति बड़े भाग्य से होती हैं।

वहां तीन रात्रि या एक रात निवास करने से मनुष्य परम गति को प्राप्त होता है; परम कल्याणमयी भगवती भागीरथी के तीर पर विशेषतः इस कलिकाल में सत्वगुण से रहित मनुष्य को कष्ट से छुड़ान और मोक्ष प्रदान करने वाली गंगा जी ही हैं गंगाजी के सेवन से अनन्त पुण्य का उदय होता है ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण : एक जगह गंगा की उत्पत्ति के विषय में श्री राधा और कृष्ण प्रसंग आया है कि कमल के समान नेत्रों वाली राधा ने भगवान् श्री कृष्ण से कहकर साध्वी गंगा से कुछ कहना चाहा । गंगा योग में परमप्रवीण थीं । योग के प्रभाव से राधा का मनोभाव उन्हें ज्ञात हो गया । अतः बीच सभा में ही अन्तर्धान होकर वे अपने जल में प्रविष्ट हो गयीं । तब सिद्धयोगिनी राधा ने योग द्वारा इस रहस्य को जानकर सर्वत्र विद्यमान उन जल स्वरूपिणी गंगा को अंजलि से उठाकर पीना आरम्भ कर दिया । ऐसी स्थिति में राधा का अभिप्राय पूर्ण योगसिद्धा गंगा से छिपा नहीं रह सका । अतः वे भगवान् श्रीकृष्ण की शरण में जाकर उनके चरणकमलों में लीन हो गयीं ।

तब राधा ने गोलोक, बैकुण्ठलोक तथा ब्रह्मलोक आदि सम्पूर्ण स्थानों में गंगा को खोजा; परन्तु वह कहीं भी दिखाई नही दीं। उस समय सर्वत्र जल का अभाव हो गया था। कीचड़ तक सूख गया था। जलचर जन्तुओं के मृत शरीर से ब्रह्माण्ड का कोई भी भाग खाली नहीं रहा था। फिर तो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, अनन्त धर्म, इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य मनुगण, मुनि-समाज, देवता, सिद्ध और तपस्वी-सभी गोलोक में आये।

उस समय उनके कण्ठ, ओठ और तालू सूख गये थे । प्रकृति से परे सर्वेश भगवान् श्री कृष्ण सबके परम पूज्य हैं । वर देना इन सर्वोत्तम प्रभु का स्वाभाविक गुण है । इन्हें वर का प्रवर्तक ही माना जाता है। अतएव पूर्णब्रह्म परमेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण को उन ब्रह्मादि समस्त उपस्थित देवताओं ने प्रणाम करके स्तवन आरम्भ कर दिया। भक्ति के कारण उनके कंधे झुक गये थे। उनकी वाणी गद्गद् हो गई थी। सबने परम्ब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति की। इन सर्वेश प्रभु का विग्रह ज्योतिर्मय हैं। वहीं मुनियों, मनुष्यों, सिद्धों और तपस्वियों ने तप के प्रभाव से दिव्य दर्शन प्राप्त किये। दिव्य दर्शन से सबके मन में अपार हर्ष हुआ। ब्रह्मा जी ने श्रीराधा कृष्ण की स्तुति की।

भगवान् श्री कृष्ण बोले – ब्रह्मन् ! आपकी कुशल हो, यहां आइये मैं समझ गया, आप सभी गंगा को ले जाने के लिए यहां पधारे हैं; परन्तु इस समय गंगा शरणार्थी बनकर मेरे

चरणकमलों में छिपी है। यह देख कर राधा जी उसे पी जाने के लिए उद्यत हो गयीं । तब गंगा चरणों में आकर ठहर गयी । मैं आप लोगों को सहर्ष दे दूंगा; परन्तु आप पहले उसको निर्भय बनाने का पूर्ण प्रयत्न करें। भगवान श्री कृष्ण की बात सुनकर ब्रह्मा जी प्रसन्न हो गये। फिर तो सभी देवता आनन्द भाव से भगवान् कृष्ण और भगवती राधा की स्तुति करने में संलग्न हो गये।

ब्रह्मा जी बोले–देवि ! यह गंगा आप के और भगवान के श्रीअंग से समुत्पन्न है । आप दोनों रासमण्डल में पधारे थे। शंकर के संगीत ने आपको मुग्ध कर दिया था। उसी अवसर पर यह द्रव रूपा प्रकट हो गई। अतः आप और श्रीकृष्ण के अंग से समुत्पन्न होने के कारण यह आपकी प्रिय पुत्री के समान शोभा पाने वाली गंगा आपके मन्त्रों का अभ्यास करके उपासना करे। इसके द्वारा आपकी आराधना होनी चाहिए। फलस्वरूप वैकुण्ठाधिपति चतुर्भुज भगवान् श्री हरि इसके पति हो जायंगे। साथ ही अपनी एक कला से यह भूमण्डल के अंश क्षारसमुद्र को इसका पति बनने का सुअवसर प्राप्त होता। माता ! यह गंगा जैसे गोलोक में है, वैसे ही इसे सर्वत्र रहना चाहिए। आप देवेश्वरी इसकी माता हैं और यह सदा के लिए आपकी पुत्री है।

राधा ! ब्रह्मा जी की स्तुतिपूर्ण बातें सुन कर हंस पड़ीं , तब गंगा श्रीकृष्ण के चरण के अंगूठे के नखाग्र से निकलकर वहीं विराजमान हो गयीं। सब लोगों ने उनका सम्मान किया, फिर जलस्वरूपा गंगा से उसकी अधिष्ठात्रीं देवी जल से निकलकर परम शान्त विग्रह से शोभा पाने लगी। ब्रह्मा ने गंगा के उस जल को अपने कमण्डलु में रख लिया । भगवान् शंकर ने उस जल को अपने मस्तक पर स्थान दिया। तत्पश्चात कमलोद्भव ब्रह्मा ने गंगा को 'राधा–मंत्र' की दीक्षा दी। गंगा ने नियमों के द्वारा राधा मंत्र की पूजा करके बैकुण्ठ के लिए प्रस्थान किया।

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा–ब्रह्मन ! तुम गंगा को स्वीकार करो । विष्णों ! महेश्वर ! विधाता ! मैं समय की स्थिति का परिचय कराता हूं; आपको ध्यान देकर सुनना चाहिए। तुम लोग तथा अन्य जो देवता, मुनिगण, मनु, सिद्ध और यशस्वी यहां आये हुए हैं, इन्हीं को जीवित समझना चाहिए; क्योंकि गोलोक में काल चक्र का प्रभाव होने के कारण ब्रह्माण्डों में रहने वाले सभी देवतागण इस समय मुझमें विलीन हो गये हैं। ब्रह्मन ! केवल बैकुण्ठ को छोड़कर और सब–का सब जलामग्न है। तुम जाकर ब्रह्मलोकादि की सृष्टि करो। अपने ब्रह्माण्ड की रचना करना भी आवश्यक है। इसके बाद गंगा वहां जायेगी। इस अवसर पर मैं अन्य ब्रह्माण्डों में भी इस सृष्टि के अवसर पर ब्रह्मादि लोकों की रचना का प्रयत्न करता हूं।आप भी अपने–अपने लोकों को पधारें। इतना कहकर भगवान कृष्ण अन्तःपुर में चले गये। ब्रह्मा प्रभृति

देवता वहां से चलकर यत्न पूर्वक पुनः सृष्टि करने में तत्पर हो गये। फिर तो गोलोक, वैकुण्ठ, शिवलोक और ब्रह्मलोक तथा अन्यत्र भी जिस–जिस स्थान में गंगा को रहने के लिए परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्री कृष्ण ने आज्ञा दी थी, उस–उस स्थान के लिए प्रस्थान कर दिया। भगवान् श्री हरि के लिए चरणकमल से गंगा प्रकट हुई, इसलिए उसे लोग 'विष्णुपदी' कहने लगे। ब्राह्मन् ! इस प्रकार गंगा के इस उत्तम उपाख्यान का वर्णन कर सका।

श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण में श्रीराम के पूछने पर महर्षि विश्वामित्र के द्वारा गंगा की उत्पत्ति के विषय में बताना –

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि गगां त्रिपथगां नदीम् । त्रैलोक्यं कथमाक्रम्य गता नदनदीपतिम् ।।

गंगा जी के तट पर सभी कल्याणकारी महर्षि प्रसन्नचित हो महात्मा विश्वामित्र को चारों ओर से घेरकर बैठ गये। जब वे सब मुनि स्थिर भाव से विराजमान हो गये और श्रीराम तथा लक्ष्मण भी यथायोग्य स्थान पर बैठ गये, तब श्रीराम ने प्रसन्नचित होकर विश्वामित्र जी से पूछा – भगवन् ! मैं यह सुनना चहता हूं कि तीन मार्गों से प्रवाहित होने वाली नदी ये गंगा जी किस प्रकार तीनों लोकों में घूमकर नदों और नदियों के स्वामी समुद्र में जा मिली हैं। श्रीराम के इस प्रकार प्रश्न द्वारा प्रेरित हो महामुनि विश्वामित्र ने गंगा जी की उत्पत्ति और वृद्धि की कथा कहना आरम्भ किया।

'श्रीराम ! हिमवान् नामक एक पर्वत हैं जो समस्त पर्वतों का राजा तथा सब प्रकार के धातुओं का बहुत बड़ा खजाना है। हिमवान् की दो कन्याएं हैं, जिनके सुन्दर रूप की कहीं तुलना नहीं है। मेरु पर्वत की मनोहारिणी पुत्री मैना हिमवान् की प्यारी पत्नी है। सुन्दर कटि प्रदेश वाली मैना ही उन दोनों कन्याओं की जननी है।

रघुनंदन ! मैना के गर्भ से जो पहली कन्या उत्पन्न हुई , वही ये गंगाजी हैं। ये हिमवान् की ज्येष्ठ पुत्री हैं । हिमवान् की दूसरी कन्या, जो मैना के गर्भ से उत्पन्न हुई , उमा नाम से प्रसिद्ध है। कुछ काल के पश्चात् सब देवताओं ने देव कार्य की सिद्धि के लिए ज्येष्ठ कन्या गंगाजी को, जो आगे चलकर स्वर्ग से त्रिपथगा नदी के रूप में अवतीर्ण हुई, गिरिराज हिमालय से मांगा ।

हिमवान् ने त्रिभुवन का हित करने की इच्छा से स्वच्छन्द पथ पर विचरने वाली अपनी लोक पावनी पुत्री गंगा को धर्मपूर्वक उन्हें दे दिया। तीनों लोकों के हित की इच्छा वाले देवता त्रिभुवन की भलाई के लिए ही गंगाजी को लेकर मन ही मन कृतार्थता का अनुभव करते हुए चले गये ।

रघुनन्दन ! गिरिराज की जो दूसरी कन्या उमा थीं, वे उत्तम एवं कठोर व्रत का पालन करती हुई घोर तपस्या में लग गयीं। उन्होंने तपोमय धन का संचय किया। गिरिराज ने उग्र तपस्या में संलग्न हुई अपनी वह विश्ववन्दिता पुत्री उमा अनुपम प्रभावशाली भगवान रुद्र को ब्याह दी।

रघुनन्दन ! इस प्रकार सरिताओं में श्रेष्ठ गंगा तथा भगवती उमा–ये दोनों गिरिराज हिमालय की कन्याएं हैं । सारा संसार इनके चरणों में मस्तक झुकाता है। गतिशीलता में श्रेष्ठ तात श्री राम ! गंगा जी की उत्पत्ति के विषय में ये सारी बातें मैंने तुम्हें बता दीं । ये त्रिपथ गामिनी कैसे हुई ? यह भी सुन लो । पहले तो ये आकाश मार्ग में गयी थीं । तत्पश्चात ये गिरिराजकुमारी गंगा रमणीया देवनदी के रूप में देवलोक में आरूढ़ हुई थीं । फिर जल रूप में प्रवाहित हो लोगों के पाप दूर करती हुई रसातल में पहुंची थीं ।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में गंगा जी के पुत्र रूप में तेजस्वी महाबाहु कार्तिकेय का जन्म हुआ । एक ही दिन कृतिकाओं का दूध पीकर उस सुकुमार शरीर वाले शक्तिशाली कुमार ने अपने पराक्रम से दैत्यों की सारी सेनाओं पर विजय प्राप्त की तथा गंगा जी को शिव पत्नी होने के रूप में भी लोक ने स्वीकार किया है।

महर्षि विश्वामित्र ने श्रीराम से दूसरा प्रसंग इस प्रकार कहा– वीर ! पहले की बात है, अयोध्या में सगर नाम से प्रसिद्ध एक धर्मात्मा राजा राज्य करते थे। राजा सगर की दो पत्नी थीं। विदर्भ राजकुमारी केशिनी राजा सगर की ज्येष्ठ पत्नी थीं और दूसरी पत्नी अरिष्टनेमि कश्यप की पुत्री सुमित थीं, जो गरुड़ की बहिन थी। उन्हें कोई पुत्र नहीं था, अतः वे पुत्र प्राप्ति के लिये सदा उत्सुक रहा करते थे। राजा सगर ने अपनी दोनों पत्नियों के साथ हिमालय पर्वत पर जाकर भृगुप्रस्रवण नामक शिखर पर तपस्या की। सत्यवादियों में श्रेष्ठ महर्षि भृगु ने राजा सगर को वर दिया। निष्पाप नरेश ! तुम्हें बहुत से पुत्रों की प्राप्ति होगी। महर्षि भृगु की वाणी सत्य हुई। बड़ी रानी केशनी ने सगर के औरस पुत्र 'असमज्य' को जन्म दिया और छोटी रानी से साठ हजार पुत्र हुए।

सगर का ज्येष्ठ पुत्र बड़ा पापाचारी प्रवृत्ति का था। उससे सभी नगरवासी परेशान रहते थे। इस कारण से राजा ने उसे नगर से निकाल दिया। असमज्य के पुत्र का नाम अंशुमान था। वह बड़ा ही पराक्रमी, सबसे मधुर वचन बोलने वाला तथा सब लोगों को प्रिय था। कुछ काल पश्चात राजा सगर के मन में विचार हुआ कि 'मैं यज्ञ करूं' । यह दृढ़ निश्चय करके वे वेदवेत्ता नरेश अपने उपाध्यायों के साथ यज्ञ करने की तैयारी में लग गये।

हिमवान् और विन्ध्याचल पर्वत के बीच आर्यावर्त की पुण्यभूमि में उस यज्ञ का अनुष्ठान हुआ। राजा सगर के यज्ञ सम्बन्धी घोड़े को इन्द्र ने राक्षस का रूप धारण करके चुरा लिया। राजा सगर ने अपने पुत्रों को अश्व ढूंढ लाने के लिए कहा। पिता के आदेश रूपी बन्धन में बंधकर वे सभी भूतल पर विचरने लगे। सारी पृथ्वी पर चक्कर लगाने के बाद भी उन्हें अश्व के दर्शन नहीं हुए। महाबली राजपुत्रों ने भूमि का बंटवारा करके खोदना आरम्भ कर दिया। उनकी भुजाओं का स्पर्श वज्र स्पर्श की भांति दुस्सह था। वज्र तुल्य शूलों से अत्यन्त विदीर्ण हुई वसुधा आन्तर्नाद करने लगी। इससे नाग, असुर, राक्षस, देवता, गन्धर्व सब मन ही मन घबराने लगे और ब्रह्मा जी के पास गये। सभी भय से अत्यन्त संत्रस्त हो गये। उन्होंने महात्मा ब्रह्माजी से कहा कि– भगवन् ! सगर के पुत्र इस सारी पृथ्वी को खोद डालते हैं और बहुत से महात्माओं तथा जलचारी जीवों का वध कर रहे हैं। ''यह हमारे यज्ञ में विघ्न डालने वाला है। ऐसा कर सगर के पुत्र प्राणियों की हिंसा कर रहे हैं।''

देवताओं की बात सुनकर ब्रह्मा जी कहते हैं कि– देवगण ! यह सारी पृथ्वी जिन भगवान् वासुदेव की वस्तु है तथा जिन भगवान लक्ष्मीपति की यह रानी है, वे ही सर्व शक्तिमान् भगवान श्रीहरि कपिल मुनि का रूप धारण करके निरन्तर इस पृथ्वी को धारण करते हैं। उनकी कोपाग्नि से ये सारे राजकुमार जलकर भस्म हो जायंगे। इन्द्र ने यज्ञ के घोड़े को कपिल मुनि के आश्रम में बांध दिया है। उधर राजपुत्रों ने एक साथ रोषपूर्वक पृथ्वी को खोदना आरम्भ कर दिया। पृथ्वी खोदते–खोदते वे कपिल मुनि के आश्रम में जा पहुंचे। वहां घोड़े को बंधा देख मुनि वर का अपमान करने लगे तो इससे मुनि ने रोष के आवेश में शाप दे दिया जिससे सगरपुत्र जलकर राख का ढेर हो गये। सगर की चौथी पीढ़ी में धर्मात्मा राजर्षि राजा भगीरथ हुए।

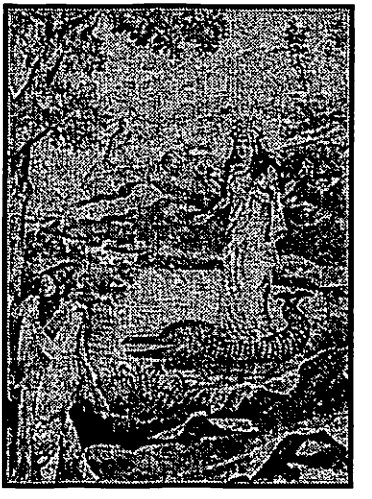

रघुनन्दन ! धर्मात्मा राजर्षि महाराज भगीरथ अपने पूर्वजों को गंगाजल द्वारा जलांजली देने के भाव से राजपाट मन्त्रियों पर छोड़ कर गंगाजी को पृथ्वी पर उतारने के प्रयत्न में लग गये और गोकर्णतीर्थ में बड़ी भारी तपस्या करने लगे। भगीरथ के तप से प्रजाओं के स्वामी भगवान् ब्रह्माजी उनपर बहुत प्रसन्न हुए और तपस्या लीन भगीरथ से वर मांगने के लिए कहा –'श्रेष्ठ व्रत का पालन करने वाले नरेश्वर ! तुम कोई वर मांगों'। इस पर भगीरथ ने कहा कि 'भगवन् ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो

सगर के सभी पुत्रों को मेरे हाथ से गंगा जी का जल प्राप्त हो। इन महात्माओं की भस्मराशि के गंगाजी के जल से भीग जाने पर मेरे उन सभी प्रपितामहों को अक्षय स्वर्गलोक मिले। '

भगीरथ के वचन सुनकर सर्वलोक पितामह बह्माजी ने मधुर अक्षरों वाली परम कल्याणमयी मीठी वाणी में कहा–महारथी भगीरथ तुम्हारा कल्याण हो। तुम्हारा यह महान् मनोरथ इसी रूप में पूर्ण हो 'राजन् ! ये हैं हिमालय की ज्येष्ठ पुत्री हैमवती गंगाजी । इनको धारण करने के लिए भगवान शंकर को तैयार करो। महाराज ! गंगाजी के गिरने का वेग यह पृथ्वी नहीं सह सकेगी। मैं त्रिशूलधारी भगवान् शंकर के सिवाय और किसी को ऐसा नहीं देखता, जो इन्हें धारण कर सके। राजा भगीरथ लोकस्रष्टा ब्रह्माजी के बताए अनुसार भगवान् शिव की उपासना में लगे रहे। भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न हो सर्वलोकवन्दित उमावल्लभ भगवान् पशुपति प्रकट होकर बोले नरश्रेष्ठ ! मैं तुम पर प्रसन्न हूं । तुम्हारा कार्य अवश्य पूरा करूंगा। मैं गिरिराजकुमारी गंगा देवी को अपने मस्तक पर धारण करूंगा।

श्रीराम ! शंकर जी की स्वीकृति मिल जाने पर हिमालय की ज्येष्ठ पुत्री गंगाजी, जिनके चरणों में सारा संसार मस्तक झुकाता है, बहुत बड़ा रूप धारण करके अपने वेग को दुस्सह बनाकर आकाश से भगवान् शंकर के शोभायमान मस्तक पर गिरीं। उस समय परम दुर्धर गंगा देवी ने मन में सोचा कि मैं अपने प्रखर प्रवाह के साथ शंकर जी को लिए पाताल लोक में चली जाऊ ंगीं । गंगा के अहंकार को जान कर त्रिनेत्रधारी भगवान् शंकर कुपित हो उठे और उन्होंने उस समय गंगा को अदृश्य कर देने का विचार किया। पुण्यस्वरूपा गंगा भगवान् रुद्र के पवित्र मस्तक पर गिरीं। भगवान शिव का मस्तक जटामण्डल रूपी गुफा से सुशोभित हिमालय के समान जान पड़ता था। उस पर गिर कर विशेष प्रयत्न करने पर भी किसी तरह वे पृथ्वी पर न जा सकीं। भगवान् शिव के जटी–जाल में उलझकर किनारे आकर भी गंगादेवी वहां से निकलने का मार्ग न पा सकीं और बहुत वर्षों तक उस जटाजूट में ही भटकती रहीं ।

रघुनन्दन ! भगीरथ ने देखा कि गंगाजी भगवान् शंकर के जटा मण्डल में अदृश्य हो गयी हैं । तब वे पुनः तपस्या में लग गये और भगवान् शंकर को संतुष्ट कर लिया। तब महादेवजी ने गंगा जी को बिन्दु सरोवर में ले जाकर छोड़ दिया। वहां से छूटते ही उनकी सात धाराएं हो गयीं। हादिनी, पावनी और नलिनी–ये कल्याणमय जल से सुशोभित गंगा की तीन मंगलमयी धाराएं पूर्व दिशा की ओर चली गयीं। सुचक्षु, सीता और महानदी सिन्धु– ये तीन शुभ धाराएं पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित हुईं । सातवीं धारा गंगा जी महाराज भगीरथ के रथ का अनुसरण करती हुई पीछे–पीछे चलने लगीं। इस प्रकार आकाश से भगवान शंकर के मस्तक पर और वहां से इस पृथ्वी पर गंगा जी आयी थीं ।

गंगा जी की वह जल राशि महान् कलकल नाद के साथ तीव्र गति से प्रवाहित हुई। मत्स्य, कच्छप और शिशुमार झुंड के झुंड उसमें गिरने लगे । उन गिरे हुए जलजन्तुओं से वसुन्धरा की बड़ी शोभा हो रही थी । देवता, ऋषि, गन्धर्व, यक्ष और सिद्धगण अपने-अपने विमानों, घोड़ों तथा गजराजों पर बैठकर आकाश से पृथ्वी पर गयी हुई गंगा जी की शोभा निहारने लगे। देवता लोग आश्चर्यचकित होकर वहां खड़े थे। जगत् में गंगावतरण के इस अद्भुत एवं उत्तम दृश्य को देखने की इच्छा से अमित तेजस्वी देवताओं का समूह वहां जुटा हुआ था। गंगा का जल बार-बार ऊंचे मार्ग पर उठता और पुनः नीची भूमि पर गिरता था। आकाश से भगवान् शंकर के मस्तक पर तथा वहां से फिर पृथ्वी पर गिरा हुआ वह निर्मल एवं पवित्र गंगाजल उस समय बड़ी शोभा पा रहा था। उस समय भूतलवासी ऋषि और गंधर्व यह सोचकर कि भगवान् शंकर के मस्तक से गिरा हुआ यह जल बहुत पवित्र है, उसमें आचमन करने लगे।

श्रीराम ! उस समय समस्त देवता, ऋषि, दैत्य, दानव, राक्षस, गन्धर्व, यक्षप्रवर, किन्नर, बड़े-बड़े नाग, सर्प तथा अप्सरा- ये सब लोग बड़ी प्रसन्नता के साथ राजा भगीरथ के रथ के पीछे गंगाजी के साथ-साथ चल रहे थे। सब प्रकार के जलजन्तु भी गंगाजी की उस जलराशि के साथ सानन्द जा रहे थे। जिस ओर राजा भगीरथ जाते, उसी ओर समस्त पापों का नाश करने वाली सरिताओं में श्रेष्ठ यशस्विनी गंगा भी जाती थीं । उस समय मार्ग में राजा जह्नु यज्ञ कर रहे थे। गंगाजी अपने जल-प्रवाह से उनके यज्ञमण्डप को बहा ले गयीं। **जिससे राजा जह्नु कुपित हो उठे, फिर उन्होंने गंगाजी के उस समस्त जल को पी लिया । यह संसार में अद्भुत बात हुई। तब देवता, गन्धर्व तथा ऋषि अत्यन्त विस्मित होकर पुरुषप्रवर महात्मा जह्नु की स्तुति करने लगे ।**

उन्होंने गंगाजी को उन महात्मा नरेश की कन्या बना दिया। अर्थात् उन्हें यह विश्वास दिलाया कि गंगाजी को प्रकट करके आप इनके पिता कहलायेंगे। देवताओं के मुख से यह वचन सुन कर सामर्थ्यशाली महातेजस्वी जह्नु बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने गंगाजी को पुनः प्रकट कर दिया, इसलिए गंगा जह्नु की पुत्री एवं जाह्नवी कहलाती हैं। वहां से गंगा फिर भगीरथ के रथ का अनुसरण करती हुई चलीं । उस समय सरिताओं में श्रेष्ठ जाह्नवी समुद्र तक जा पहुंची और राजा भगीरथ के पितरों के उद्धाररूपी कार्य की सिद्धि के लिए रसातल में गयीं । राजर्षि भगीरथ भी यत्नपूर्वक गंगाजी को साथ ले वहां गये । उन्होंने शाप से भस्म हुए अपने पितामहों को अचेत-सा होकर देखा । तदन्तर गंगा के उस उत्तम जल ने सगर-पुत्रों की उस भस्मराशि को आप्लावित कर दिया और वे सभी राजकुमार निष्पाप होकर स्वर्ग में पहुंच गये।

गंगावतरण के उपाख्यान की महिमा एवं महात्म्य

हमारे वेद-पुराणों में गंगा के अवतरण के उपाख्यान एवं महिमा का वर्णन भारतीय समाज को गंगा से जोड़ने के लिये विभिन्न प्रकार के दृष्टांत दिये हैं, जैसे-बाल्मीक रामायण में विश्वामित्र और श्रीराम का संवाद, पदम पुराण में ब्राह्मण एवं व्यासजी का संवाद, स्कंद पुराण में भगवान महादेव और विष्णु का संवाद, नारद पुराण में मोहिनी और वसु का संवाद। जिससे भारतीय समाज में गंगा के प्रति आस्था और भक्तिभाव बना रहता है।

बाल्मीक रामायण में विश्वामित्र और श्रीराम का संवाद :

श्रीराम ! इस प्रकार गंगाजी को साथ लिए राजा भगीरथ ने समुद्र तक जाकर रसातल में, जहां उनके पूर्वज भस्म हुए थे, प्रवेश किया। वह भस्मराशि जब गंगाजी के जल से आप्लावित हो गयी, तब सम्पूर्ण लोकों के स्वामी भगवान् ब्रह्मा ने वहां पधारकर राजा से इस प्रकार कहा-नरश्रेष्ठ ! महात्मा राजा सगर के साठ हजार पुत्रों का तुमने उद्धार कर दिया। अब वे देवताओं की भांति स्वर्ग-लोक में जा पहुंचे। भूपाल ! इस संसार में जब तक सागर का जल मौजूद रहेगा, तब तक सगर के सभी पुत्र देवताओं की भांति स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित रहेंगे। 'ये गंगा तुम्हारी ज्येष्ठपुत्री होकर रहेगी और तुम्हारे नाम पर रखे हुए भागीरथी नाम से इस जगत् में विख्यात होंगी। 'त्रिपथगा' दिव्या और भागीरथी- इन तीनों नामों से गंगा की प्रसिद्धि होगी। ये आकाश, पृथ्वी और पाताल तीनों पथों को पवित्र करती हुई, गमन करती हैं, इसलिए त्रिपथगा मानी गयी हैं। महाराज ! अब तुम गंगाजी के जल से यहां अपने सभी पितामहों का तर्पण करो और इस प्रकार अपनी तथा अपने पूर्वजों द्वारा की हुई प्रतिज्ञा को पूर्ण कर लो।

पुरुषवर ! तुमने गंगा को भूतल पर लाने की वह प्रतिज्ञा पूर्ण कर ली, इससे संसार में तुम्हें परम उत्तम एवं महान् यश की प्राप्ति हुई है। शत्रुदमन ! तुमने जो गंगाजी को पृथ्वी पर उतारने का कार्य पूरा किया है, इससे उस महान् ब्रह्म लोक पर अधिकार प्राप्त कर लिया है, जो धर्म का आश्रय है। नरेश्वर ! तुम अपने सभी पितामहों का तर्पण करो। तुम्हारा कल्याण हो। अब मैं अपने लोक को जाऊंगा। तुम भी अपनी राजधानी को लौट जाओ। ऐसा कहकर सर्वलोकपितामह महायशस्वी देवेश्वर ब्रह्माजी देवलोक को लौट गये। राजर्षि राजा भगीरथ भी गंगा जी के उत्तम जल से क्रमशः सभी सगर-पुत्रों का विधिवत तर्पण करके पवित्र हो अपने नगर को चले गये। इस प्रकार सफल मनोरथ होकर वे अपने राज्य का शासन करने लगे।

रघुनन्दन ! अपने राजा को पुनः सामने पाकर प्रजावर्ग को बड़ी प्रसन्नता हुई। सबका शोक जाता रहा। सबके मनोरथ पूर्ण हुए और चिन्ता दूर हुई। विश्वामित्र ने श्रीराम के पूछने पर गंगा की उत्पत्ति का विस्तारपूर्वक वर्णन किया और कहा कि तुम्हारा कल्याण हो। राजा भगीरथ के प्रयास से गंगाजी का पृथ्वी पर अवतरण हुआ। गंगा आज भी भारतीय जीवनशैली में, सभ्यता और संस्कृति का एक अभिन्न अंग बनकर लोक जीवन में समाहित हो गयी हैं।

राम वनवास के समय सीता जी द्वारा गंगा जी से प्रार्थना का प्रसंग :

मध्यं तु समनुप्राप्य भागीरथ्यास्त्वनिन्दिता।
वैदेही प्रांजलिर्भूत्वा तां नदी मिदमब्रवीत् ।।

भागीरथी की बीच धारा में पहुंच कर सती साध्वी वेदेह नन्दिनी सीता ने हाथ जोड़कर गंगाजी से यह प्रार्थना की –

'हे देवि गंगे ! ये परम बुद्धिमान् महाराज दशरथ के पुत्र हैं और पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए वन में जा रहे हैं। ये आपसे सुरक्षित होकर पिता की इस आज्ञा का पालन कर सकें–ऐसी कृपा कीजिए। वन में पूरे चौदह वर्षो तक निवास करके ये तथा अपने भाई के साथ पुनः अयोध्यापुरी लौटेंगे। सौभाग्यशालिनी देवि गंगे! उस समय वन से पुनः कुशलपूर्वक लौटने पर सम्पूर्ण मनोरथों से सम्पन्न हुई मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ आपकी पूजा करूंगी। स्वर्ग, भूतल और पाताल–तीनों लोकों में विचरने वाली देवि ! तुम यहां से ब्रह्म लोक तक फैली हुई हो और इस लोक में समुद्र राज की पत्नी के रूप में दिखाई देती हो।

शोभाशालिनी देवि ! पुरुषसिंह श्रीराम जब पुनः वन से सकुशल लौटकर अपना राज्य प्राप्त कर लेंगे, तब मैं सीता पुनः आपको मस्तक झुकाऊंगी और आपकी स्तुति करूंगी। इतना ही नहीं, मैं आपका प्रिय करने की इच्छा से ब्राह्मणों को यथायोग दान करूंगी। देवि ! आपके किनारे जो–जो देवता, तीर्थ और मन्दिर हैं, उन सबका मैं पूजन करूंगी। निष्पाप गंगे ! ये महाबाहु पापरहित मेरे पतिदेव मेरे तथा अपने भाई के साथ वनवास से लौटकर पुनः अयोध्या नगरी में प्रवेश करें। पति के अनुकूल रहने वाली सती–साध्वी सीता इस प्रकार गंगाजी से प्रार्थना करती हुई शीघ्र ही दक्षिणतट पर जा पहुंची।

पदमपुराण में ब्राह्मण और व्यासजी का संवाद :

ब्राह्मण बोले–गुरुदेव ! अब आप हमें कोई ऐसा तीर्थ बतलाइये, जहां डुबकी लगाने से निश्चय ही समस्त पाप तथा दूसरे–दूसरे महापातक भी नष्ट हो जाते हैं ।

व्यास जी बोले – ब्राह्मणों ! अविलम्ब सद्गति का उपाय सोचने वाले सभी स्त्री–पुरुषों के लिए गंगाजी ही एक ऐसा तीर्थ है, जिनके दर्शनमात्र से सारा पाप नष्ट हो जाता है। गंगाजी के नाम का स्मरण करने मात्र से पातक, कीर्तन से अतिपातक और दर्शन करने से महापातक भी नष्ट हो जाते हैं। गंगा जी में स्नान, जलपान और पितरों का तर्पण करने से महापातकों की राशि का प्रतिदिन क्षय होता रहता है । जैसे अग्नि का संसर्ग होने से रुई और सूखे तिनके क्षणभर में भस्म हो जाते हैं, उसी प्रकार गंगाजी अपने जल का स्पर्श होने पर मनुष्य के सारे पाप एक ही क्षण में दग्ध कर देती हैं ।

श्रीगंगा जी में पितरों के उद्देश्य से पिण्ड दान करता है, उसे प्रतिदिन सौ यज्ञों का फल मिलता है। जो लोग गंगा जी के तट पर आवश्यक सामग्रियों से तर्पण और पिण्डदान करते हैं, उन्हें अक्षय स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो अकेला भी गंगा जी में स्नान करता है, उसके पितरों की कई पीढ़ियां पवित्र हो जाती हैं। एकमात्र इसी महापुण्य के बल पर वह भी तर जाता है और पितरों को भी तार देता है। ब्राह्मणों ! गंगाजी के सम्पूर्ण गुणों का वर्णन करने में ब्रह्मा जी भी समर्थ नहीं हैं। इसलिए मैं भागीरथी के कुछ ही गुणों का दिग्दर्शन करता हूं।

मुनि, सिद्ध, गन्धर्व तथा अन्यान्य श्रेष्ठ देवता गंगाजी के तीर पर तपस्या करके स्वर्गलोक में स्थिर भाव से विराजमान हुए हैं। आज तक वह वहां से इस संसार में नहीं लौटे। तपस्या, बहुत से यज्ञ, नाना प्रकार के व्रत तथा पुष्कल दान करने से जो गति प्राप्त होती है, गंगा जी का सेवन करके मनुष्य उसी गति को पा लेता है ।

पिता पुत्र को, पत्नि प्रियतम को, सम्बंधी अपने संबन्धी को तथा अन्य सब भाई–बन्धु भी अपने प्रिय बन्धुओं को छोड़ देते हैं, किन्तु गंगाजी उनका परित्याग नहीं करती। जिन श्रेष्ठ मनुष्यों ने गंगा में एक बार भी स्नान किया है। कल्याणमयी गंगा उनकी लाख पीढ़ियों का भवसागर से उद्धार कर देती हैं। संक्रान्ति, व्यतीपात, चन्द्रग्रहण

,सूर्यग्रहण, और पुष्य नक्षत्र में गंगा स्नान करके मनुष्य अपने कुल की करोड़ पीढ़ियों का उद्धार करता है। जो मनुष्य अपने हृदय में विष्णु का चिन्तन करते हुए उत्तरायण के शुक्ल पक्ष में दिन को गंगाजी के जल में देह त्याग करते हैं, वे धन्य हैं। उन्हें पुनरावृत्ति –रहित स्वर्ग की प्राप्ति होती है। गंगा जी में पितरों को पिण्डदान तथा तिलमिश्रित जल से तर्पण करने पर यदि नरक में हों तो स्वर्ग में जाते हैं और स्वर्ग में हों तो मोक्ष प्राप्त होता है ।

पापी मनुष्यों को उत्तम गति प्रदान करने का साधन एकमात्र गंगाजी ही हैं। वेद–शास्त्र के ज्ञान से रहित, गुरु– निन्दापरायण और सदाचार–शून्य मनुष्य के लिए गंगा के समान दूसरी कोई गति नहीं है। गंगा जी में स्नान करने मात्र से मनुष्यों के अनेक जन्मों की पापराशि नष्ट हो जाती है तथा वे तत्काल पुण्यभागी होते हैं।

प्रभास क्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय एक सहस्त्र गोदान करने का जो फल मिलता है। वह गंगा जी में स्नान करने से प्रतिदिन प्राप्त होता है और उसके जल का स्पर्श करके स्वर्ग पाता है। गंगाजी के दर्शन मात्र से पर–धन, पर–स्त्री की अभिलाषा तथा पर–धर्म विषयक रुचि नष्ट हो जाती है। अपने आप जो कुछ मिल जाय, उसी में सन्तोष करना, अपन धर्म में प्रवृत रहना तथा सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति समान भाव रखना–ये सद्गुण गंगा जी में स्नान करने वाले मनुष्य के हृदय में स्वभावतः उत्पन्न होते हैं। जो मनुष्य गंगाजी का आश्रय लेकर सुखपूर्वक निवास करता है, वही इस लोक में जीवन्मुक्त और सर्वश्रेष्ठ है। उसके लिए कोई कर्तव्य शेष नहीं रह जाता। गंगा जी में या उनके तट पर किया हुआ यज्ञ, दान–तप, जप, श्राद्ध और देवपूजन प्रतिदिन कोटि–कोटि गुना अधिक फल देने वाला होता है। अपने जन्म नक्षत्र के दिन गंगा जी के संगम में स्नान करके मनुष्य अपने कुल का उद्धार कर देता है। जो बिना श्रद्धा के भी पुण्यसलिला गंगा जी के नाम का कीर्तन करता है, वह निश्चय ही स्वर्ग का अधिकारी है। वे पृथ्वी पर मनुष्यों को, पाताल में नागों को, स्वर्ग में देवताओं को तारती है।

एक मनुष्य अपने शरीर शोधन करने के लिए हजारों चान्द्रायण व्रत करता है और दूसरा मनचाहा गंगा जी का जल पीता है–उन दोनों में गंगाजल का पान करने वाला पुरुष ही श्रेष्ठ है। मनुष्य के ऊपर तभी तक तीर्थो, देवताओं और वेदों का प्रभाव रहता है , जब तक कि वह गंगाजी को नहीं प्राप्त कर लेता।

भगवती गंगे ! वायु देवता ने स्वर्ग, पृथ्वी और आकाश में साढ़े तीन करोड़ तीर्थ बतलाये हैं ; तुम श्री विष्णु का चरणोदक होने के कारण परम पवित्र हो। तीनों लोकों में गमन करने से त्रिपथगामिनी कहलाती हो। तुम्हारा जल धर्ममय है; इसलिए तुम धर्मद्रवी के नाम से विख्यात हो । जाह्नवी ! मेरे पाप हर लो। भगवान् श्री विष्णु के चरणों से तुम्हारा प्रादुर्भाव हुआ है। तुम श्री विष्णु के द्वारा सम्मानित तथा वैष्णवी हो। मुझे जन्म से लेकर मृत्यु तक के पापों से बचाओ । महादेवी ! भागीरथी ! तुम श्रद्धा से शोभायमान रजःकणों से तथा अमृतमय जल से मुझे पवित्र करो । इस भाव से जो गंगाजी के जल में स्नान करता है, वह करोड़ जन्मों के पाप से निःसन्देह मुक्त हो जाता है ।

स्कन्द पुराण में भगवान महादेव और विष्णु का संवाद :

महादेव जी कहते हैं – विष्णो ! सूर्यवंशी महातेजस्वी परम धार्मिक राजा भगीरथ अपने पितामहों का उद्धार करने की इच्छा से तपस्या के लिए पर्वतश्रेष्ठ हिमालय को गये। हरे ! ब्राह्मण की शापाग्नि से दग्ध होकर बड़ी भारी दुर्गति में पड़े हुए जीवों को गंगा के सिवाय दूसरा कौन स्वर्गलोक में पहुंचा सकता है। क्योंकि वह शुद्ध, विद्यास्वरूपा, इच्छा, शान एवं क्रियारूप तीन शक्तियों वाली, दयामयी, आनन्दामृत रूपा तथा शुद्ध धर्मस्वरूपिणी है। जगदात्री परब्रह्मस्वरूपिणी गंगा को मैं अखिल विश्व की रक्षा करने के लिए लीलापूर्वक अपने मस्तक पर धारण करता हूं । विष्णो ! जो गंगा जी का सेवन करता है, उसने सब तीर्थों में स्नान कर लिया, सब यज्ञों की दीक्षा ले ली और सम्पूर्ण व्रतों का अनुष्ठान कर लिया ।

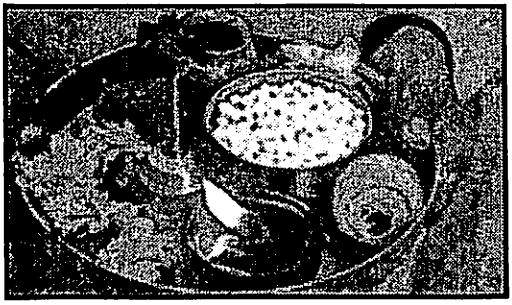

कलियुग में कलुषित चित वाले, पराये धन का लोभ रखने वाले तथा विधिहीन कर्म करने वाले मनुष्यों के लिए गंगा के बिना दूसरी गति नहीं हैं । जो दूर रह कर भी गंगा जी के माहात्म्य को जानता है और ईश्वर में भक्ति भाव रखता है। वह अयोग्य भी हो तो भी गंगा उस पर प्रसन्न होती है । अज्ञान, राग, और लोभ आदि से मोहित चित वाले पुरुषों की धर्म और गंगा में विशेष श्रद्धा नहीं होती । गंगा के गर्भ में मेरा तेजस्वरूप अग्नि हैं, अतएव सब दोषों को जलाने वाली तथा सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली है। जैसे वज्र का मारा हुआ पर्वत सैकड़ों टुकड़ों में बिखर जाता है, उसी प्रकार पापों का समूह गंगा के स्मरण से शतधा नष्ट हो जाता है । जो चलते, खड़े होते, जप और ध्यान करते, खाते–पीते, जागते–सोते तथा बात करते समय भी सदा गंगाजी का स्मरण करता हैं, वह संसार बन्धन से मुक्त हो जाता है ।

जो पितरों के उद्देश्य से भक्तिपूर्वक गुड़, घी, और तिल के साथ मधु युक्त खीर गंगा में डालते हैं, उसके पितर सौ वर्ष तक तृप्त बने रहते हैं और वे सन्तुष्ट होकर अपनी सन्तानों को नाना प्रकार की मनोवांच्छित वस्तुएं प्रदान करते हैं। जैसे बिना इच्छा के भी स्पर्श करने पर आग जला ही देती हैं, उसी प्रकार अनिच्छा से भी अपने जल में स्नान करने पर गंगा मनुष्य के पापों को भस्म कर देती है। जो गंगा स्नान के लिए उद्यत होकर चलता है और मार्ग में ही मर जाता है, वह भी निःसन्देह गंगा स्नान का फल पाता है। जो लोग खोटी बुद्धि वाले, दुराचारी, कोरा तर्क करने वाले और अधिक सन्देह रखने वाले मोहित मनुष्य हैं, वे क्रोध से तप का, काम से बुद्धि का, अन्याय से लक्ष्मी का, अभिमान से विद्या का तथा पाखण्ड, कुटिलता और छल-कपट से धर्म का नाश होता है, उसी प्रकार गंगाजी के दर्शनमात्र से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। जैसे मन्त्रों में ॐकार, धर्मो में अहिंसा और कमनीय वस्तुओं में लक्ष्मी श्रेष्ठ हैं तथा जिस प्रकार विद्याओं में आत्मविद्या और स्त्रियों में गौरी देवी उत्तम हैं, उसी प्रकार सम्पूर्ण तीर्थो में गंगा तीर्थ विशेष माना गया हैं।

हरे ! जो परम बुद्धिमान् मनुष्य तुममें और मुझमें भेद-भाव नहीं करता, वही शिवभक्त जानने योग्य है। अनेक रूप वाले पितर सदा यह गाथा गाते हैं कि विधि और श्रद्धा के साथ गंगा-स्नान कर देवताओं तथा ऋषियों को तृप्त करते हुए हमारे निमित्त जलांजलि देगा ? हमारे कुल में कोई ऐसा पुरुष उत्पन्न हो जो भगवान् शिव और विष्णु में समान दृष्टि रखते हुए उनके लिए मन्दिर बनवाए और भक्तिपूर्वक उसमें झाड़ू देने आदि का कार्य करे। जो गंगा का सेवन करता है, वही मुनि है और वही पण्डित है। वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों है।

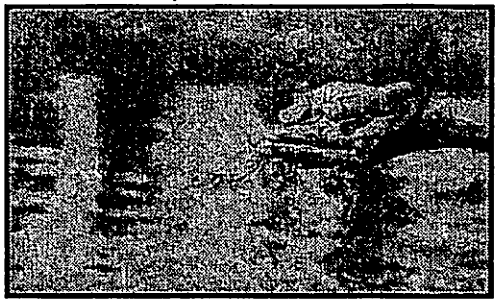

स्कन्द जी कहते हैं-मुनिवर अगस्त्य! वस्तु शक्ति का यह विचार अद्भुत एवं अनिर्वचनीय है। गंगा जी द्रव के रूप में भगवान् सदाशिव की कोई परा शक्ति हैं। करुणारूपी अमृतरस से भरे हुए देवाधिदेव भगवान् शंकर ने समस्त संसार का उद्धार करने के लिए ही गंगाजी को प्रगट किया है। मुने ! गंगाधर शिव ने दयावश श्रुतियों के अक्षरों को निचोड़ कर उस ब्रह्मद्रव से ही गंगा का निर्माण किया है। जो गंगा जी के तट की मिट्टी को अपने मस्तक पर लगाता है, उसका अज्ञानान्धकार नष्ट हो जाता है। गंगा अपने नाम का कीर्तन करने से पुण्य की वृद्धि और पाप का नाश करती है। दर्शन, स्पर्श, जलपान तथा उसमें स्नान करने से क्रमशः दस गुना फल होता है, ऐसा जानना चाहिए।

ऋषियों द्वारा सेवित, भगवान् विष्णु के चरणों से उत्पन्न, अति प्राचीन तथा परम पुण्यमयी धारा से युक्त भगवती गंगा की जो लोग मन से शरण लेते हैं, वे ब्रह्मधाम को प्राप्त होते हैं। जो माता की भांति इस संसार के जीवों को पुत्र मानकर सदा उन्हें स्वर्ग लोक को पहुंचाती है और सम्पूर्ण उत्तम गुणों से सम्पन्न है, उत्तम ब्रह्मलोक की इच्छा रखने वाले जितेन्द्रिय पुरुषों को सदा ही उस गंगा की उपासना करनी चाहिए। जैसे ब्रह्मलोक सब लोकों में उत्तम है, उसी प्रकार गंगा समस्त सरिताओं और सरोवरों से श्रेष्ठ है। गंगा के जल में स्नान करने वाले पुरुष का समस्त पातक तत्काल नष्ट हो जाता है और उसे उसी क्षण महान् श्रेय की प्राप्ति हो जाती है। गंगा में पुत्र –पौत्र आदि यदि अपने पितरों के लिए श्रद्धापूर्वक जल देते हैं, तो उस जल से वे पितर तीन वर्षों तक पूर्णतया तृप्त रहते हैं।

नारद पुराण में मोहिनी–वसु संवाद :

पुरोहित वसु ने कहा – मोहिनी ! सुनो मैं तुम्हें तीर्थों के पृथक् लक्षण बतलाता हूँ जिसके जान लेने मात्र से पापियों की उत्तम गति होती है। पृथ्वी पर सब तीर्थों में श्रेष्ठ गंगा हैं। गंगा के समान पापनाशक तीर्थ दूसरा कोई नहीं है। अपने पुरोहित वसु का यह वचन सुनकर मोहिनी के मन में गंगा स्नान के प्रति आदर बढ़ गया। वह पुरोहित जी को प्रणाम करके बोली। मोहिनी ने कहा – भगवन् ! सम्पूर्ण पुराणों की सम्मति के अनुसार इस समय गंगा जी के अनुपम तथा पापनाशक माहात्म्य को सुनकर फिर आपके साथ पापनाशिनी गंगा जी में स्नान करने के लिए चलूंगी। वसु सब पुराणों के ज्ञाता थे। उन्होंने मोहिनी का वचन सुनकर गंगा के पापनाशक माहात्म्य का इस प्रकार वर्णन किया :

ते देशास्ते जनपदास्ते शैलास्तेऽपि चाश्रमाः ।
येषां भागीरथी पुण्या समीपे वर्तते सदा ।।

पुरोहित वसु बोले–देवि ! वे देश, वे जनपद, वे पर्वत और वे आश्रम भी धन्य हैं, जिनके समीप सदा पुण्यसलिला भगवती भागीरथी बहती रहती हैं। जीव गंगाजी का सेवन करके जिस गति को पाता है, उसे तपस्या, ब्रह्मचर्य, यज्ञ अथवा त्याग के बिना भी नहीं पा सकता है। जो मनुष्य पहली अवस्था में गंगा जी का सेवन करते हैं, वे भी परम गति को प्राप्त होते हैं। इस संसार में दुःख से व्याकुल जो जीव उत्तम गति की खोज में लगे हैं, उन सबके लिए गंगा के समान दूसरी कोई गति नहीं है। गंगाजी बड़े–बड़े पातकों के कारण नरक में गिरने वाले पापियों को तार देती हैं।

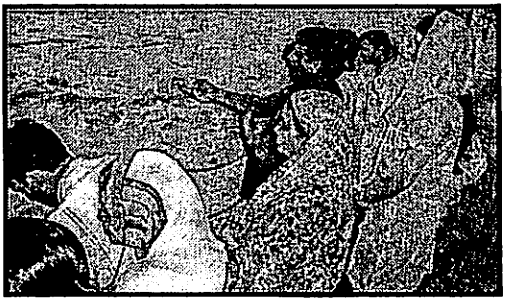

मोहिनी ! विशेषरूप से पक्षों के आदि अर्थात् कृष्ण पक्ष में षष्ठी से लेकर पुण्यमयी अमावस्या तक दस दिन गंगाजी इस पृथ्वी पर निवास करती हैं। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर दस दिन तक वे स्वयं ही पाताल में निवास करती हैं। फिर शुक्लपक्ष की एकादशी से कृष्णपक्ष की पंचमी तक जो दस दिन होते हैं, उनमें गंगाजी सदा स्वर्ग में रहती हैं इसलिए इन्हें 'त्रिपथगा' कहते हैं। सतयुग में सब तीर्थ उत्तम हैं। त्रेता में पुष्कर तीर्थ सर्वोत्तम है, द्वापर में कुरुक्षेत्र की विशेषता है। कलियुग में सब तीर्थ स्वभावतः अपनी-अपनी शक्ति को गंगा जी में छोड़ते हैं परन्तु गंगाजी देवी अपनी शक्ति को कहीं नहीं छोड़तीं । गंगाजी के जलकणों से परिपुष्ट हुई वायु के स्पर्श से भी पापाचारी मनुष्य भी परम गति को प्राप्त होते हैं। जो सर्वत्र व्यापक हैं, जिनका स्वरूप चिन्मय है, वे जनार्दन भगवान् विष्णु ही द्रवरूप से गंगा जी के जल हैं, इसमें संशय नहीं है। महापात की भी गंगाजी के जल में स्नान करने से पवित्र हो जाते हैं।

गंगा जी का जल अपने क्षेत्र में हो या निकालकर लाया गया हो, ठंडा हो या गरम हो, वह सेवन करने पर आमरण किये हुए पापों को हर लेता है। बासी जल और बासी दल त्याग देने योग्य माना गया है, परन्तु गंगाजल और तुलसीदल बासी होने पर भी त्याज्य नहीं है। मेरु के सुवर्ण की सब प्रकार के रत्नों की, वहां के प्रस्तर और जल के एक-एक कण की गणना हो सकती है, परन्तु गंगाजल के गुणों का परिणाम बताने की शक्ति किसी में भी नहीं है।

जो मनुष्य तीर्थयात्रा की पूरी विधि न कर सके, वह भी केवल गंगा जल के माहात्म्य से यहां उत्तम फल का भागी होता है । गंगाजी के जल से एक बार भक्तिपूर्वक कुल्ला कर लेने पर मनुष्य स्वर्ग में जाता है और वहां कामधेनु के थनों से प्रकट हुए दिव्य रसों का आस्वादन करता है, जो शालिग्राम शिला पर गंगाजल डालता है, वह पापरूपी तीव्र अन्धकार को मिटाकर उदयकालीन सूर्य की भांति पुण्य से प्रकाशित होता है। जो पुरुष मन, वाणी और शरीर द्वारा किये हुए अनेक प्रकार के पापों से ग्रस्त हो, वह भी गंगाजी का दर्शन करके पवित्र हो जाता है; इसमें संशय नहीं है। जो सदा गंगा जी के जल से सींचकर पवित्र की हुई भिक्षा भोजन करता है, वह केंचुल का त्याग करने वाले सर्प की भांति पाप से शून्य हो जाता है। हिमालय और विंध्य के समान पापराशियां भी गंगा जी के जल से उसी प्रकार नष्ट हो जाती हैं, जिस प्रकार भगवान् विष्णु की भक्तिपूर्वक स्नान के लिए प्रवेश करने पर मनुष्यों के ब्रह्महत्या आदि पाप 'हाय-हाय' करके भाग जाते हैं। जो प्रतिदिन गंगाजी के तट पर रहता और सदा गंगाजी का जल पीता है, वह पुरुष पूर्वसंचित पातकों से मुक्त हो जाता है। जो गंगाजी का आश्रय लेकर नित्य निर्भय रहता है, वही देवताओं ,ऋषियों और मनुष्यों के लिए पूजनीय है। प्रभास तीर्थ में सूर्यग्रहण के समय सहस्त्र गोदान करने से मनुष्य जो फल पाता

है, वह गंगाजी के तट पर एक दिन रहने से ही मिल जाता है। जो अन्य सारे उपायों को गंगा जी के तट पर सुखपूर्वक रहता है, वह अवश्य ही मोक्ष का भागी होता है, विशेषतः काशी में गंगाजी तत्काल मोक्ष देने वाली हैं। यदि जीवन भर प्रतिमास की चतुर्दशी और अष्टमी तिथि को सदा गंगा जी के तट पर निवास किया जाय तो वह उत्तम सिद्धि देने वाला है। मनुष्य सदा कृच्छ् और चान्द्रायण करके सुखपूर्वक जिस फल का अनुभव करता है। वही उसे गंगाजी के तट पर निवास करने मात्र से मिल जाता है।

ब्रह्मपुत्री ! इस लोक में गंगा जी की सेवा में तत्पर रहने वाले मनुष्य को आधे दिन के सेवन से जो फल प्राप्त होता है, वह सैकड़ों यज्ञों द्वारा भी नहीं मिल सकता। सम्पूर्ण यज्ञ, तप, दान, योग तथा स्वाध्याय-कर्म से जिस फल की प्राप्ति होती है, वही भक्तिभाव से गंगा जी के तट पर निवास करने मात्र से मिल जाता है। सत्य-भाषण, नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन तथा अग्निहोत्र के सेवन से मनुष्यों को जो पुण्य प्राप्त होता है, वह गंगा तट पर निवास करने से ही मिल जाता है। गंगाजी के भक्त को संतोष, उत्तम एश्वर्य, तत्वज्ञान, सुखस्वरूपता तथा विनय एवं सदाचार-सम्पत्ति प्राप्त होती है। मनुष्य केवल गंगाजी को ही पाकर कृतकृत्य हो जाता है। जो भक्ति भाव से गंगा जी के जल का स्पर्श करता है और गंगाजल पीता है वह मनुष्य अनायास ही मोक्ष का उपाय प्राप्त कर लेता है। जिनके सम्पूर्ण कृत्य सदा गंगाजल से ही सम्पन्न होते हैं, वे मनुष्य शरीर त्याग कर भगवान् शिव के समीप आनन्द का अनुभव करते हैं।

जैसे इन्द्र आदि देवता अपने मुख से चन्द्रमा की किरणों में स्थित अमृत का पान करते हैं, उसी प्रकार मनुष्य गंगाजी का जल पीते हैं। विधिपूर्वक कन्यादान और भक्तिपूर्वक भूमिदान, अन्नदान, गोदान, स्वर्णदान, रथदान, अश्वदान और गजदान आदि करने से जो पुण्य बताया गया है, उससे सौ गुना अधिक पुण्य चुल्लूभर गंगाजल पीने से होता है। सहस्त्रों चान्द्रायणव्रत का जो फल कहा गया है, उससे अधिक फल गंगाजल पीने से मिलता है। चुल्लुभर गंगाजल पीने से अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। सरस्वती नदी का जल तीन महीने में, यमुनाजी का जल सात महीने में, नर्मदा का जल दस महीने में तथा गंगाजी का जल एक वर्ष में पचता है अर्थात् शरीर में उसका प्रभाव विद्यमान रहता है। जिन मनुष्यों का शास्त्रीय विधि से तर्पण नहीं किया गया, ऐसे लोगों को गंगाजी के जल से उनकी हड्डियों का संयोग होने पर परलोक में उत्तम फल की प्राप्ति होती है। जो शरीर की शुद्धि करने वाले चान्द्रायणव्रत का एक सहस्त्र बार अनुष्ठान कर चुका है और जो केवल इच्छानुसार गंगा-जल पीता है, वही पहले वाले से बढ़कर है। भक्तिपूर्वक गंगा में नहाता और गंगा का ही जल पीता है, वह स्वर्ग, निर्मल ज्ञान, योग तथा मोक्ष सब कुछ पा लेता है।

गंगा जी के दर्शन, स्मरण तथा जल में स्नान करने का महत्त्व

पुरोहित वसु कहते हैं–मोहिनी ! सुनो, अब मैं गंगाजी के दर्शन का फल बतलाता हूं। जिसका वर्णन तत्त्वदर्शी मुनियों ने पुराणों में किया है । ज्ञान, अनुपम ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा, आयु, यश तथा शुभ आश्रमों की प्राप्ति गंगा जी के दर्शन का फल है । गंगा जी के दर्शनमात्र से सम्पूर्ण इन्द्रियों की चंचलता, दुर्व्यसन, पातक तथा निर्दयता आदि दोष नष्ट हो जाते हैं । दूसरों की हिंसा, कुटिलता, परदोष आदि का दर्शन तथा मनुष्यों के दम्भ आदि दोष गंगा जी के दर्शनमात्र से दूर हो जाता है। मनुष्य यदि अविनाशी सनातन पद की प्राप्ति करना चाहता है तो वह भक्तिपूर्वक बार–बार गंगाजी की ओर देखे और बार–बार उनके जल का स्पर्श करे । अन्यत्र बावड़ी, कुआं और तालाब आदि बनवाने, पौंसले चलाने तथा अन्नसत्र आदि की व्यवस्था करने से जो पुण्य होता है, वह गंगाजी के दर्शन मात्र से मिल जाता है। परमात्मा के दर्शन से मानवों को जो फल प्राप्त होता है, वह भक्तिभाव से गंगाजी का दर्शन मात्र करने से सुलभ हो जाता है। नैमिषारण्य, कुरुक्षेत्र, नर्मदा तथा पुष्करतीर्थ में स्नान, स्पर्श और सेवन करके मनुष्य जिस फल को पाता है, वह कलियुग में गंगा जी के दर्शन मात्र से प्राप्त हो जाता है– ऐसा महर्षियों का कथन है ।

राजपत्नी ! जो अशुभ कर्मों से युक्त हो संसार समुद्र में डूब रहे हों और नरक में गिरने वाले हों, उनके द्वारा ही उनका उद्धार कर देती है । चलते, खड़े होते, सोते,ध्यान करते,जागते, खाते, और हंसते–रोते समय जो निरन्तर गंगाजी का स्मरण करता है, वह बन्धन से मुक्त हो जाता है । जो सहस्त्रों योजन दूर से भी भक्तिपूर्वक गंगा का स्मरण करते हैं तथा 'गंगा–गंगा' की रट लगाते हैं, वे भी पातक से मुक्त हो जाते हैं । विचित्र भवन, विचित्र आभूषणों से विभूषित स्त्रियाँ , आरोग्य और धन–सम्पत्ति– ये गंगा जी के स्मरण–जनित पुण्य के फल हैं । मनुष्य गंगा जी के नाम कीर्तन से पापमुक्त होता है और दर्शन से कल्याण का भागी होता है। गंगा में स्नान और जलपान करके वह अपनी सात पीढ़ियों को पवित्र कर देता है। जो अश्रद्धा से भी पुण्यवाहिनी गंगा का नामकीर्तन करता है, वह भी स्वर्गलोक का भागी होता है।

देवि ! अब मैं गंगा जी के जल में स्नान का फल बतलाता हूँ । जो गंगा जी के जल में स्नान करता है, उसका सारा

पाप तत्काल नष्ट हो जाता है और मोहिनी ! उसे उसी क्षण अपूर्व पुण्य की प्राप्ति होती है । गंगा जी के पवित्र जल से स्नान करके शुद्धचित हुए पुरुषों को जिस फल की प्राप्ति होती है, वह सैकड़ों यज्ञों के अनुष्ठान से भी सुलभ नहीं है । जैसे सूर्य उदयकाल में घने अन्धकार का नाश करके प्रकाशित होते हैं, उसी प्रकार गंगा जल से अभिषिक्त हुआ पुरुष पापराशि का नाश करके प्रकाशमान होता है। गंगा में स्नान करने मात्र से मनुष्य के अनेक जन्मों का पाप नष्ट हो जाता है और वह तत्काल पुण्य का भागी होता है। सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान करने से और समस्त इष्टदेव–मन्दिरों में पूजा करने से जो पुण्य होता है, वही केवल गंगास्नान करने से मनुष्य प्राप्त कर लेता है। कोई महापातकों से युक्त हो वह सम्पूर्ण पातकों से मुक्त हो जाता है। गंगा स्नान से बढ़कर दूसरा कोई स्नान न हुआ है न होगा। विशेषतः कलियुग में गंगादेवी सब पाप हर लेती हैं। जो मानव नित्य निरन्तर गंगा में स्नान करता है, वह यहीं जीवन्मुक्त हो जाता है और गंगा में मरने पर भगवान् विष्णु के धाम में जाता है।

गंगा में मध्यकाल में स्नान करने से प्रातःकाल की अपेक्षा दस गुना पुण्य होता है। सायंकाल में सौ गुना तथा भगवान् शिव के समीप अनन्तगुना पुण्य होता है । करोड़ों कपिला गौओं का दान करने से भी गंगास्नान बढ़कर है । गंगा में जहां कहीं भी स्नान किया जाय, वह कुरुक्षेत्र के समान पुण्य देने वाली है; किंतु हरिद्वार, प्रयाग तथा गंगासागर–संगम में अधिक फल देने वाली होती है। भगवान् सूर्य कहते हैं कि 'हे जाह्नवी ! जो लोग मेरी किरणों से तपे हुए तुम्हारे जल में स्नान करते हैं, वे मेरा मण्डल भेदकर मोक्ष को प्राप्त होते हैं ।' वरुण ने भी गंगा से कहा है कि 'जो मनुष्य अपने घर में रह कर भी स्नान काल में तुम्हारे नाम का कीर्तन करेगा, वह भी वैकुण्ठ लोक में चला जायेगा ।'

कालविशेष और स्थलविशेष में गंगा-स्नान की महिमा

पुरोहित वसु कहते हैं- वामोरु ! अब मैं काल विशेष में किये जाने वाले गंगा-स्नान का फल बतलाऊंगा। जो मनुष्य माघ मास में निरन्तर गंगा-स्नान करता है, वह दीर्घकाल तक अपने समस्त कुल के साथ इन्द्रलोक में निवास करता है। तदनन्तर दस लाख करोड़ कल्पों तक ब्रह्मलोक में जाकर रहता है। सम्पूर्ण संक्रान्ति में जो मनुष्य गंगाजी के जल में स्नान करता है, वह सूर्य के समान तेजस्वी विमान द्वारा बैकुण्ठधाम को जाता है। विषुव योग में उत्तरायण या दक्षिणायन आरम्भ होने के दिन तथा संक्रान्ति के समय विशेष रूप से उसका फल बताया गया है। माघ के ही समान कार्तिक में भी गंगा-स्नान का महान् फल माना गया है।

मोहिनी ! जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करते हैं, उस समय तथा कार्तिक-पूर्णिमा को गंगा स्नान करने से ब्रह्मा आदि देवताओं ने माघ स्नान की अपेक्षा अधिक पुण्य बताया है। कार्तिक अथवा बैशाख में अक्षय तृतीया तिथि को गंगा-स्नान करने से एक वर्ष तक स्नान करने का पुण्यफल प्राप्त होता है। मन्वादि और युगादि तिथियों में गंगा स्नान का जो फल बताया गया है, तीन मास के निरन्तर स्नान से भी वही फल प्राप्त होता है। द्वादशी को श्रवण, अष्टमी को पुण्य और चतुर्दशी को आर्द्रा नक्षत्र का योग होने पर गंगा स्नान अत्यन्त दुर्लभ है।

वैशाख,कार्तिक और माघ की पूर्णिमा और अमावस्या बड़ी पवित्र मानी गयी हैं। इनमें गंगा-स्नान का सुयोग अत्यन्त दुर्लभ है। कृष्णाष्टमी 'भाद्रपद कृष्णा अष्टमी'-को गंगा स्नान करने से 'साधारण तिथि के स्नान की अपेक्षा' सहस्त्र गुना फल प्राप्त होता है। सभी पर्वों में सौगुना पुण्य प्राप्त है। माघ कृष्ण अष्टमी तथा अमावस्या को भी गंगा-स्नान से सौ गुना पुण्य होता है। उक्त : दोनों तिथियों को सूर्य के आधा उदय होने पर 'अर्धोदय' योग होता है और आधा से कुछ कम उदय होने पर 'महोदय ' कहा गया है। महोदय में गंगा-स्नान करने से सौगुना और अर्धोदय में लाख गुना पुण्य बताया गया है।

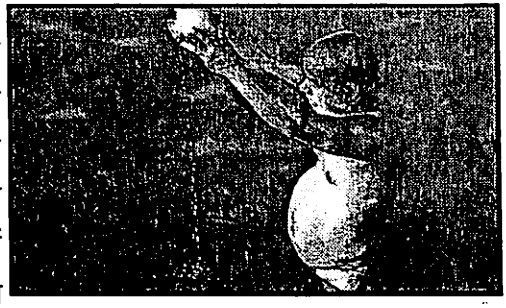

देवि ! फाल्गुन और आषाढ़ मास में तथा सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के समय किया हुआ गंगा-स्नान तीन मास के स्नान का फल देने वाला है। अपने जन्म के नक्षत्र में भक्ति भाव से गंगा स्नान करने पर आजन्म संचित पापों का नाश हो जाता है। माघ कृष्णा

चतुर्दशी को व्यतीपात योग तथा कृष्णाष्टमी 'भाद्रपद कृष्ण अष्टमी' को विशेषतः वैधृतियोग गंगा –स्नान के लिये दुर्लभ है। जो मनुष्य पूरे माघ भर विधिपूर्वक अरुणोदय काल में स्नान करता है, वह जातिस्मर 'पूर्वजन्म की बातों को स्मरण रखने वाला' होता है।

इतना ही नहीं, वह सम्पूर्ण शास्त्रों का अर्थवेत्ता, ज्ञानी तथा निरोग भी अवश्य होता है। संक्रान्ति में, दोनों पक्षों की अन्तिम तिथि को तथा चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण में इच्छानुसार गंगा–स्नान करने वाला मानव ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है । चन्द्रग्रहण का स्नान लाखगुना बताया गया है और सूर्यग्रहण का स्नान उससे भी दस गुना अधिक माना गया है । वारुण नक्षत्र 'शतभिषा ' – से युक्त चैत्र कृष्णा त्रयोदशी यदि गंगा–तट पर सुलभ हो जाय तो वह सौ सूर्यग्रहण के समान पुण्य देने वाली है।

ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में दशमी तिथि को बुध तथा हस्त नक्षत्र के योग में भगवती भागीरथी हिमालय से इस मर्त्यलोक में उतरी थीं। इस तिथि को वह आद्यगंगा स्नान करने पर दसगुने पाप हर लेती हैं और अश्वमेघ यज्ञ का सौगुना पुण्य प्रदान करती हैं। 'हे जाह्नवी ! मेरे जो महापातक –समुदायरूप पाप हैं, उन सबको तुम गोविन्द–द्वादशी के दिन स्नान करने से नष्ट कर दो। ' यदि माघ की पूर्णिमा को मघा नक्षत्र या बृहस्पति का योग हो तो उक्त तिथि का महत्व बहुत बढ़ जाता है । यदि यह योग गंगाजी में सुलभ हो तब तो सौ सूर्यग्रहण के समान पुण्य होता है ।

देश विशेष के योग से गंगा स्नान फल

अब देश विशेष के योग से गंगा–स्नान का फल बतलाया जाता है । गंगाजी में जहां कहीं भी स्नान किया जाय, वह कुरुक्षेत्र से दसगुना पुण्य देने वाली है ; किन्तु जहां वे विंध्याचल पर्वत से संयुक्त होती हैं, वहां कुरुक्षेत्र की अपेक्षा सौगुना पुण्य होता है । काशीपुरी में गंगा जी का माहात्म्य विंध्याचल की अपेक्षा सौ गुना बताया गया है। यों तो गंगा जी सर्वत्र ही दुर्लभ हैं, किंतु गंगाद्वार, प्रयाग और गंगा सागर–संगम, इन तीन स्थानों में उनका माहात्म्य बहुत अधिक है। गंगाद्वार में कुशावर्त तीर्थ के भीतर स्नान करने से सात राजसूय और दो अश्वमेघ यज्ञों का फल मिलता है। उस तीर्थ में पंद्रह दिन निवास करने से छः विश्वजित् यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

साथ ही विद्वानों ने वहां रहने से एक लाख गोदान का पुण्य बताया है। कुशावर्त में भगवान् गोविन्द का और कनखल में भगवान् इन्द्र का दर्शन–पूजन करने से अथवा इन स्थानों में गंगा–स्नान, पूजन करने से अथवा इन स्थानों में गंगा स्नान करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। जहां पूर्वकाल में वराहरूपधारी भगवान् विष्णु प्रकट हुए थे, वहां स्नान करके मनुष्य सौ अग्निहोत्र का, दो ज्योतिष्टोम यज्ञ का और एक हजार अग्निष्टोम यज्ञों का पुण्य–फल पाता है। वहीं ब्रह्मतीर्थ में स्नान करने वाला पुरुष दस हजार ज्योतिष्टोम यज्ञों का और तीन अश्वमेघ–यज्ञों का पुण्य प्राप्त करता है।

मोहिनी ! कुब्ज नाम से प्रसिद्ध जो पापनाशक तीर्थ है , वहां स्नान करने से सम्पूर्ण रोग और सब जन्मों के पातक नष्ट हो जाते हैं । हरिद्वार क्षेत्र में ही एक दूसरा तीर्थ है, जो कपिलतीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। शुभे ! उसमें स्नान करने वाला मानव अस्सी हजार कपिला गौओं के दान के समान पुण्य–फल पाता है। गंगाद्वार, कुशावर्त, बिल्वक, नीलपर्वत तथा कनखल–तीर्थ में स्नान करके मनुष्य पापरहित हो स्वर्गलोक में जाता है । तदनन्तर पवित्र नामक तीर्थ है, जो सब तीर्थों में परम उत्तम है। वहां स्नान करने से मनुष्य दो विश्वजीत् यज्ञों का पुण्य पाता है। तदन्तर वेणीराज्य नामक तीर्थ है, जहां महापुण्यमयी सरयू उत्तम पुण्यस्वरूपा गंगा से इस प्रकार मिली हैं , जैसे एक बहिन अपनी दूसरी बहिन से मिलती है। भगवान् विष्णु के दाहिने चरणारविन्द के पखारने से देवनदी गंगा प्रकट हुई हैं और बायें चरण से मानस–

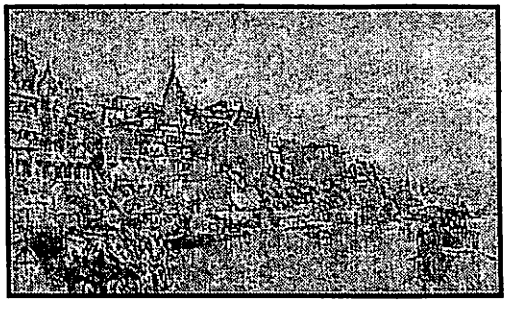

नन्दिनी सरयू का प्रादुर्भाव हुआ है। उस तीर्थ में भगवान् शिव और विष्णु की पूजा करने वाला पुरुष विष्णु स्वरूप हो जाता है। वहां का स्नान पांच अश्वमेघ-यज्ञों का फल देने वाला बतलाया गया है। तत्पश्चात् गाण्डवतीर्थ है, जहां गंगा से गण्डकी नदी मिलती है। वहां का स्नान और एक हजार गौओं का दान दोनों बराबर हैं। तदनन्तर रामतीर्थ है, जिसके समीप सोमतीर्थ है, जहां नकुल मुनि भगवान् शिव की पूजा करके उनका ध्यान करते हुए गणस्वरूप हो गये। गंगा की धारा उत्तर दिशा की ओर बहती है। उसे मणिककर्णिका के समान महापातकों का नाश करने वाला बताया गया है। तदनन्तर कलश से मुनिवर अगस्त्य प्रकट हुए थे, वहीं भगवान् रुद्र की आराधना करके वे श्रेष्ठ मुनीश्वर हो गये। इसके बाद परम पुण्यमय सोमद्वीप-तीर्थ है, जिसका शंकर की आराधना करने वाले चन्द्रमा को भगवान् रुद्र ने सिर पर धारण किया था। यहीं विश्वामित्र की भगिनी गंगा में मिली हैं। उसमें गोता लगाने वाला मनुष्य इन्द्र का प्रिय अतिथि होता है। मोहिनी ! जुकुण्ड नामक महातीर्थ में स्नान करने वाला मनुष्य निश्चय ही अपनी इक्कीस पीढ़ियों का उद्धारक होता है। सुभगे ! तदन्तर अदिति-तीर्थ है, जहां अदिति ने कश्यप से भगवान् विष्णु को वामनरूप में प्राप्त किया था। वहां किये जाने वाले स्नान का फल महान् अभ्युदय बताया गया है।

तत्पश्चात् शिलोच्चय नामक महातीर्थ है, जहां तपस्या करके समस्त प्रजा तृण आदि के साथ स्वर्ग को चली जाती है; क्योंकि वह स्थान अनेक तीर्थों का आश्रय है। तदन्तर इन्द्राणी नामक तीर्थ है, जहां इन्द्राणी ने तपस्या करके इन्द्र को पतिरूप में प्राप्त किया था। यह स्थान प्रयाग के तुल्य सेवन करने योग्य है। उसके बाद पुण्यदायक स्नातकतीर्थ है, जहां क्षत्रिय विश्वामित्र ने तपस्या करके तीर्थ-सेवन के प्रभाव से ब्रह्मर्षि पद को प्राप्त किया था। तत्पश्चात् प्रद्युम्न-तीर्थ है, जो तपस्या के लिए प्रसिद्ध है। वहां कामदेव तपस्या करके भगवान् श्री कृष्ण के प्रद्युम्न नामक पुत्र हुए। उस तीर्थ में स्नान करने से महान् अभ्युदय की प्राप्ति होती है। तदन्तर दक्षप्रयाग है, जहां गंगा से यमुना मिली हैं। वहां स्नान करने से प्रयाग की ही भाँति अक्षय पुण्य प्राप्त होता है।

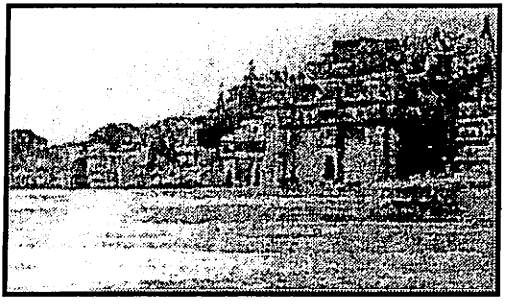

गंगाजी के तट पर किये जाने वाले स्नान, तर्पण, पूजन तथा विविध प्रकार के दानों की महिमा

पुरोहित वसु कहते हैं – राजपत्नी मोहिनी ! अब गंगा जी में स्नान–तर्पण आदि कर्मों का फल बतलाया जाता है। देवि ! यदि गंगा जी के तट पर संध्योपासना की जाय तो द्विजों को पवित्र करने वाली गायत्री देवी किसी साधारण स्थान की अपेक्षा वहां लाख गुना पुण्य प्रकट करने में समर्थ होती है। मोहिनी ! यदि पुत्रगण श्रद्धापूर्वक गंगाजी में पितरों को जलञ्जलि दें तो वे उन्हें अक्षय तथा दुर्लभ तृप्ति प्रदान करते हैं। गंगाजी में तर्पण करते समय मनुष्य जितने तिल हाथ में लेता है, उतने सहस्त्र वर्षों तक पितृगण स्वर्गवासी होते हैं। सब लोगों के जो कोई भी पितर पितृलोक में विद्यमान हैं, वे गंगा जी के शुभ जल से तर्पण करने पर परम तृप्ति को प्राप्त होते हैं ।

शुभानने! जो जन्म की सफलता अथवा संतति चाहता है, वह गंगाजी के समीप जाकर देवताओं तथा पितरों का तर्पण करे। जो मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होकर दुर्गति में पड़े हैं, वे अपने वंशजों द्वारा कुश,तिल और गंगाजल से तृप्त किये जाने पर बैकुण्ठधाम में चले जाते हैं। जो कोई पुण्यात्मा पितर स्वर्ग लोक में निवास करते हैं, उनके लिए यदि गंगाजल से तर्पण किया जाय तो वे मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं, ऐसा ब्रह्माजी का कथन है। जो मनुष्य गंगा जी में स्नान करके प्रतिदिन शिवलिंग की पूजा करता है, वह निश्चय ही एक ही जन्म में मोक्ष प्राप्त कर लेता है। अग्निहोत्र, वेद तथा बहुत दक्षिणा वाले यज्ञ भी गंगा जी पर शिवलिंग पूजा के करोड़वें अंश के बराबर भी नहीं हैं। जो पितरों अथवा देवताओं के उद्देश्य से गंगाजलक्षरा अभिषेक करता हैं, उसके नरक निवासी पितर भी तत्काल तृप्त हो जाते हैं। मिट्टी के घड़े की अपेक्षा तांबे के घड़े से किया हुआ स्नान दस गुना उत्तम माना गया है।

इसी प्रकार अर्घ्य, नैवेद्य, बलि और पूजा आदि में भी क्रमशः समझने चाहिए। उत्तरोत्तर पात्र में विशेषता होने के कारण फल में भी विशेषता होती है । जो धन होते हुए भी मोहवश विस्तृत विधि का पालन नहीं करता, वह उस कर्म के फल का भागी नहीं होता । देवताओं का दर्शन पुण्यमय होता है । दर्शन से स्पर्श उत्तम है । स्पर्श से पूजन श्रेष्ठ है और पूजन में भी घृत के द्वारा कराया हुआ देवता का स्नान परम उत्तम माना गया है। गंगा जी से जो

स्नान कराया जाता है, उसे विद्वान् पुरुष घृतस्नान के ही तुल्य कहते हैं। जो तांबे के पात्र में मगध देशीय माप के अनुसार एकप्रस्थ गंगाजल रखकर उसमें दूसरे-दूसरे विशेष द्रव्य मिलाकर उसे मिश्रित जल के द्वारा अपने पितरों सहित देवताओं को एक बार भी अर्घ्य देता है, वह पुत्र -पौत्रों के साथ स्वर्गलोक को जाता है। जल, क्षीर, कुशग्र, घृत, दधि, मधु, लाल कनेर के फूल तथा लाल चन्दन -इन आठ अंगों से युक्त अर्घ्य सूर्य के लिए देने योग्य कहा गया है। जो श्रेष्ठ मानव गंगा जी के तटपर भगवान् विष्णु, शिव, सूर्य,दुर्गा तथा ब्रह्मा जी की स्थापना करता है और अपनी शक्ति के अनुसार उनके लिए मन्दिर बनवाता है, उसे अन्य तीर्थों में यह सब करने की अपेक्षा गंगा जी के तट पर कोटि-कोटि गुना पुण्य प्राप्त होता है। जो प्रति दिन गंगा जी के तट की मिट्टी से यथाशक्ति उत्तम लक्षणयुक्त शिवलिंग बनाकर उनकी प्रतिष्ठा करके मंत्र तंत्र पत्र-पुष्प आदि से यथासाध्य पूजा करता और अन्तर में विसर्जन करके उन्हें गंगा में ही डाल देता है, उसे अनन्त पुण्य की प्राप्ति होती है। जो नरश्रेष्ठ सर्वानन्ददायिनी गंगाजी में स्नान करके भक्ति पूर्वक **'ॐ नमो नारायणाय'** इस अष्टाक्षर - मंत्र का जप करता है, मुक्ति उसके हाथ में ही आ जाती है। जो नियमपूर्वक छः मास तक गंगा जी में **ॐ नमो नारायणाय '** इस मंत्र का जप करता है, उसके पास सब सिद्धियां उपस्थित हो जाती हैं। जो विधिपूर्वक चौबीस लाख जप करता है, वह साक्षात् शंकर के समान है। **'नमः शिवाय'** - यह पंचाक्षरी मंत्र सिद्ध- विद्या है। इसमें संशय नहीं है।

'अपवित्रः पवित्र वा' - इस मंत्र का जप करने वाला पुरुष पातक रहित हो जाता है। गंगा जी के पूजित होने पर सब देवताओं की पूजा हो जाती है। अतः सर्वथा प्रयत्न करके देव नदी गंगा की पूजा करनी चाहिए। गंगा जी के चार भुजाएं और तीन नेत्र हैं। वे सम्पूर्ण अंगों से सुशोभित होती हैं। उनके एक हाथ में रत्नमय कलश, दूसरे में श्वेत कमल, तीसरे में वर और चौथे में अभय है। वे शुभ-स्वरूपा है। उनके श्री अंगों पर श्वेत वस्त्र सुशोभित होता है। मोती और मणियों के हार उनके आभूषण हैं। उनका मुख परम सुन्दर है। वे सदा प्रसन्न रहती हैं। उनका हृदय-कमल करुणारस से सदा आर्द्र बना रहता है। उन्होंने वसुधा पर सुधा धारा बहा रखी है। तीनों लोक सदा उनके चरणों में नमस्कार करते हैं। जलमयी गंगा का ध्यान करके उनकी पूजा करने वाला पुरुष पुण्यका भागी होता है। जो इस प्रकार पंद्रह दिन भी निरन्तर पूजा करता है, वही देवताओं के समान हो जाता है और दीर्घकाल तक पूजा करने से फल में भी अधिकता होती है।

पूर्व काल में राजा मोती जह्नु ने वैशाख शुक्ला सप्तमी को क्रोधपूर्वक गंगाजी को पी लिया था और फिर अपने कान के दाहिने छिद्र से उन्हें निकाल दिया। शुभानने ! उस स्थान पर आकाश की मेखलारूप गंगा जी का पूजन करना चाहिए। वैशाख मास की अक्षय तृतीया को तथा कार्तिक में भी रात को जागरण करते हुए जौ और तिल से भक्ति भाव पूर्वक विष्णु, गंगा और शिव की पूजा करनी चाहिए। उक्त सामग्रियों के सिवा उत्तम गंध, पुष्प, कुमकुम, अगरु, चन्दन, तुलसीदल, बिल्वपत्र, बिजौरा नीबू आदि, धूप, दीप, और नैवेद्य से वैभव – विस्तार के अनुसार पूजा करनी उचित है। गंगा जी के तट पर किया हुआ यज्ञ, दान, तप, जप, श्राद्ध और देवपूजा आदि सब कर्म कोटि–कोटि गुना फल देने वाला होता है। जो अक्षयतृतीय को गंगा जी के तट पर विधिपूर्वक घृतमयी धेनुका दान करता है, वह पुरुष सहस्त्रों सूर्यों के समान तेजस्वी और सम्पूर्ण भोगों से सम्पन्न हो हंस भूषित सुवर्ण–रत्नमय विचित्र विमानों पर बैठकर अपने पितरों के साथ कोटि सहस्त्र एवं कोटिशत कल्पों तक ब्रह्मलोक में पूजित होता है।

इसी प्रकार जो गंगा तट पर शास्त्रीय विधि से गोदान करता है, वह उस गाय के शरीर में जितने रोएं होते हैं, उतने वर्षों तक स्वर्गलोक में सम्मानित होता है। यदि गंगा तट पर वेद वेत्ता ब्राह्मणों को विधिपूर्वक कपिला गौ का दान दिया जाय, तो वह गो नरक में पड़े हुए सम्पूर्ण पितरों को तत्काल स्वर्ग पहुंचा देती है। जो गंगा तट पर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दुर्गा तथा सूर्य भगवान् की प्रीति के लिए ब्राह्मण को ग्रामदान करता है, उसे सम्पूर्ण दानों का जो पुण्य है, समस्त यज्ञों का जो फल बताया गया है, देवता उसकी स्तुति करते रहते हैं। देवि ! जो अक्षय तृतीया के दिन गंगातट पर श्रेष्ठ ब्राह्मण को सोलह माशा सुवर्ण दान करता है, वह भी दिव्यलोकों में पूजित होता है। अन्नदान करने से विष्णु लोक की और तिलदान से शिव लोक की प्राप्ति होती है। रत्नदान से ब्रह्मलोक, गोदान और सुवर्णदान से प्राप्ति होती है। विद्यादान से वस्त्रदान से ज्ञान पाकर मनुष्य निरंजन ब्रह्म को प्राप्त कर लेता हैं।

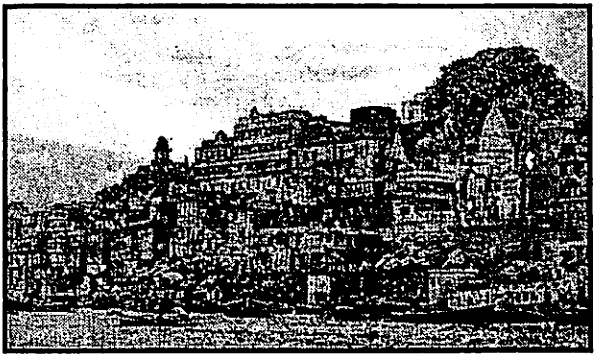

गंगा जल और तुलसी

जब रोगों का उपचार करते–करते थक जाते हैं और यह भान होने लगता है कि अब रोगी का शरीर न रहेगा तब सब बुद्धिमान् एक स्वर से यही कहने लगते हैं कि अब मुख में 'गंगाजल, और तुलसीदल डालो। गंगाजल और तुलसीदल का यह अन्तिम उपचार धार्मिक और आयुर्वेदिक दोनों ही दृष्टियों से लाभप्रद है, आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से तुलसीदल त्रिदोषघ्न महौषधि है। इसमें पारद और सौवर्ण तत्वों का समावेश है, किसी भी रोग के शमन में इसका प्रयोग लाभदायक ही सिद्ध हो सकता है। गंगोदक के गुणों पर तो आज पाश्चात्य वैज्ञानिक आश्चर्यचकित हैं; वे अभी तक यह समझने में समर्थ नहीं हो सके हैं कि आखिर समस्त रोगों के कीटाणुओं का सद्यः विनाश कर सकने की क्षमता गंगोदक में क्यों है? परन्तु वे अनेक बार प्रत्यक्ष अनुभव करके इतनी बात मुक्तकण्ठ से कहने को तैयार हैं कि कारण चाहे कुछ भी हो परन्तु गंगोदक में सर्व रोग कीटाणु संहारिणी दिव्य शक्ति अवश्य है।

अब तो फ्रांस आदि अनेक देशों के विशिष्ट हास्पिटलों में फिल्टर किया गंगोदक अनेक नामों से औषधियों की भांति प्रयोग हो जाता है। जो उभय–दृष्टि से ही तुलसीदल और गंगोदक मुमूर्षु का परम कल्याण कारक है। यदि रोगी को अच्छा होना है तो इन दोनों बस्तुओं से बढ़कर अन्य कोई औषधि नहीं हो सकती और यदि आयु परिसमाप्त हो चुकी है तब भी इन दोनों वस्तुओं से बढ़कर अन्य कोई कल्याणकारीणी महौषधि नहीं हो सकती ।

गंगासहस्त्रनाम

स्कन्द पुराण में महर्षि अगस्त्य और स्कन्द जी के संवाद में गंगा सहस्त्रनामस्तोत्र प्रसंग है कि –

अगस्त्य जी बोले – गंगा में स्नान किये बिना मनुष्यों का जन्म व्यर्थ ही बीतता है। क्या कोई दूसरा उपाय भी है , जिससे गंगा स्नान का फल प्राप्त हो सके ?

स्कन्द ने कहा – अगस्त्यजी ! जान पड़ता है , यह सोच कर देवाधिदेव भगवान् शंकर ने अपने मस्तक पर गंगा जी को धारण कर रक्खा है । वह उपाय है – भगवती गंगा का सहस्त्रनामस्तोत्र । वह सम्पूर्ण उत्तम स्तोत्रों में श्रेष्ठ हैं, जपने योग्य मंत्रों में सर्वोत्तम है और वेदों के उपनिषद् –भाग के समान मनन करने योग्य है । साधक को मौन होकर प्रयत्नपूर्वक इसका जप करना चाहिए । यदि पवित्र स्थान हो तो वहां स्वयं भी पवित्र भाव से सुस्पष्ट अक्षरों में इसका पाठ करना चाहिए ।

स्कन्द जी कहते हैं–ओम नमो गंगादेव्यै ।

1. ओमकाररूपिणी– प्रणरूपा, सच्चिदान्दस्वरूपा अथवा ब्रह्मा–विष्णु–शिवरूपिणी, **2. अजरा –** वृद्धावस्था से रहित, **3. अतुला–** तुलनारहित, **4. अनन्ता–** जिसका कभी कहीं अन्त न हो, **5. अमृतस्रवा–** अमृतमय जल का स्रोत बहाने वाली, **6. अत्युदारा–** अतिशय उदार, सदगति देने में संकोच न करने वाली, **7. अभया–** भय रहित, जिसका आश्रय लेने से संसार–भय का निवारण हो जाता है, **8. अशोका –** शोक से रहित, **9. अलकन्दा –** अलका वासियों को आनन्द देने वाली अथवा केशों में जिसके जल का स्पर्श होने से आनन्द प्राप्त होता है, **10. अमृता –** सुधायपिणी अथवा मुक्ति देने के कारण अमृतस्वरूपा, **11. अमला–** निर्मल जलवाली अथवा संसाररूपी मलका निवारण करने वाली। **12. अनाथवत्सला –** अनाथों पर दया करने वाली, **13. अमोघा–** जिनकी सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती, **14. अपांयोनिः –** जल की उत्पति का स्थान, **15. अमृतप्रदा–** मोक्षप्रदान करने वाली, **16. अव्यक्तलक्षणा–** अव्यक्त ब्रह्मस्वरूपा अथवा अव्याकृत प्रकृतिरूपा, **17. अक्षोभ्या–** किसी के द्वारा क्षुब्ध न की जा सकने वाली, **18. अनवच्छिन्ना–** अपने दिव्य एवं व्यापक स्वरूप के कारण त्रिविध परिच्छेद से शून्य , **19. अपरा –** जिसके लिए कोई भी पराया नहीं है, **20. अजिता–** किसी से भी परास्त न होने वाली।

21. अनाथनाथा– अनाथों को भी शरण देने वाली, **22. अभीष्टार्थसिद्धिदा–** भक्तजनों के अभीष्ट अर्थ की सिद्धि करने वाली, **23. अनगवर्द्धिनी–** कामना की पूर्ति करने वाली, **24. अणिमादिगुणा–** अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करना जिसका स्वाभाविक गुण है, **25. आधारा–** 'अ' अर्थात विष्णु आधार है, **26. अग्रगण्या–** श्रेष्ठता और पवित्रता में सबसे प्रथम गणना करने योग्य, **27. अलीकहारिणी–** अज्ञान का हरण करने वाली, **28. अचिंत्यशक्तिः –** जिनकी शक्ति चिन्तन का विषय नहीं है, **29. अनघा–** निष्पाप, **30. अद्भुरूपा–** आश्चर्यमय स्वरूपवाली, **31. अघहरिणी–** अपने कीर्तन, दर्शन, स्पर्श और जल स्नान से सबके पापों को हर लेने वाली।

32. अद्रिराजसुता– गिरिराज हिमालय की पुत्री, **33. अष्टांगयोगसिद्धिप्रदा–** अष्टांगयोग से प्राप्त होने वाली सिद्धि को देने वाली, **34. अच्युता–** अपनी महिमा से कभी च्युक्त न होने वाली **35. अश्चुण्णशक्तिः –** जिसकी शक्ति कभी कुण्ठित नहीं होती। **36. असुदा–** अपने जीवन रूपी जल से प्राणदान करने वाली , **37. अनन्तीर्था–** सर्व तीर्थमयी होने के कारण असंख्यतीर्थों से युक्त, **38. अमृतोदका–** अमृत के समान जलवाली, **39. अनन्तमहिमा** – जिसकी महिमा का कहीं अन्त नहीं है , **40. अपारा–** सीमा रहित **41. अनन्तसौख्यप्रदा–** भगवत्प्राप्ति का अक्षय सुख प्रदान करने वाली, **42. अन्नदा –** भोग प्रदान करने वाली, **43. अशेषदेवतामूर्तिः** सम्पूर्ण देवस्वरूपा, **44. अघोरा–** शान्त स्वरूपा , **45. अमृतरूपिणी–** मोक्षस्वरूपा, **46. अविद्याजालशमनी–** अविद्यारूपी आवरण का नाश करने वाली, **47. अप्रतर्क्यगतिप्रदा–** जहां मन और वाणी की पहुंच नहीं है, **48. अशेषगुणगुम्फिता –** सम्पूर्ण सद्गुणों से ग्रथित, **49. अशेषघ्निसंहर्त्री–** समस्त विघ्नों का संहार करने वाली, **50. अज्ञानतिमिरज्योतिः** अज्ञानमय अन्धकार का नाश करने वाली ज्योतिःस्वरूपा।

51. अनुग्रहपरायणा– भक्तों पर अनुग्रह करने में तत्पर । **52. अभिरामा–** सब ओर से मनोरम , **53. अनविद्यार्गी–** निर्दोष स्वरूप वाली, **54. अनन्तसारा –** शक्ति का अन्त नहीं है, **55. अकलंकिनी –** कलंक से रहित, **56. आरोग्यदा–** अपने अमृतमय जल से आरोग्य प्रदान करने वाली, **57. आनन्दवल्ली–** दिव्य आनन्द की प्राप्ति कराने वाली कल्पलता के समान, **58. आपन्नार्तिविनाशिनी–** शरण में आये हुए जीवों की पीड़ा का नाश करने वाली, **59. आश्चर्यमूर्तिः –** आश्चर्यमय स्वरूपवाली, आयुष्या– आयु प्रदान करने वाली, **61. आढ्या –** दिव्य वैभव से सम्पन्न, **62.आद्या –** सबकी कारण भूता आदि शक्ति, **63. आप्रा–** सब ओर से परिपूर्ण , **64. आर्यसेविता–** श्रेष्ठ पुरुषों के द्वारा सेवित,

65. आप्यायिनी– सबको तृप्त करने वाली, **66. आप्तविद्या–** सम्पूर्ण विद्याओं को जानने वाली, **67. आख्या–** सदा और सर्वत्र प्रसिद्ध, **68. आनन्दा –** सुखस्वरूपा, **69. आश्वासदायिनी–** नरक आदि के भय से ढेर हुए प्राणियों को सान्त्वना प्रदान करने वाली। **70. आलस्यघ्नी –** आलस्य का नाश करने वाली, **71. आपदांहन्त्री–** आपत्तियों का नाश करने वाली, **72. आनन्दामृतवर्षिणी–** ब्रहमानन्द अमृत की वर्षा करने वाली, **73. इरावती–**लक्ष्मी से युक्त, **74. इष्टदात्री–** भक्तों को अभीष्ट वस्तु देने वाली, **75. इष्टा –** आराध्यदेवी अथवा सबके द्वारा पूजित, **76. इष्टापूर्तफलप्रदा –** इष्ट– यश, होम, आदि और आपूर्त– कूप, तड़ाग, वापी, निर्माण आदि इन सबके पुण्य फल देने वाली।

77. इतिहास श्रुतीड्यार्था – इतिहास और वेदों के द्वारा जिसके पुरुषार्थ की स्तुति की जाती हो , **78. इहामुत्र –** शुभप्रदा– इहलोक और परलोक में कल्याण प्रदान करने वाली, **79. इज्याशीलसमिज्येष्ठा–** यज्ञ आदि करने वाले कर्मनिष्ठ तथा समस्वरूपा ब्रह्म का विचार करने वाले ज्ञानी, इन दोनों के श्रेष्ठ मानकर पूजनीय, **80. इन्द्रा दिपारिवन्दिता–** इन्द्र आदि देवताओं द्वारा वन्दित, **81. इलालंकारमाला–** पृथ्वी को विभूषित करने वाली, पुष्पमाला के सदृश्य, **82. इद्धा–** प्रकाशस्वरूपा, **83. इन्दिरा–** लक्ष्मी स्वरूपा, **84. रम्यभन्दिरा–** भगवच्चरणारविन्द, कहमकमण्डल तथा भगवान शंकर का मस्तक– ये सब रमणीय आश्रय हैं जिनके , **85. इदिन्दिरादिसंसेव्या–** निरन्तर लक्ष्मी आदि देवियों के सेवन करने योग्य, **86. ईश्वरी–** ऐश्वर्यसम्पन्न, **87. ईश्वरवल्लभा –** शंकरप्रिया, **88. ईतिभीतिहरा–** अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी पड़ना, चूहे लगना, तोते आदि पक्षियों की अधिकता और दूसरे राजा की चढ़ाई – इन छः प्रकार के उपद्रवों का भय दूर करना , **89. ईडधा–** स्तवन करने योग्य, **90. ईडनीयचरित्रभृत् –** स्तुत्य चरित्र धारण करने करने वाली, **91. उत्कृष्टशक्तिः** उत्तम शक्ति से युक्त, **92. उत्कृष्टा–** श्रेष्ठ, **93. उडुपमण्डलचारिणी –** चन्द्रमण्डल में विचरने वाली **94. उदिताम्बरमार्गा–** जिसके द्वारा आकाश में प्रकाशित मार्ग के समान है, **95. उस्रा–** उज्ज्वल किरण के समान प्रकाशमान, **96. उरगलोकविहारिणी–** पाताललोक में प्रवाहित होने वाली, **97. उक्षा–** भूतल को सींचने वाली, **98. उर्वरा–** भूमि को उपजाऊ बनाने हेतु, **99. उत्पला–** कमलस्वरूपा, **100. उत्कुम्भा –** जिसमें भरे जाने वाले कलश उत्कृष्ट हो जाते हैं; **101. उपेन्द्रचरणद्रवा–** भगवान वामन के चरण पखारने से प्रकट होने वाली ।

102 . उदन्वत्पूर्तिहेतुः – समुद्र को पूर्ण करने में कारणभूत, **103. उदारा–** उत्तम गति प्रदान करने में उदार, **104. उत्साहप्रवर्द्धिनी–** अपने आश्रितों का उत्साह बढ़ाने वाली,

105.उद्वेगन्धी – भय को मिटाने वाली, **106. उष्णशमनी**– गर्मी को शान्त करने वाली, **107. उष्णरश्मिसुताप्रिया**– सूर्यकन्या यमुना की प्रिय सखी, **108. उत्पतिस्थिति संहारकारिणी**– ब्रहम शक्ति, विष्णु शक्ति, रुद्र शक्ति के रूप में उत्पति, पालन और संहार करने वाली, **109. उपचारिणी**– पृथ्वी अथवा स्वर्ग लोक के ऊपर विचरने वाली, **110. उर्जेवहन्ती**– बलवर्द्धक जल को प्रवाहित करने वाली, **111. उर्जधरा**– बल अथवा प्राणशक्ति का आश्रय, **113. उर्मिमालिनी**– तरंग मालाओं से युक्त, **114. उर्ध्वरितःप्रिया**– उर्ध्वरिता महात्माओं को प्रिय लगने वाली, **115. उर्ध्वाध्वा**– जिसका मार्ग ऊ पर विष्णु लोक की ओर गया है, **116 . उर्मिला**– लहरों को धारण करने वाली, भक्तों के शोक, मोह, जरा, मृत्यु, क्षुधा, पिपासा– इन छः उर्मियों को ग्रहण करने वाली, **117. उर्ध्वगतिप्रदा**– अपने में सम्पर्क आये जीवों को मोक्ष प्रदान करने वाली, **118. ऋषिवृन्दस्तुता**– महर्षियों के समुदाय से प्रशंसित, **119. ऋद्धि**– समृद्धि स्वरूपा, **120. ऋणत्रयविनाशिनी**– देवऋण, ऋषि ऋण और पितृऋण नाश करने वाली।

121. ऋतुम्भरा– सत्य एवं ब्रह्म का आश्रय लेने वाली बुद्धिस्वरूपा, **122. ऋद्धिदात्री**– समृद्धि देने वाली, **123. ऋक्स्वरूपा**– ऋग्वेदरूपिणी, **124. ऋजुप्रिया**– सरल स्वभाव वाले साधु महात्माओं के मार्ग से बहने वाली , **126. ऋक्षमार्गप्रदांशनी**– धर्म एवं मोक्ष का सरल मार्ग दिखाने वाली, **127.ऋक्षमार्गवहा** – नक्षत्र लोक से बहने वाली, **128. एधिताखिलधर्मार्था** – सम्पूर्ण धर्म और अर्थ को बढ़ाने वाली, **129. एका**– अपने ढंग की अकेली, **130. एकामृतदायनी**– एकमात्र अमृत स्वरूप ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाली, **131. एधनीयस्वभावा** – जिसके दया, उदारता आदि स्वाभाविक गुण निरन्तर बढ़ने योग्य हों, **132. एज्या**– पूजनीया, **133. एजिताशेषपातका**– सम्पूर्ण पातकों को कम्पित करने वाली , **134. ऐश्वर्यदा**– ऐश्वर्य प्रदान करने वाली, **135. ऐश्वर्यरूपा**– भगवद्वि भतिस्वरूपा, **136. ऐतिहयम्** – इतिहासस्वरूपा, **137. ऐन्दवीद्युतिः** – चन्द्रमा की कान्तिरूपा, **138. ओजस्विनी**– शक्तिमती, **139. औषधीक्षेत्रम्** – अन्न पैदा करने का क्षेत्र, **140. ओजोदा**– बल एवं तेज प्रदान करने वाली, **141. ओदनदायिनी** – अन्न पूर्णारूपा ।

142. ओष्ठामृता– जिसके ओष्ठ में अमृत हो, **143. औन्नत्यदात्री** – आध्यात्मिक, लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति प्रदान करने वाली, **144. भवरोगिणाम् औषधम्** – संसार रोग से ग्रस्त प्राणियों के लिए औषधिरूपा, **145. ओदार्यचंचुरा** – उदारता में कुशल, **146. ओपेन्द्री**– विष्णु पत्नी लक्ष्मी स्वरूपा, **147. ओग्री**– रुद्र की शक्ति,

148. औमेयरूपिणी– उमा के सदृश रूपवाली , **149. अम्बराध्ववहा** – आकाश मार्ग पर बहने वाली, **150. अम्बष्ठा** – अ अर्थात् विष्णु शरण में ले जाने वाली, **151. अम्बर माला** – आकाश में पुष्पहार के समान शोभा पाने वाली, **152. अम्बुजेक्षणा** – कमल सदृशनेत्रों वाली, **153. अम्बिका** – जगदाम्बास्वरूपा, **154. अम्बुमहायोनिः** – जल की उत्पति का मूल कारण, **155. अन्धोदा**– अन्न देने वाली, **156. अन्धकहारिणी**– अन्धकासुर का नाश करने वाली।

157. अंशुमाला – तेज का समुदाय, **158. अंशुमती** – तेजोमयी, **159. अंगीकृतषडानना** – छः मुखों वाले,स्कन्द को पुत्र रूप में स्वीकार करने वाली, **160. अन्ध्तामिस्रहन्ती** – अंध्तामिस्र नरकों का नाश करने वाली, **161. अंधुः** – कूपमात्र में स्वयं प्रकट होने वाली, **162. अंजना** – आध्यात्मिक दृष्टि को शुद्ध करने के लिए दिव्य अंजनरूपा अथवा हनुमान जी को जन्म देने वाली अंजना स्वरूपा, **163. अंजनावती** – ईशानकोण की रक्षा करने वाली हस्तनी, **164. कल्याणकारिणी**– सबका कल्याण करने वाली, **165. काम्य** – कमनीया, **166. कमलोत्पलगन्धिनी** – कमल और उत्पल की सुगन्ध से सुवासित, **167. कुमुद्वती**– कुमुद पुष्पों से युक्त, **168. कमलिनी** – कमल पुष्पों से अलंकृत, **169. कान्तिः दीप्तिमयी**, **170. कल्पितदायिनी** – मनोवाच्छित वस्तु देने वाली ।

171. कांचनाक्षी – सुवर्ण के समान उदीप्त नेत्रों वाली, **172. कामधेनुः** – भक्तों की मनोवांछा पूर्ण करने में कामधेनु के समान , **173. कीर्तिकृत्** – अपने सुयश का विस्तार करने वाली, **174. क्लेशनाशिनी** – अविद्या, अस्मिता, राग ,द्वेष, और अभिनिवेशरूप पांच क्लेशों का नाश करने वाली,**175. क्रतुश्रेष्ठा** – यज्ञों से श्रेष्ठ फल देने वाली, **176. क्रतुफला** – जिसमें स्नान करने से यज्ञों का फल प्राप्त होता है, **177. कर्मबन्धविभेदिनी** – शुभाशुभ कर्मोजनित बन्धन का नाश करने वाली, **178. कमलाक्षी** – कमलरूप नेत्रों वाली, **179 . क्लमहरा** – सांसारिक क्लेश को हर लेने वाली, **180. कृशानुतपन द्युति** : सूर्य के समान कान्ति वाली, **181. करुणार्द्रा** – करुणा रस से भीगी हुई , **182. कल्याणी** – मंगलस्वरूपा, **183. कलिकल्मषनाशिनी** – कलिकाल में होने वाले पापों का नाश करने वाली।

184. कामरूपा–इच्छानुसार रूप धारण करने वाली, **185. क्रियाशक्ति** : क्रियाशक्ति, **186. कमलोत्पलमालिनी** – कमल और उत्पलों की माला धारण करने वाली,

187. कूटस्था–ब्रह्म स्वरूपा, **188. करुणा**–दयामयी, **189. कान्ता**– कान्तिमती, **190. कूर्मयाना**–कच्छपरूप वाहन वाली, **191. कलावती**–चौंसठ कलाओं को जानने वाली, **192. कमला** – लक्ष्मी स्वरूपा , **193. कल्पलतिका** – कल्पलता के समान सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली, **194. काली**–कालिका स्वरूप, **195. कलुषवैरिणी**–पापों का नाश करने वाली, **196. कमनीयजला**–स्वच्छ जल वाली, **197. कर्मा** – मनोहर स्वरूप वाली, **198. कपदिसुकपर्दगा** – भगवान् शंकर की सुन्दर जटाओं में वास करने वाली, **199. कालकूटप्रशमनी** – भगवान् शंकर के पीये हुए कालकूट नामक विष की ज्वाला को शान्त करने वाली, **200. कदम्बकुसुमप्रिया** – कदम्ब के पुष्पों में रुचि रखने वाली, **201. कालिन्दी** – कालिन्द कन्या यमुना स्वरूपा , **202. केलिललिता** – क्रीड़ा से मनोहर प्रतीत होने वाली, **203 कलकलोलमालिका** – मनोहर लहरों की श्रेणियों से सुशोभित।

204. क्रान्तलोकत्रया – स्वर्ग, भूतल और पाताल तीनों लोकों को अपनी धारा से आक्रान्त करने वाली, **205. कण्डूः** – अविद्या और उसके कार्य को खण्डित करने वाली , **206. कण्डूः** तनयवत्सला – कण्डू शब्द मृकण्डु का वाचक है , मार्कण्डेयजी पर वात्सल्य रखने वाली, **207. खंगिनी**– देवी रूप से खग धारण करने वाली , **208. खगधाराभा**–तलवार की धार के समान उज्ज्वल कान्ति वाली , **209. खगा**– आकाश में प्रवाहित होने वाली , **210 . खण्डेन्दुधारिणी**– अर्धचन्द्र धारण करने वाली, **211. खेलगामिनी**–आकाश में लीलापूर्वक चलने वाली, **212. खस्था**–आकाश अथवा ब्रह्म में स्थित, **213. खण्डेन्दुतिलकप्रिया**–चन्द्रभाल शिव की प्रिया, **214. खेचरी**–आकाश में विचरण करने वाली, **215. खेचरीवंद्या**–आकाश में विहार करने वाली, **216. ख्यातिः**–प्रतिष्ठा स्वरूपा, **217. ख्यातिदायिनी**–प्रतिष्ठा देने वाली, **218. खिण्डतप्रणताघौघा**–शरणागतों की पापराशि का खण्डन करने वाली, **219. खलबुद्धिविनाशिनी**– खलों की बुद्धि का विनाश करने वाली , **220. खातैनःकन्दसन्दोहा**–पापरूपी कन्द समुदाय को उखाड़ फेंकने वाली, **221. खगखट्वागखेटिनी**–खग और खेट धारण करने वाली, **222. खरस न्तापशमनी** – तीखे ताप को शान्त करने वाली।

223. पीयूषपाथसां खनिः – अमृत के समान मधुर जल की खान, **224. गंगा** – 'स्वर्गाद् गां गतवतीति गंगा'– स्वर्ग से भूतल पर गमन करने के कारण गंगा नाम से प्रसिद्ध अथवा कलकल गान करने वाली या ब्रह्मद्रवरूपा अथवा सच्चिदानन्दमयी देवी, **225. गन्धवती**–पृथ्वीस्वरूपा अथवा उत्तम गन्ध से युक्त ,**226. गौरी** – गौर वर्ण वाली अथवा पार्वती

स्वरूपा, **227. गन्धर्वनगरप्रिया**–गन्धर्व–नगर के निवासियों को प्रिय लगने वाली। **228. गम्भीरांगी**– गहन स्वरूप वाली, **229. गुणमयी**– त्रिगुणात्मिक प्रकृतिरूपा, **230.– गतातांक** – अपने पास आने वालों के संसार–भय निवृत करने वाली , **231– गतिप्रिया** – निरन्तर गमन जिसे प्रिय है , **232. गणनाथाम्बिका** – गणेशजी की माता, **233. गीता** – भगवद्गीता स्वरूपा , **234. गद्यपद्यपरिष्टुता**– गद्य–पद्य स्तोत्रों से जिसकी स्तुति की जाती है। **235. गान्धारी**– पृथ्वी को धारण करने वाली, **236. गर्भशमनी**–मुक्ति प्रदान करके गर्भवास के कष्ट को दूर करने वाली, **237. गतिभ्रष्टगतिप्रदा**–पतितों को भी सद्गति प्रदान करने वाली, **238. गोमती**– नैमिषारण्य में स्थित गोमतीस्वरूपा, **239. गुह्ययविद्या** – ब्रह्म विद्या, **240. गौः** – पृथ्वी स्वरूपा, **241. गोप्त्री** – सद्गति प्रदान करके सबकी रक्षा करने वाली, **242. गगनगामिनी** – आकाश गामिनी ।

243. गोत्रप्रवद्धनी – पर्वतों से निझार आदि का जल पाकर बढने वाली , **244. गुण्या**– उत्तम गुणों से युक्त, **245. गुणातीता** – तीनों गुणों से परे , **246. गुणाग्रणीः** – सद्गुणों के कारण अग्रगण्य, **247. गुहाम्बिका** – स्कन्द की माता, **248. गिरिसुता** – हिमवान की पुत्री, **249. गोविन्दांघ्रिसमुभ्दवा** – श्री विष्णु के चरणों से प्रकट हुई, **250. गुणनीयचरित्रा**– प्रशंसा करने योग्य उत्तम चरित्र वाली, **251. गायत्री** – गायत्रीदेवी स्वरूपा, **252. गिरीशप्रिया** – भगवान शिव की वल्लभा, **253. गूढ़रूपा**– छिपे हुए दिव्य स्वरूप वाली, **256. गुणवती**– शान्ति आदि उत्तम गुणों से युक्त, **255. गुर्वी** – गौरवमयी, **256. गौरववद्धिनी** – महत्व बढ़ाने वाली अथवा स्वयं ही गौरव बढ़ाने वाली , **257. ग्रहपीडाहरा**– अनिष्ट स्थानों में स्थित ग्रहों की पीड़ा दूर करने वाली, **258. गुन्द्रा**– 'गु' अर्थात अविद्या का नाश करने वाली, **259. गरघ्नी**– विष का प्रभाव कम करने वाली, **260. गानवत्सला**– संगीतप्रिया ।

261. घर्महन्त्री– घाम का कष्ट निवारण करने वाली, **262. घृतवती**–घी के समान गुणकारक जलवाली, **263. घृततुष्टिप्रदायिनी**–अपने जल से ही घी के समान सन्तोष देने वाली, **264. घण्टारवप्रिया**–घण्टानाद से प्रसन्न होने वाली, **265. घोराघौघविध्वंसकारिणी**– भंयकर पापराशि का विनाश करने वाली, **266. घ्राणतुष्टिकरी** – घ्राणेन्द्रिय को सन्तुष्ट करने वाली, **267. घोषा** – अपने प्रवाह और तरंगों से कल–कल शब्द करने वाली, **268.घनानन्दा**–घनीभूत आनन्द की राशि, अथवा आकाश गंगा में स्थित जल से मेघों को आनन्द देने वाली, **269. घनप्रिया**–

आकाश गंगा रूप से मेघों को प्रिय लगने वाली , 270. घातुका – पाप एवं अशान का नाश करने वाली, **271. घूर्णितजला**–भंवरयुक्त जल वाली , **272. घृष्टपातक**– सन्ततिः पातक –परम्परा को नष्ट कर देने वाली, **273. घटकोटिप्रपीतापा**– जिसके करोड़ों घड़े जल नित्य पीए जाते हैं, **274. घटिताशेषमंगला** – पूर्णमंगल कारिणी । **275. घृणावती**– दयालु, **276. घृणनिधिः** – दयासागर, **277. घूकनादिनी** –तट पर उलूक और वक आदि पक्षियों के शब्द से युक्त, **279. घुसृणापिंजरतनुः**– कुमकुम, केशर आदि से चर्चित होने के कारण किचिंत पीले अंगों वाली, **280. घर्घरा**– घाघरानदी स्वरूपा, **281. घर्घरस्वना**– घर्घर ध्वनि से युक्त ।

282. चन्द्रिका – चन्द्रप्रभास्वरूपा, **283. चन्द्रकान्ताम्बुः** – चन्द्रमा के समान श्वेत जलवाली, **284. चंचदापा**– चंचल जलवाली, **285. चलद्युतिः** – विद्युत्स्वरूपा, **286. चिन्मयी** – ज्ञानस्वरूपा, **287. चितिरूपा**– चैतन्य स्वभाव, **288. चन्द्रायुतशतानना** – दस सहस्त्र चन्द्रमाओं के समान मनोरम मुखवाली, **289. चाम्पेयलोचना** – चम्पा के फूलों के समान सुन्दर नेत्रों वाली, **290. चारु** : – मनोहारिणी, **291. चार्वंगी**– परम सुन्दर अंगों वाली, **292. चारुगामिनी** – मनोहर चाल से चलने वाली, **293. चार्या**– शरण लेने योग्य , **294. चारित्रनिलया** – सदाचार का आश्रय, **295. चित्रकृत्** – अद्भुत कार्य करने वाली, **296. चित्ररूपिणी** – विचित्र रूप वाली ।

297. चम्पूः– गद्य–पद्यमय काव्यरूपा अथवा चम्पापुष्प के समान रंगवाली, **298. चन्दनशुच्यम्बुः** – चन्दन के समान पवित्र एवं सुगन्धित जलवाली, **299. चर्चनीया**– कीर्तन करने योग्य , **300. चिरस्थिरा** – चिरन्तन काल तक स्थिर रहने वाली, **301. चारुचम्पकमालाढया**– मनोहर चम्पा पुष्पों की माला से सुशोभित, **302. चमिताशेष दुष्कृता** – समस्त पापों को पी जाने वाली । **303. चिदाकाशवहा**– चिदाकाशरूप ब्रह्म को प्राप्त होने वाली, **304 . चिंत्या** – चिन्तन करने योग्य, **305. चंचत्** – देदीप्तमान, **306. चामरवीजिता**– चंवर से सेवित, **307. चोरिताशेषवृजिना** – समस्त पापों को हर लेने वाली, **308. चरिताशेषमण्डला**– ब्रह्म लोक आदि सब मण्डलों में विचरने वाली ।

309. छेदिताखिलपापौघा – समस्त पापराशि का उच्छेद करने वाली, **310. छदमघ्नी**– कपट, अज्ञान का नाश करने वाली , छलहारिणी – छल को हर लेने

वाली, **312. छन्नत्रिविष्टपतला** – स्वर्गलोक को व्याप्त करने वाली, **313. छोटिताशेषबन्धना** – समस्त बन्धनों को दूर करने वाली, **314. छुरितामृतधारौघा**– अमृतमय जल की धारा बहाने वाली, **315. छन्दगामिनी** – स्वच्छन्द चलने वाली, **317. छत्रीकृत–मरालौघा**– हंसों के समूह को श्वेत छत्र के समान धारण करने वाली, **318. छटाकृतनिजामृता** – अपने स्वरूपभूत जल को विशेष शोभा के रूप में धारण करने वाली ।

319. जाह्नवी– जाह्नु की पुत्री, **320. ज्या**– पापरूपी मृग को भयभीत करने के लिए धनुष की प्रत्यंचा के समान, **321. जगन्माता** – विश्वजननी, **322. जप्या** – जप करने योग्य नामवाली, **323. जंघलवीचिका**– उत्ताल तरंगों वाली, **324. जया** – विजयिनी अथवा पार्वती की सखी जया, **325. जनार्दनप्रीता**– भगवान् विष्णु से प्रीति करने वाली, **326. जृष्णीया** – देवता, ऋषि और मनुष्यों के द्वारा सेवन करने योग्य, **327. जगद्धिता** – जगत का कल्याण करने वाली । **328. ज्ञीवनम्** – जीवन हेतु, **329. जीवनप्राणा** – जीवन रूपी जल से जगत् को प्राणशक्ति से युक्त करने वाली, **330. जगत्** – विश्वरूपा अथवा सर्वत्र व्यापक, **331. ज्येष्ठा** – आद्याशक्ति, **332. जगन्मयी** – जगत्स्वरूपा, **333. जीवजीवातुलतिका** – प्राणियों के लिए सजीवन औषधरूपा, **334. जन्मिजन्मनिबर्हिणी** – जन्मधारी प्राणियों के जन्म–मरण का क्लेश दूर करने वाली ।

335. जाडयविध्वंसनकरी– जड़ता – अज्ञान का नाश करने वाली, **330 जगद्योनिः** – प्रकृति स्वरूपा, **337. जलाविला**– वर्षा के जल से कुछ मलिन –सी, **338. जगदानन्दजननी** – जगत् के लिए आनन्ददायिनी, **339. जलजा** – कमल का उत्पत्ति स्थान, **340. जलजेक्षणा** – कमलसदृश , **341. जनलोचनपीयूषा** – जीवमात्र के नेत्रों में अमृत के समान सुखद प्रतीत होने वाली, **342. जटातटविहारिणी**– भगवान् शंकर के जटा प्रदेश में विहार करने वाली , **343. जयन्ती** – विजयशीला, **344. जंजपूकघ्नी** – पापों का नाश करने वाली, **345. जनितज्ञानविग्रहा** – जिसने अपने ज्ञानमय शरीर को प्रकट किया है , **346. झल्लरीवाद्यकुशला**– अपने जलप्रवाह के द्वारा झल्लरीनामक वाद्यविशेष की ध्वनि प्रकट करने में कुशल , **347. झलज्झालजलावृता** – झलझल ध्वनि करने वाले जल से आच्छादित, **348. झिण्टीशवंद्या**– भगवान् शिव के द्वारा वन्दनीया, **349. झांकारकारिणी**– झंकार शब्द करने वाली, **350. झर्झरावती**– झरझर शब्द से युक्त ।

351. टीकिताशेषपाताला – भोगावती गंगा के रूप में समस्त पाताल लोक में प्रवाहित होने वाली, **352. टकिंकैनी द्रिपाटने**– पापरूपी पर्वत को विदीर्ण करने में टेक के समान, **353. टंकारनृत्यत्कल्लोला** – जिसकी चंचल लहरें टंकार शब्द के साथ नृत्य करती हैं, **354. टीकनीयमहात्टा**– जिसका विशाल तटप्रान्त सबके सेवन करने योग्य है । **355. डम्बरप्रवहा** – बड़े वेग से बहने वाली, **356. डीनराजहंसकुलाकुला**– उड़ते हुए राज हंसों के समुदाय में व्याप्त, **357. डमडुमरुहस्ता** –हाथ में डमरू लिए रहने वाली।

358. डामरोक्तमहाण्डका– डामरकल्प में प्रतिपादित विराट् स्वरूप वाली, **359. ढौकिताशेषनिर्वाणा** – अपने भक्तों को सभी मोक्ष की प्राप्ति कराने वाली, **360. ढक्कानादचलज्जला**– डंके की आवाज के समान ध्वनि –सी करने वाले प्रवाहशील चंचल जलवाली, **361. ढुण्ढिविघ्नेशजननी** – ढुण्ढिराज गणेश की माता, **362. ढणडढुणितपातका** – ढन्–ढन् शब्द के साथ पातकों को धक्के देकर ढकेलने वाली, **363. तर्पणी** – सबको तृप्त करने वाली, **364. तीर्थतीर्था** – तीर्थों के लिए भी तीर्थ रूपा , **365. त्रिपथा** – स्वर्ग , भूतल और पाताल –तीनों मार्गों से बहने वाली, **366.** त्रिदशेश्वरी– देवताओं की स्वामिनी, **367. त्रिलोकगोप्त्री**– तीनों लोकों की रक्षा करने वाली, **368. तोयेशी**– जल अधिष्ठात्री देवियों की भी स्वामिनी, **369. त्रैलोक्यपरिवन्दिता** – त्रिभुवनाविशेष बन्दिता ।

370. तापत्रितयसंहर्त्री – आध्यात्मिक आदि तीनों तापों का संहार करने वाली, **371. तेजोबलविवर्धिनी** – तेज और बल बढ़ाने वाली, **372. त्रिलक्ष्या** – जिसका स्वरूप तीनों लोकों में लक्षित होता है, **373. तारणी**– सबको तारने वाली, **374. तारा**– नक्षत्र रूपा ,**375. तारापतिकरार्चिता**– चन्द्रमा की किरणों द्वारा पूजित, **376. त्रैलोक्यपावनी पुण्या** – तीनों लोकों को पवित्र करने वाली नदियों में सबसे अधिक पुण्यमयी, **377. तुष्टिदा**– सुख एवं सन्तोष देने वाली, **378. तुष्टिरूपिणी**– सन्तोषवृत्तिरूपा, **379. तृष्णाच्छेत्री**– तृष्णा का उच्छेद करने वाली, **380. तीर्थमाता**– तीर्थों की माता, **381. त्रिविक्रमपदोभ्दवा**– भगवान वामन के चरण पखारने से प्रकट हुई , **382. तपोरूपा**– कृच्छ्चान्द्रायणादि व्रत एवं तपस्यारूपा, **383. तोयमया** – तीर्थों की माता।

384. तपः स्तोमफलप्रदा– तपःसमुदाय का फल देने वाली, **385. त्रैलोक्यव्यापिनी** – तीनों लोकों में व्यापक, **386. तृप्तिः**– तृप्तिस्वरूपा, **387. तृप्तिकृत्**– सन्तुष्ट करने वाली,

388. तत्वरूपिणी– चौबीस तत्व रूपा, **389. त्रैलोक्यसुन्दरी**– तीनों लोकों में सर्वाधिक सौन्दर्य वाली, **390. तुर्या** – जाग्रत् आदि तीन अवस्थाओं में परे, **391. तुर्यातीतफलप्रदा**– तुरीयातीत ब्रह्म पद को देने वाली, **392. त्रैलोक्यलक्ष्मीः** – त्रिभुवन की सम्पत्ति, **393 त्रिपदी** – तीनों लोकों में जिसका स्थान है, **394. तथ्या** – तीनों कालों से अबाधित, **395. तिमिरचन्द्रिका** – अज्ञानरूपी अन्धक. **396. तेजोगर्भा** – भगवान् शंकर का तेजोमय वीर्य जिसके गर्भ में स्थित था । **397. तपःसारा**– तपस्या की सारभूता, **398. त्रिपुरारिशिरोगृहा** – भगवान शंकर के मस्तक रूपी गृह में निवास करने वाली, **399. त्रयीस्वरूपिणी**– तीनों वेद जिसके स्वरूप हैं।

400. तन्वी– प्रपंचका विस्तार करने वाली । **401. तपनांग** – जभीतिनुत् – सूर्यपुत्र यम का भय दूर करने वाली, **402. तरिः संसार**– सागर से पार होने के लिए नौका , **403. तराणिजामित्रम्** – सूर्यपुत्र यम के अधिकार में बाधा डालने के कारण उनके लिए अमित्ररूपा, **404. तर्पिताशेषपूर्वजा** – राजा भगीरथ के अथवा जन समुदाय के सम्पूर्ण पूर्वजों को तृप्त करने वाली, **405. तुलाविरहिता** – तुलनारहित, **406. तीव्रपापतूलतनूनपात्**– भंयकर पापरूपी रुई के ढेर को जलाने के लिए अग्नि के समान, **407. दारिद्रयदमनी**– दुर्गति एवं दरिद्रता का दमन करने वाली, **408. दक्षा**– जगत् का उद्धार करने में कुशल, **409. दुष्प्रेक्षा** – भक्तिभाव के बिना जिसका दर्शन पाना अत्यन्त कठिन है , **410. दिव्यमण्डना** – अलौकिक आभूषणों से विभूषित, **411. दीक्षावती** – लोकहित एवं जीवों के उद्धार की दीक्षा से युक्त, **412. दुरावाप्या**– दुर्लभा, **413. द्राक्षामधुरवारिभृत**– मुनक्का के समान मधुर जल धारण करने वाली ।

414. दर्शितानेककुतुका– अपने जल कल्लोलों के द्वारा अनेक प्रकार के कौतुक दिखाने वाली, **415. दुष्टदुर्जयदुःखहत्**– दोषयुक्त दुर्जय दुःखों को हर लेने वाली, **416. दैन्यहत्** – दीनता को दूर करने वाली , **417. दानवारिपदाब्जजा**– श्री विष्णु के चरणबिन्दों से प्रकट हुई , **418. दुरितघ्नी** – पापों का नाश करने वाली, **419. दन्दशूकविषघ्नी** – सर्पों के विष का नाश करने वाली, **420. दारिताघौघसन्ततिः** – पापराशि की परम्परा को विदीर्ण करने वाली, **421. द्रुता** – बेग से बहने वाली, **422. देवद्रुमच्छन्ना** – सन्तान,कल्पवृक्ष, मन्दर, पारिजात तथा हरिचन्दन – इन पांच देव वृक्षों से आच्छादित, **423. – दुर्वाराघविघातिनी**– जिन्हें दूर करना कठिन है, ऐसे पातकों का नाश करने वाली , **424. दमग्राह्या** – मन और इन्द्रियों के संयम से प्राप्त होने वाली, **425. देवमाता** – अदितिस्वरूपा, **426. देवलोकप्रदर्शिनी** – अपने उपासकों को ब्रह्म

लोक आदि दिव्य लोकों की प्राप्ति कराने वाली, **427. देवदेवप्रिया** – देवाधिदेव शिव की प्रिया , **428. देवी** – द्युतिमती, **429. दिक्पालपददायिनी** – इन्द्र आदि दिक्पालों के पद की प्राप्ति कराने वाली ।

430. दीर्घायुः कारिणी – आयु बड़ी करने वाला, **431. दीर्घा** – विशाल, अनन्त, **432. दोग्ध्नी** –धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाली, **433. दूषणवर्जिता** – दोषरहित, **434. दुग्धाम्बुवाहिनी**– दूध के समान स्वच्छ, स्वादिष्ट एवं गुणकारी जल बहाने वाली, **435. दोहया** – इच्छा अनुसार दोहन करने योग्य, **436. दिव्या**– अलौकिक स्वरूप वाली, **437. दिव्यगतिप्रदा** – दिव्यगति प्रदान करने वाली , **438. द्युनदी** –स्वर्गलोक की गंगा, **439. दीनशरणम्** – दीनों –महापातकियों को भी शरण देकर उनका उद्धार करने वाली, **440. देहिदेहनिवारिणी**– देहधारियों के देह का निवारण करने वाली, **441. द्राघीयसी** – अतिशय विशाल, **442. – दाघहन्त्री** – दाह की शान्ति करने वाली, **443. दितपातकसन्ततिः** – पाप–परम्परा का खण्डन करने वाली, **444. दूरदेशान्तरचरी** – दूर देश में विचरने वाली, **445. दुर्गमा** – दुर्लभा, **446. देववल्लभा** – देवताओं की इष्टदेवी , **437. दुर्वृत्तघ्नी**– दुष्टों अथवा पापों का नाश करने वाली, **448. दुर्विगाहया** – जिसमें स्नान करने का अवसर बहुत दुर्लभ है । **449.** दयाधारा– करुणा की भण्डार, **450. दयावती**– दयालु –स्वभाव ।

451. दुरासदा – दुर्लभ , **452. दानशील**– स्वाभावः चारों पुरुषार्थों को देने वाली, **453. द्राविणी** – बड़े वेग से प्रवाहित होने वाली, **454. द्रुहिणस्तुता** – ब्रह्मा जी के द्वारा प्रशंसित, **455. दैत्यदानवसंशुद्धिकर्त्री** – दैत्यों और दानवों को भी भलीभांति शुद्ध करने वाली, **456. दुर्बुद्धिहारिणी** – खोटिबुद्धि का निवारण करने वाली, **457. दानसारा**– जिसमें स्वभावतः दया भरी है, **459. द्यावाभूमिविगाहिनी** – आकाश और भूमि में समान रूप से विचरण करने वाली, **460. दृष्टादृष्टफलप्राप्तिः**– लौकिक और पारलौकिक फल की प्राप्ति में हेतु , **461. देवतावृन्दवन्दिता** – देव समुदाय के द्वारा नमस्कृत , **462. दीर्घव्रता** – लोकोपकार का महान व्रत धारण करने वाली, **463. दीर्घदृष्टिः** – ज्ञानस्वरूपा, **464. दीप्ततोया** – प्रकाशमान जल वाली, **465. दुरालभा** – दुर्लभा, **466. दण्डनीतिः** – दण्डनीति नामवाली विद्यास्वरूपा, **467. दण्डयित्री** – पापों को दण्ड देने वाली, **468. दुष्टदण्डधरार्चिता** – दुष्टों को दण्ड देने वाले यमराज के द्वारा पूजित ।

469. दुरोदरघ्नी– जुवा आदि बुरे आचरणों को नाश करने वाली, **470. दावार्चिः**–

पापरूपीः – **पापरूपी** वन के लिए दावानल की ज्वाला के समान, **471. द्रवत्** – सर्वव्यापक तत्व, **472. द्रव्यैकशेवधिः** – सम्पूर्ण द्रव्यों की एकमात्र निधि, **473. दीनसन्तापशमनी** – दीनों – संसार दुःखों से दुखी जीवों के आध्यात्मिक आदि तापों का निवारण करने वाली, **474. दात्री**– चारों पुरुषार्थों को देने वाली, **475. दवथुवैरिणी** – संसार–भय से होने वाले सन्ताप को ढेर करने वाली, **476. दरीविदारणपरा** – पर्वतों की गुफाओं को विदीर्ण करने वाली, **477. दान्ता** – इन्द्रियों को वश में रखने वाली, **478. दारिताद्रितटा** – पर्वतों के पार्श्वभाग को विदीर्ण करके बहने वाली, **479. दुर्गा** – दुर्ग दैत्य का वध करने वाली देवी।

481. दुर्गारण्यप्रचारिणी – दुर्गम वन में विचरने वाली । **482. धर्मद्रवा** – धर्मस्वरूपा है जल जिसका है, **483. धर्मधुरा** – धर्म का आधार, **484. धेनु :** – कामधेनु स्वरूपा , **485 धीरा** – धैर्यशालिनी, **486. धृतिः** – धारणशक्ति, **487. ध्रवा** – नित्या, **488. धेनुदानफलस्पर्शा** – जिसका जल का स्पर्श गोदान का फल देने वाला है , **489. धर्मकामार्थमोक्षदा** – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाली, **490. धर्मोर्मिवाहिनी**– धर्मरूपी लहरों को धारण करने वाली, **491. धुर्या** –श्रेष्ठा, **492. धात्री** – धारण –पोषण करने वाली माता, **493. धात्रीविभूषणम्**– पृथ्वी का अलंकार , **494. धर्मिणी** – पुण्यवती, **495. धर्मशीला** – स्वभावतः धर्म का आचरण करने वाली, **496. धन्विकोटिकृतावना** – कोटि–कोटि धनुर्धर वीरों ने जिसका रक्षण किया है , **497. ध्यातृपापहरा** – ध्यान करने वालों के पापों को हर लेने वाली, **498. ध्येया** –ध्यान करने योग्य, **499. धावनी** – धोने वाली, **500. धूतकल्मषा** – पापों को धो डालने वाली, **501. धर्मधारा** – धर्म को धारण करने वाली, **502. धर्मसारा**– सब धर्मो की सारभूता, **503. धनदा** – धन देने वाली, **504. धनवर्द्धिनी**– धन बढ़ाने वाली।

505. धर्माधर्मगुणच्छेत्री – धर्मा धर्म के बन्धन को काटने वाली ब्रह्म विद्यास्वरूपा, **506. धतूरकुसुमप्रिया** – धतूरे के फूल में रुचि रखने वाली, **507. धर्मेशी** – धर्म की स्वामिनी, **508. धर्मशःस्त्रज्ञा**– धर्मशास्त्र को जानने वाली उसे बढ़ाने वाली, **510. धर्मलभ्या** – धर्म से प्राप्त होने योग्य, **511.धर्मजला**– धर्मस्वरूपा जलवाली, **512. धर्मप्रवधर्मिणी** – धर्म की जननी तथा धर्मनिष्ठ, **513. ध्यानगम्यस्वरूपा** – जिसका स्वरूपा चिन्तन करने योग्य है **513 . धरणी** –धारण करने वाली, पृथ्वी स्वरूपा, **515. धातृपूजिता** – ब्रहमाजी के द्वारा पूजित, **516. धूः**– पापों को कम्पित करने वाली,

517. धूर्जटिजटासंस्था– भगवान् शंकर की जटा में वास करने वाली, **518.** धन्या– कृतार्थस्वरूपा, **519. धीः** – बुद्धिस्वरूपा, **520. धारणावती** – धारणाशक्ति से सम्पन्न, मेघस्वरूपा, **521. नन्दा** – जगत को आनन्द देने वाली, **522. निर्वाणजननी**– परम शान्ति देने वाली,**523. नन्दिनी** – दूसरों को प्रसन्न करने वाली , **524 नुन्नपातका** – पातकों को दूर करने वाली ।

525. निषिद्धघ्निनिचया – विघ्नसमुदाय का निवारण करने वाली, **526. निजानन्दप्रकाशिनी** – अपने स्वरूपभूत आनन्द को प्रकाशित करने वाली, **527. नमोगंचारी**– आकाश के आंगन में विचरने वाली, **528. नूतिः** स्तुतिस्वरूपा, **529. नम्या** – वन्दनीय, **530. नारायणी** – नारायण शक्तिस्वरूपा– नदीस्वरूपा , **531. नुता** – ब्रह्मा और इन्द्र आदि देवताओं के द्वारा अभिनन्दिता , **532. निर्मला** – संसाररूपी मल से रहित, **533. निर्मलाख्याना** – जिसकी महात्म्यकथा अत्यन्त निर्मल है, **534. नाशिनी तापसम्पदाम्** – सन्ताप की परम्परा का नाश करने वाली, **535. नियता** – नियमपूर्वक रहने वाली एकरूपा, **536. नित्यसुखदा** –सदा सुख देने वाली, **537. नानाश्चर्यमहानिधिः** – अनेक प्रकार के आश्चर्यों का भण्डार ।

538. नदी– अव्यक्त शब्द करने वाली सरिता, **539. नदसरोमाता** – नदों और सरोवरों की जननी, **540 . नायिका** – जीवों को संसार समुद्र से पार ले जाने वाली अथवा सब नदियों की स्वामिनी, **541. नाकदीर्घिका** – स्वर्गलोक की बावली, **542. नष्टोद्धरणधीरा**– संसार सागर में गिरकर नष्ट होने वाले जीवों का उद्धार करने में दक्ष, **543. नन्दना** – समृद्धि देने वाली, **544. नन्ददायिनी** – आनन्द देने वाली , **545. निर्णिक्ताशेषभुवना**– समस्त लोकों को पवित्र करने वाली, **546. निःसंगा** – आसक्ति रहित, **547. निरुपद्रवा** –विघ्नरहित, **548. निरालम्बा** – आधाररहित, **549. निष्प्रपंचा**– प्रपंच से परे स्थित, **550. निर्णाशितमहामला** – अज्ञानरूपी महामल का पूर्णतया नाश करने वाली ।

551. निर्मलज्ञानजननी–विशुद्ध ज्ञान को प्रकट करने वाली, **552. निःशेषप्राणितापहत** – समस्त प्राणियों का सन्ताप हर लेने वाली, **553. नित्योत्सवा** – नित्यउत्सवयुक्त, **554. नित्यतृप्ता**– अपने स्वरूपभूत आनन्द से सदा सन्तुष्ट, **555. नमस्कार्या** – नमस्कार करने योग्य, **556. निरंजना** – अज्ञान रहित , **556. निष्ठावती**– श्रद्धा एवं नियम –निष्ठा से युक्त, **558. निरातंका** – भयरहित, **559. निर्लोप** –पाप आदि से

अलिप्त, **560. निश्चलात्मिका** – स्थिर बुद्धि वाली, **561. निरवद्या**– निर्दोष, **562. निरीह**– चेष्टा रहित, **563. नीललोहितमूर्द्धगा** – भगवान शिव के मस्तक पर विराजमान ।

564. नन्दिभृगिगणस्तुत्या –नन्दी –भृंगी आदि शिवगणों से स्तुति की जाने योग्य, **565. नागा** – नागस्वरूपा **566. नन्दा** – समृद्धिदायिनी, **567. नगात्मजा** – गिरिराज हिमवान् की पुत्री, **568. निष्प्रत्यूहा**– विघ्न–बाधाओं से रहित, **569. नाकनदी**– स्वर्गलोक की नदी, **570. निरयार्णवदीर्घनौः** – नरक समुद्र से पार होने के लिए विशाल नौका स्वरूपा, **571. पुण्यपद्रा** – पुण्य देने वाली, **572. पुण्यगर्भा**– अपने भीतर पुण्य धारण करने वाली, **573. पुण्या**– पुण्य स्वरूपा , **574. पुण्यतरकङ्गिणी** – पवित्र लहरों वाली, **575. पृथुः** – विशाल एवं परिपूर्ण , **576. पृथुफला**– महान फल वाली, **577. पूर्णा** – सर्वत्र व्यापक, अविच्छिन्न धारा से युक्त, **578. प्रण्तार्तिप्रभंजनी**– शरणगतों की पीड़ा का नाश करने वाली ।

579. प्राण्दा – प्राणदान करने वाली, **580. प्राणिजननी**– जीवों को जन्म देने वाली, **582. प्राणरूपिणी**– प्राणस्वरूपा, **583. पदमालया**– कमलों में वास करने वाली लक्ष्मीस्वरूपा, **584. पराशक्तिः** – सर्वोत्कृष्ट शक्ति, **585. पुरजित्परमप्रिया**– त्रिपुरारि शिव की अतिशय बल्लभा , **586. परा**– सर्वश्रेष्ठ, **587. परफलप्राप्तिः** –सर्वोत्तम फल मोक्ष की प्राप्ति कराने वाली, **588. पावनी**– सबको पवित्र करने वाली, **589. पयस्विनी**– उत्तम जलवाली, **590. परानन्दा**– परमानन्दस्वरूपा, **591. प्रकृष्टार्था** – श्रेष्ठ पुरुषार्थ स्वरूपा, **592. प्रतिष्ठा** – सबकी आधारभूता, **593. पालिनी**– पालन करने वाली , **594. परा**– परमात्मस्वरूपा, **595. पुराणपठिता** – पुराणों में जिसकी महिमा का प्रतिपादन किया गया है , **596. प्रण्वाक्षररूपिणी**– ओमकार स्वरूपा **597. प्रीता** – सबको प्रिय लगने वाली, **598. पार्वती** – पर्वतराज कन्या, **599. प्रेमसम्पन्ना** – प्रेम से परिपूर्ण, **600. पशुपाशविमोचनी** – जीवों के अज्ञानमय बन्धन को दूर करने वाली ।

601. परमात्मास्वरूपा– परब्रह्म रूपिणी, **602. परब्रह्म प्रकाशिनी**– परब्रह्म को प्रकाशित करने वाली, **603. परमानन्दनिष्पन्दा** – अपने स्वरूप भूत परमानन्द में निम्न होने के कारण निश्चल, **604. प्रायश्चितस्वरूपिणी** –समस्त पापों के लिए एकमात्र प्राश्चितस्वरूपा, **605. पानीयरूपनिर्वाणा**– जिसमें जल से मोक्ष का ही निवास है,

606.परित्राणपरायणा – शरणागतों की रक्षा करने में तत्पर, परित्राणपरायणा, **607. पापेन्धनदवज्वाला** –पापरूपी ईंधन को जलाने के लिए दावाग्नि की लपट , **608. पापारिः** – पापों की शत्रु, **609. पापनानुत्** –पापों का नाम तक मिटा देने वाली, **610. परमैश्वैर्यजननी**– अणिमा आदि महान् ऐश्वयों की रक्षा में तत्पर, **611. प्रज्ञा** – उत्तम ज्ञानस्वरूपा, **612. प्राज्ञा**– विदुषी, **613. परापरा**– कारणकार्यस्वरूपा, **614. प्रत्यक्षलक्ष्मीः** – साक्षात लक्ष्मीस्वरूपा, **615. पदमाक्षी**– कमल के समान नेत्रों वाली, **616. परव्योमामृतस्रवा** – परब्रह्मस्वरूपा अमृतमय जल को बहाने वाली , **617. प्रसन्नरूपा** – आनन्दमय स्वरूप वाली, **618. प्रणिधिः** – सर्वाधार, **619. पूता**– परम पवित्र ।

620. प्रत्यक्षदेवता – सबके नेत्रों के समक्ष प्रकट हुई सच्चिदानन्दमयी देवी, **621. पिनाकिपरमप्रीता**–पिनाकधारी भगवान् शिव की परम प्रियतमा, **622. परमेष्ठिकमण्डलुः** – ब्रह्माजी के कमण्डल में बास करने वाली, **623. पदमनाभपदार्घ्येण प्रसूता**– भगवान विष्णु के चरण पखारने से प्रकट हुई , **624. पदममालिनी**– कमल पुष्पों की माला धारण करने वाली, **625. परर्द्धिदा** – उत्तम समृद्धि देने वाली, **626. पुष्टिकरी**– पोषण करने वाली, **627. पथ्या** – संसाररूपी रोग की निवृति के लिए हितकर आहारस्वरूपा, **628. पूर्तिः** – पूर्णता, **629. प्रभावती** – प्रकाशवती , **630. पुनाना** – पवित्र करने वाली, **631. पीतगर्भघ्नी**, पीतगर्भ अर्थात राक्षसों का नाश करने वाली, **632. पापपर्वतनाशिनी**– पापरूपी पर्वत का नाश करने वाली, **633. फलिनी**– देने योग्य फल से युक्त, **634. फलहस्ता** – भक्तों को देने के लिए सब प्रकार के फल हाथ में धारण करने वाली, **635. फुल्लाम्बुजविलोचना** – विकसित कमल के समान नेत्रों वाली ।

636.फालितैनोमहाक्षेत्रा–पापों के महाक्षेत्र को नष्ट करने वाली, **637. फणिलोकविभूषणम्** –भोगवती गंगा के रूप में नागलोक को विभूषित करने वाली, **638. फेनच्छलप्रणुन्नैनाः** – फेन छांटने के व्याज से पापराशि को नाश करने वाली, **639.फुल्लकैरवगन्धिनी**–खिले हुए कुमुदपुष्पों की गन्ध से युक्त, **640. फेनिलाच्छाम्बुधाराभा**– फेनयुक्त स्वच्छ जल की धारा से उद्भासित होने वाली, **641. फुडुघाटितपातका** – 'फुट्' इस शब्द के साथ पातकों को उखाड़ फेंकने वाली, **642.फाण्तिस्वादुसलिला**–सीरा के समान स्वाष्टि जल वाली, **643. फाण्टपथ्यजलाविला** – मट्ठा के समान हितकर जल से भरी हुई ।

644. विश्वमाता– समस्त संसार की माता, **645. विश्वेशी–** जगदीश्वरी, **646. विश्वा–** सर्वस्वरूपा, **647. विश्वेश्वरप्रिया–** विश्वनाथवल्लभा, **648. ब्रह्मण्या–** ब्रह्मणहितकारिणी, **649.–ब्रह्मकृत–** ब्रह्मा आदि देवताओं को उत्पन्न करने वाली जगदीश्वरी, **650. ब्रह्मी–** ब्रह्मशक्ति, **651. ब्रह्मिष्ठा –** ब्रह्मनिष्ठ, **652. विमलोदका –** निर्मल जल वाली , **653. विभावरी –** रात्रिस्वरूपा , **654. विरजा–** रजोगुणरहित, **655. विक्रान्तानेकविष्टपा –** अनेक भुवनों में व्याप्त, **656. विश्वामित्रम् –**संपूर्ण जगत् की सुदृद, **657. विष्णुपदी–** भगवान विष्णु के चरणों से प्रकट हुई, **658. वैष्णवी–** विष्णुशक्ति , **659. वैष्णवप्रिया –** विष्णु भक्तों को प्रिय , **660. विरूपाक्षप्रियकारी–** भगवान शंकर का प्रिय कार्य करने वाली, **661. विभूतिः –** अणिम आदि अष्टविध ऐश्वर्यरूपा, **662. विश्वतोमुखी –** सब ओर मुखवाली, **663. विपाशा –** बन्धनरहित, व्यास नाम की नदी, **664. वैबुधी–** देवलोक में प्रकट होने वाली, **665. वेद्या–** जानने योग्य ,**666. वेदाक्षररसस्रवा–** वेद के अक्षरों से प्रतिपादित ब्रहमानन्द रस का स्रोत बहाने वाली, ब्रह्मद्रवरूपा ।

667. विद्या – ब्रह्मविद्यास्वरूपा, **668. वेगवती–** बड़े वेग से बहने वाली, **669. बंद्या–** वन्दनीया, **670. बृंहणी –** बृहत्स्वरूपा, **671. ब्रह्म वादिनी –** ब्रह्म का उपदेश करने वाली ,**672. वरदा –** वर देने वाली , **673. विप्रकृष्टा –** सर्वोत्तम, **674. वरिष्ठा –** श्रेष्ठा , **675. विशोधनी–** विशेषरूप से शुद्ध , **676. विद्याधारी–** सम्पूर्ण विद्याओं को धारण करने वाली, **677. विशोका –** शोकरहिता , **678. वयोवृन्दनिषेविता –** पक्षियों के समुदाय से निषेवित , **679. बहूदका –** बहुत जलवाली, **680. बलवती–** बल से युक्त, **681. व्योमस्था –** स्वर्गगंगारूप में आकाश में स्थित, **682. विबुधप्रिया –** देवताओं की प्रिय नदी ।

683. वाणी– सरस्वती स्वरूपा, **684. वेदवती–** वैदिक ज्ञान से सम्पन्न, **685. वित्ता–** ज्ञान स्वरूपा, **686. व्रह्मविद्यातररिणी–** ब्रहमविद्या रूपी तरंगों से युक्त, **687. ब्रह्माण्ड कोटिव्याप्ताम्बुः –** करोड़ों ब्रह्माण्डों में व्याप्त जल वाली, **688. व्रह्म हत्याहारिणी–** ब्रह्म हत्या का अपहरण करने वाली, **689. ब्रह्मेशविष्णुरूपा –** ब्रह्मा, शिव और विष्णु स्वरूपा, **692. विलासिसुखदा –** विलासियों को सुख देने वाली, **693. वश्या –** भगवदिच्छा के अधीन रहने वाली, **694. व्यापिणी–** सर्वत्र व्यापक, **695. वृषारणिः–** धर्मोत्पति की करणरूपा, **696. वृषांमौलिनिलयाः –** भगवान शंकर के मस्तक पर निवास करने वाली, **697. विपन्नार्तिप्रभंजनी –** विपत्ति में पड़े हुए भक्तजनों की पीड़ा का

निवारण करने वाली, **698. विनीता**– विनयशील, **699. विनता** –विशेषःनम्र, **700. व्रघ्नतनया** – सूर्य पुत्री यमुना रूपा , **701. विनयान्विता** – विनययुक्त ।

702. विपंची – वीणास्वरूपा, **703. वाद्यकुशला** – सभी प्रकार के वाद्यों को बजाने में चतुर **704. वेणुश्रुतिविचक्षणा**– वेणु गीत सुनने और समझने में कुशल, **705. वर्चस्करी** –तेज उत्पन करने वाली, बलकरी– सामर्थ्य प्रदान करने वाली, **707. बलोन्मूलितकल्मषा**–बलपूर्वक पापों का उच्छेद करने वाली , **708. विपाष्मा** – पापरहित, **709. विगतातंका**– भयरहित, **710. विकल्पपरिवजिता** – भेद दृष्टि से रहित, **711. वृष्टिकर्त्री** – सूर्यरूपा से वर्षा करने वाली, **712. वृष्टिटजला**– वर्षा के कारणभूत जलवाली, **713. विधिः** – ब्रह्मारूप से सृष्टि करने वाली, **714. विच्छिन्नवन्धना** – अपने आश्रितों के संसारबन्धन का नाश करने वाली । **715. व्रतरूपा** – कृच्छ्चान्द्रायणादि व्रतस्वरूपा, **716. वित्तरूपा**– वैभवरूपिणी, **717. बहुघ्निविनाकृत्** –बहुत से विघ्नों का विनाश करने वाली, **718. वसुधारा**– बसु धारण करने वाली अथवा वसुधारा स्वरूपा , **719. वसुमती**– रत्नगर्भा वसुधारूपा, **720. विचित्रांगी** – अद्‌भुत शरीर वाली, **721. विभावसुः** – अग्नि अथवा सूर्य की भांति प्रकाशित होने वाली , **722. विजया**– विजयशालिनी, **723. विश्वबीजम्** – जगत की कारणस्वरूपा, **724. वामदेवी** – वामदेव शिव की शक्ति, **725. वरप्रदा** – वर देने वाली, **726. वृषाश्रिता** –धर्म के आधारित, **727. विषघ्नी** – विष का प्रभाव नष्ट करने वाली, **728. विज्ञानोर्भ्येशुमालिनी**– विज्ञानमयी तरंगों और किरणों से युक्त ।

729. भव्या – कल्याणमयी , **730. भोगवती** – भागवती नाम से प्रसिद्ध पातालगंगा , **731. भद्रा** – मंगलमयी, **732. भवानी** – शिवपत्नी , **733. भूतभाविनी**– समस्त प्राणियों की उत्पत्ति और पालन करने वाली , **734. भूतधात्री** – चार प्रकार के जीवों का धारण –पोषण करने वाली **735. भयहरा** – संसार –भय का निवारण करने वाली, **736. भक्तदारिद्रय धातिनी**– भक्तों की दरिद्रता नाश करने वाली, **737. भुक्तिमुक्तिप्रद्रा** – भोग और मोक्ष देने वाली, **738. भेदी**– नक्षत्रों की अधीश्वरी, **739. भक्तस्वर्गापवर्गदा** – भक्तों को स्वर्ग और मोक्ष देने वाली, **740. भागीरथी** – राजा भगीरथ के द्वारा लायी हुई , **741. भानुमती**– प्रकाशवती, **742. भाग्यम्** – नियतिरूपा, **743. भोगवती**– विविध प्रकार के भोगों से सम्पन्न, **744. भृतिः** – भरण–पोषण का साधन ।

745. भवप्रिया – भगवान् शंकर की प्रिया, **746. भवद्वोष्ट्री** – संसार–बन्धन का नाश करने वाली **747. भूतिदा** – ऐश्वर्य देन वाली, **748. भूतिभूषणा** – विभूषित, **749. भाललोचनभावज्ञा** – भगवान शिव के भाव को जानने वाली, **750 . भूतभव्यभवत्प्रभु :** – भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों काल की स्वामिनी । **751. भ्रान्तिज्ञानप्रशमनी** – भ्रमात्मक ज्ञान का निवारण करने वाली, **752. भिन्न ब्रह्माण्डण्डपा**– ब्रह्माण्ड रूपी मण्डल का भेदन करने वाली, **753. भूरिदा**– बहुत देने वाली, **754. भक्तसुलभा** – भक्तों को सुगमतापूर्वक प्राप्त होने वाली , **755. भाग्यवददृष्टिगोचरी** – भाग्यवानों को प्रलय दर्शन देने वाली, **756. भञ्जितोपप्लवकुला** –भक्तजनों के उपद्रवों को नाश करने वाली, **757. भक्ष्यभोज्यसुखप्रदा** – भक्ष्य–भोज्य का सुख देने वाली, **758. भिक्षणीया** – अभ्युदय और निःश्रेयस की इच्छा वाले पुरुषों द्वारा याचना करने योग्य,**759. भिक्षुमाता**– भिक्षुओं – माता समान सुख देने वाली, **760. भावी** – सबको उत्पन्न करने वाली, **761. भावस्वरूपिणी** – पदार्थरूपा ।

762. मन्दाकिनी – स्वर्ग गंगा, **763. महानन्दा** – परमानन्दस्वरूपा, **764. माताः** – सम्पूर्ण विश्व के पापरूपी मल को पुत्रवत्सल माता की भांति दूर करने वाली, **765. महोदया** – महान अभ्युदयरूप, **767. मधुमती**– अमृतमय जल से युक्त, **768. महापुण्या**– महापुण्यस्वरूपा, **769. मुदाकारी** – हर्षोल्लास की निधि, **770**. मुनिस्तुता– मुनियों के द्वारा प्रशंसित एवं पूजित, **771. महोहन्त्री** – अज्ञान का नाश करने वाली, **772. महातीर्था** –महान तीर्थस्वरूपा, **773. मधुस्रवा** – मीठे जल का स्रोत बहाने वाली, **774. माधवी** – विष्णुप्रिया, **775. मानिनी**– सबके द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाली, **776. मान्या** – माननीया, **777. मनोरथपथातिगा** – मन की पहुंच से परे विराजमान ।

778. मोक्षदा – मोक्ष देने वाली, **779. मतिदा** – उत्तम बुद्धि देने वाली, **780. मुख्या**– श्रेष्ठ, **781. महाभाग्यजनाश्रिता** – बड़भागी मनुष्यों द्वारा सेवित, **782. महावेगवती**– बड़े वेग से बहने वाली, **783. मेध्या**–पवित्रा, **784. महा**– उत्सवरूपा, **785. महिम भूषणा** – अपनी महिमा से विभूषित , **786. महाप्रभावा** – महान प्रभाव से युक्त, **787. महती** – विशाल, **788. मीनचंचललोचना**– मीन के समान चंचल नेत्रों वाली, **789. महाकारुण्यसम्पूर्णा** – अत्यन्त कृपा से भरी हुई , **790. महर्द्धिः** – बड़ी भारी समृद्धि देने वाली, **791 . महोत्पला** – बड़े –बड़े कमलों को उत्पन्न करने वाली ।

792. मूर्तिमत– मर्तिमान् तेज, **793. मुक्तिरमणी**–मुक्तिरूपा , रमण करने योग्य, **794. मणिमाणिक्यभूषणा –** मणि–माणिक्यमय आभूषणों वाली, **795. मुक्ता कलापनेपथ्या –** मोतियों की माला से श्रृंगार करने वाली, **796. मनोनयननन्दिनी –**मन और नेत्रों को आनन्द देने वाली , **797. महापातकराहशघ्नी –** महापातकों की राशि का नाश करने वाली, **798. महादेवार्धहारिणी–** महादेव जी के आधे शरीर पर अधिकार करने वाली गौरी स्वरूपा, **799. महोर्मि –**मालिनी –ऊंची तरगमालाओं से युक्त , **800. मुक्ता–** मुक्तस्वरूपा, **801. महादेवी–** महादेवी, **802. मनोन्मनी–** मन को उन्मन करने वाली।

803. महापुण्योदयप्राप्या– महान् पुण्य का उदय होने पर प्राप्त होने वाली, **804. मायातिमिरचन्द्रिका –** मायामय अन्धकार का नाश करने के लिए चन्द्रप्रभारूपा, **805. महाविद्या –** ब्रह्मविद्यास्वरूपा, **806. महामाया –** महामाया, **807. महामेधा –** महान् , बुद्धिमती, **808. महौषधम् –** उत्तम औषधिरूपा **809. मालाधरी–** माला धारण करने वाली, **810. महोपाया–** मुक्ति की प्राप्ति का महासाधन, **811. महारोगविभूषणा–** महान् सर्प जिसके आभूषण हैं , **812. महामोहप्रशमनी–** महान् मोह को शान्त करने वाली, **813. महामंगलमंगलम् –** महान् मंगलों के लिए भी मंगल रूप, **814. मार्तण्डमण्डलचरी –** आकाशगंगा रूपा से सूर्यलोक में विचरने वाली, **815. महालक्ष्मीः–** महालक्ष्मी स्वरूपा, **816. मदोज्झिता –** मद से रहित, **817. यशस्विनी**–उत्तम यश से युक्त, **818. यशोदा–** सुयश देने वाली, **819. योग्या –** सब प्रकार से सुयोग्य, **820. युक्तात्मासेविता –** जितात्मा पुरुषों द्वारा सेवित।

821. योगसिद्धिप्रदा– योगसिद्धि देने वाली, **822. याच्या –** प्रार्थनीया, **823. यज्ञेशपरिपूरिता –** यज्ञेश्वर विष्णु से व्याप्त, **824. यज्ञेशी–** यज्ञ की अधिष्ठात्री देवी, **825. यज्ञफदा–** स्मरण करने पर यज्ञों का फल देने वाली, **826. यजनीया–** पूजनीया, **827. यशस्करी–** यश देने वाली , **828. यमिसेव्या–** संयमी पुरुषों द्वारा सेवन करने योग्य **829. योगयोनिः –** योग की उत्पत्ति का स्थान , **830. योगिनी–** योग को जानने वाली, **831. युक्तबुद्धिदा–** योगयुक्त बुद्धि देने वाली, **832. युक्ता –** मन और इन्द्रियों को संयम में रखने वाली, **834. यमाद्यष्टांगयोगयुक् –** यम, नियम आदि आठ अंगों वाले योग से युक्त ।

835. यन्त्रिताघौघसंचारा– पापराशियों के संचार को नियन्त्रित करने वाली,

836. यमलोकनिवारिणी – यमलोक का निवारण करने वाली, **837. यातायातप्रशमनी** – आवागमन अथवा जन्म –मृत्यु का कष्ट दूर करने वाली, **838. यातनानामकृन्तनी** – यातना का नाम–निशान मिटाने वाली , **839. यामिनीशहिमाच्छोदा** – चन्द्रमा और बर्फ के समान स्वच्छ एवं शीतल जल वाली, **840. युगधर्म विवर्जिता** – कलियुगधर्म – हिंसा और असत्य आदि से सर्वथा रहित, **841. रेवती**– रेवती नामक नक्षत्र स्वरूपा, **842. रतिकृत्**– भगवान के प्रति अनुराग रखने वाली, **843. रम्या**– रमणीया, **844. रत्नगर्भा** – अपने भीतर रत्न धारण करने वाली, **845. रमा**– लक्ष्मीरूपा, **846. रतिः** – अनुरागरूपा ।

847. रत्नाकरप्रेमपात्रम् – रत्नाकर समुद्र की प्रीतिपात्र, **848. रसज्ञा** – रस को जानने वाली, **849. रसरूपिणी**– रस स्वरूपा, **850. रत्नप्रासादगर्भा** – जिसके भीतर रत्नमय देवालय शोभा पा रहे हैं , **851. रमणीयतरंगिणी**– रमणीय लहरों से युक्त, **852. रत्नार्चिः**– रत्नों के समान कान्तिमती, **853. रुद्ररमणी**– भगवान् रुद्र की जटा में रमण करने वाली, **854. रागद्वेषविनाशिनी**– राग और द्वेष का नाश करने वाली ।

855. रमा – नेत्र और मन को रमाने वाली, **856. रामा**– मनोहर स्त्री अथवा योगियों के मन को रमाने वाली, **857. रम्यरूपा** – रमणीय रूप वाली, **858. रोगिजीवानुरूपिणी**– संसार–रोग से ग्रस्त पुरुषों के लिए संजीवन औषधिरूपा । **859. रुचिकृत्** – प्रकाश करने वाली, **860. रोचनी** – अपने दर्शन की रुचि उत्पन्न करने वाली, **861. रम्या** – रमा की हितकारिणी, **862. रुचिरा** – मनोहर रूपवाली, **863. रोगहारिणी**– संसाररूपी रोग का नाश करने वाली, **864. राजहंसा** – शोभायमान हंसों से युक्त, **865. रत्नवती** – अनेक प्रकार के रत्नों से संयुक्त, **866. राजत्कल्लोराजिका** – शोभाशाली तरंगमालाओं से युक्त, **867. रामणीयकरेखा** – जिसकी जलधारा रमणीयता की रेखा है , **868. रुजारिः** – रोगों की शत्रुभूता, **869. रोगरोषिणी**– रोगों पर रोष प्रकट करने वाली, **870. राका** – पूर्णमासीस्वरूपा, **871. रंकार्तिशमनी** – दीन–दुखियों की दैन्यवेदना शान्त करने वाली, **872 रम्या** – रमणीया, **873. रोलम्बराविणी**– भ्रमरों के गुंजार के समान जल की कलकल ध्वनि करने वाली । **874. रागिणी** – भगवान् के प्रति अनुराग रखने वाली, **875. रंजितशिवा** – अपनी सन्निधि से भगवान् शिव को प्रसन्न करने वाली,

876. रूपलावण्यशेवधिः– सौन्दर्य और कान्ति की निधि, **877. लोकप्रसूः** –

लोकमाता, **878. लोकवंद्या**– सम्पूर्ण विश्व के लिए वन्दनीया, **879. लोलत्कल्लोल मालिनी**– चंचल लहरों की श्रेणियों से सुशोभित। **880. लीलावती**– सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार की लीला करने वाली, **881. लोकभूमिः** – सम्पूर्ण भुवनों की आधार, **882. लोकलोचनचन्द्रिका** – लोगों के नेत्रों में चांदनी की भांति आह्लाद उत्पन्न करने वाली, **883. लेखस्रवन्ती** – देवनदी, **884. लटमा** – भगवत्प्रेम के लिए लोलुप– सी प्रतीत होने वाली, **885. लघुवेगा** – शीतकाल में लघु वेग वाली।

886. लघुत्वहृता – भक्तों की लघुता दूर करने वाली, **887. लास्यत्तरंगहस्ता** – नृत्य–सा करती हुई चंचल लहरें जिसके लिए मानों हाथ हैं , **888. ललिता** – मनोहर रूपवाली, **889. लयभंगिगा** –लय–नृत्य, गति और वाद्य की समता की भंगी 'अन्दाज' से चलने वाली , **890. लोकबन्धुः** – सम्पूर्ण जगत् का बन्धु की भांति हित चाहने वाली, **891. लोकधात्री** – माता की भांति विश्व का पालन–पोषण करने वाली, **892. लोकोत्तरगुणोर्जिता** – अलौकिक गुणों से बढ़ी –चढ़ी । **893. लोकत्रयहिता** – तीनों लोकों का हित करने वाली, **894. लोका** – लोकस्वरूपा, **895. लक्ष्मीः** – लक्ष्मीस्वरूपा, **896. लक्षणलक्षिता** – शुभ लक्षणों से उपलक्षिता, **897. लीला**– भगवत्क्रीड़ास्वरूपा, **898. लक्षितनिर्वाणा**– मोक्ष का साक्षात्कार करने वाली, **899. लावण्यामृतवर्षिणी**– लावण्यमय अमृत की वर्षा करने वाली। **900. वैश्वानरी** – अग्निस्वरूपा।

901. वासवेड्या – इन्द्र के द्वारा स्तवन करने योग्य, **902. वंध्यत्वपरिहारिणी**– वंध्यापनका निवारण करने वाली, **903. वासुदेवाङ्.घ्रिणुघ्नी**– भगवान् विष्णु के चरणों की धूलि को धो लेने वाली, **905. शुभावती** – मंगलमयी, **906. शुभफला**– शुभफल देने वाली, **907. शान्तिः**– शान्तिस्वरूपा, **908. शान्तनुवल्लभा** – राजा शान्तनु की प्रिय पत्नी, **909. शूलिनी**– त्रिशूल धारण करने वाली, **910. शैशवव्या**–बाल्यावस्था से युक्त, **911. शीतलामृतवाहिनी** – शीतल जल की धारा बहाने वाली, **912. शोभावती**– शोभायमान,**913. शीलवती**– सुशीला, 914. **शोषिताशेषकिल्बषा** – सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली, **915. शरण्या**– शरण लेने योग्य, **916. शिवदा** – कल्याणदायिनी।

917. शिष्टा – श्रेष्ठा, **918. शरजन्मप्रसूः** – कार्तिकेय की जननी, **919. शिवा** – कल्याणस्वरूपा , **920. शक्ति :** – शक्तिस्वरूपा , **921. शशांक विमला**– चन्द्रमा के समान उज्ज्वल वर्णवाली, **922. शमनस्वसृसम्मता** – यमराज की बहिन यमुना की प्रिय

सखी, **923. शमा** – अज्ञान का नाश करने वाली , **924. शमनमार्गघ्नी** – यमलोक के मार्ग का निवारण करने वाली, **925. शितिकण्ठमहाप्रिया**– नीलकण्ठ महादेव जी की अत्यन्त वल्लभा ।

926. शुचिः – पवित्रा, **927. शुचिकरी** – पवित्र करने वाली, **928. शेषा** – प्रलय के समय भी शेष रहने वाली– ब्रह्म स्वरूपा, **929. शेषशाश्पिदोभ्दवा** – शेषनाग की शय्या पर शयन करने वाले भगवान् विष्णु के चरणबिन्दों से प्रकट हुई , **930. श्रीनिवासश्रुतिः** – भगवान् विष्णु से जिनका प्रादुर्भाव सुना जाता है, **931.श्रद्धा** – अस्तिक्य बुद्धिरूपा, **932. श्रीमती** – शोभायुक्त, **933. श्रीः** – लक्ष्मीस्वरूपा, **934. शुभव्रता** – शुभव्रतवाली , **935. शुद्धविद्या** – ब्रह्मविद्यास्वरूपा, **936. शुभवर्ता –उत्तम** भंवरवाली, **937. श्रुतानन्दा** – श्रवणमात्र से आनन्द देने वाली, **938. श्रुतिस्तुतिः** – वैदिक मंत्रों द्वारा जिसकी स्तुति की जाती है , **939. शिवेतरघ्नी**– अमंगलकारी पापों का नाश करने वाली, **940. शबरी** – किरात रूपधारी भगवान महेश्वर की प्रिया । **941. शाम्बरीरूप धारणी**– मायामय रूप धारण करने वाली ।

942. श्मशानशोधनी – काशी की महाश्मशानभूमि को शुद्ध करने वाली, **943. शान्ता** – शान्त स्वरूपा , **944. शाश्वत्** – सनातनी , **945. शतधृतिस्तुता**– ब्रह्मा जी द्वारा अभिवन्दित, **946. शालिनी**– शोभायमान, **947. शालिशोभाढ्या** – धान के हरे–भरे पौधों को गर्भ में धारण करने वाली, **949. शंसनीयचरित्रा** – स्तवन करने योग्य दिव्य चरित्रों वाली, **950. शातिताशेषपातका** – समस्त पातकों का नाश करने वाली, **951. पकंणौश्वर्यसम्पन्ना** – ऐश्वर्य , धर्म, यश, श्री तथा वैराग्य – इन छः प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न , **952. षड्कंश्रतिरूपिणी**– शिक्षा, व्याकरण, छन्द , निरुक्त, ज्योतिष तथा कल्प – ये वेद के छः अंग तथा वेद जिसके स्वरूप हैं ।

953. षण्ढताहारिसलिला – नपुंसकता एवं निर्वीर्यता आदि दोष दूर करने में समर्थ जलवाली, **954. स्त्यायन्नद नदीशता** – जिसमें सैकड़ों नद और नदियां कल–कल नाद के साथ आकर मिलती हैं , **955. सरिद्वारा** –नदियों में श्रेष्ठ, **956. सुरसा** – उत्तम रस से युक्त , **957. सुप्रभा** – सुन्दर प्रभा वाली, **958. सुरदीर्घिका** – देवताओं की बाबजी । **959. स्वःसिन्धुः** – स्वर्ग लोक की नदी **960. सर्व दुःखघ्नी** – सबके दुःखों का नाश करने वाली , **961. सर्वव्याधि महौषधम्** – समस्त रोगों की एकमात्र महौषधि, **962. सेव्या**– सेवन करने योग्य, **963. सिद्धि** : अणिमा आदि अष्टसिद्धि स्वरूपा ,

964. सती – पतिव्रता , **965. सूक्तिः**– शुभ उक्तिरूपा , **966. स्वकन्दस्**:– कार्तिकेय जननी, **967. सरस्वती** – वाणी की अधिष्ठात्री देवी , **968. सम्पतरागिणी**– सम्पत्ति रूप लहरों वाली, **969. स्तुत्या** – स्तवन करने योग्य।

970. स्थाणुमौलिकृतालय– भगवान् शंकर के मस्तक को अपना निवास स्थान बनाने वाली, **971. स्थैर्यदा** – स्थिरता प्रदान करने वाली, **972. सुभगा**– उत्तम ऐश्वर्य से युक्त , **973. सौख्या** – सुख देने वाली, **974. स्त्रीषु सौभाग्यदायिनी** – स्त्रियों को सौभाग्य प्रदान करने वाली । **975. स्वर्गनिःश्रेणिका** – स्वर्गलोक में जाने के लिए सीढ़ी।

976. सूक्ष्मा – इन्द्रियों की पहुंच से परे स्थित, सूक्ष्मस्वरूपा, **977. स्वधा**– पितृतृप्तिस्वरूपा, **978. स्वाहा**– हव्यस्वरूपा, **979. सुघाजला**– अमृत के समान मधुर जल वाली, **980. समुद्ररूपिणी** – समुद्ररूपा, **981. स्वगर्या** – स्वर्गलोक की प्राप्ति में सहायक, **982. सर्वपातकवैरिणी** – समस्त पापों की शत्रु , **983. स्मृताघहारिणी** – स्मरण करने पर स्मस्त पापों का संहार करने वाली, **984. सीता** – सीता नामवाली गंगा, जनकनन्दिनी स्वरूपा, **985. संसाराब्धितरण्डिका** – संसार सागर से पार उतारने के लिए नौका रूप, **986. सौभाग्यसुन्दरी** – अतिशय सौभाग्य से परम सुन्दर प्रतीत होने वाली, **987 संध्या** –संध्याकाल में उपास्य गायत्री रूपा। **988. सर्वसारसमन्विता** – समस्त शक्तियों से संयुक्त । **989. हरप्रिया** – भगवान शिव की वल्लभा।

990. हृषीकेशी– इन्द्रियों की स्वामिनी अथवा हृषीकेशी भगवान् विष्णु की पत्नी । **991. हंसारूपा** – शुद्धस्वरूपा, हंसरूपधारिणी, **992. हिरयण्मयी**– स्वर्गमयी, ज्ञानस्वरूपा, **993. हताघ संघा** – पापराशियों का विनाश करने वाली , **994. हितकृत् हित**–साधन करने वाली, **995. हेला** – एक प्रकार की श्रृंगार अनित चेष्टा , **996. हेलाघगर्वहत्** – लीलापूर्वक पापका घमण्ड चूर करने वाली, **997. क्षेमदा** – कल्याणदायिनी, **998. क्षालिताघौघा**– पाप राशि को धो डालने वाली, **999. क्षुद्रविद्राविणी** – दुष्टों को मार भगाने वाली, **1000. क्षमा** – सहनशीला, पृथ्वी स्वरूपा । अगस्त्य जी ! इस प्रकार गंगाजी के सहस्त्र नामों का कीर्तन करके मनुष्य गंगा स्नान का उत्तम फल पा लेता है ।

यह गंगा सहस्त्र नाम सब पापों का नाश और सम्पूर्ण विघ्नों का निवारण करने वाला है। समस्त स्तोत्रों के जप से इसका जप श्रेष्ठ है। यह सबको पवित्र करने वाली वस्तुओं को भी

पवित्र करने वाला है। श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करने पर यह मनोवांच्छित फल देने वाला है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति कराने वाला है। मुने ! इसका एक बार पाठ करने से भी एक यश का फल प्राप्त होता है। गंगा सहस्त्र नाम आयु तथा आरोग्य देनेवाला और सम्पूर्ण उपद्रवों का नाश करने वाला है।

यह मनुष्यों को सब प्रकार की सिद्धि देने वाला है। जो इस स्तुति का पाठ करता है, उसे सदाचारी जानना चाहिए। वह सदा पवित्र है तथा उसने सम्पूर्ण देवताओं की पूजा सम्पन्न कर ली है। उसके तृप्त होने से साक्षात् गंगा तृप्त हो जाती है। अतः सर्वथा प्रयत्न करके गंगाजी का पूजन करें। जो गंगा जी के इस स्तोत्रराज का श्रवण और पाठ करता है या दम्भ और लोभ से रहित होकर उनके भक्तों को सुनता है, वह मानसिक, वाचिक और शारीरिक तीनों प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है तथा पितरों का प्रिय होता है। जिसके घर में गंगाजी का यह स्तोत्र लिखकर इसकी पूजा की जाती है, वहां पाप का कोई भय नहीं है। वह घर सदा पवित्र है।

भागीरथी गंगा के संरक्षण के लिए आमरण अनशन पर बैठे डॉ. जी.डी. अग्रवाल

वेदों में नदी का महत्व

नद्य 'नदी ऋषिका' कुछ वैदिक ऋचाओं में ऋषित्व भी दृष्टिगोचर होता जैसे ऋग्वेद के मण्डल के सूत 3. 33 में नदियां ऋषिका । देवता रूप में नदियों को स्वीकार किया गया है । ऋग्वेद 3.33 के ऋषि विश्वामित्र हैं, किन्तु विश्वामित्र और नदियों के संवाद में जो ऋचाएं नदियों द्वारा विश्वामित्र को सम्बोधित हैं, उनमें नदियों का ऋषित्व झलकता है ।

बन्धन से विमुख होकर हर्षयुक्त नाद करते हुए दो घोड़ियों की भांति अथवा अपने बछड़ों से सस्नेह मिलन के लिए उतावली, दो गायों की भांति विपाट् 'व्यास' शुतुद्रि 'सतलज' नाम की नदियां पर्वत की गोद से निकलकर समुद्र से मिलने की अभिलाषा के साथ प्रबल वेग से प्रवाहित हो रही हैं।

हे नदियों ! आप दोनों इन्द्र द्वारा प्रेरित होकर सम्यक् रूप से अनुकूलतापूर्वक प्रवाहमान हों। हे उज्ज्वला ! अपनी तरंगों से सबको तृप्त करती हुई आप धन्य उत्पत्ति में समर्थ हों । दो रथियों के समान समुद्र की ओर गमन करें । ऋषि विश्वामित्र कहते हैं कि हम स्नेह–सिक्त मातृ–तुल्य सतलज नदी के पास गये। और विपुल ऐश्वर्य–राशि से सम्पन्न विपाषा नदी के पास गये। बछड़े के प्रति स्नेहाभिलाषिणी गौओं के समान ये नदियां एक ही लक्ष्य–स्थान समुद्र की ओर सतत बहती हुई जा रही हैं । हम नदियां अपने जल–प्रवाह से सबको तृप्त करती हुई देवों द्वारा स्थापित स्थान की ओर बहती हुई जा रही हैं । अनवरत प्रवहमान हम अपने प्रयास से कभी विश्राम नहीं लेती हैं 'यह तो हमारा सहज सामान्य क्रम है ' फिर ब्राह्मण विश्वामित्र द्वारा हमारी स्तुति क्यों की जा रही है?

हे जलवती नदियो ! आप हमारे नम्र और मधुर वचनों को सुनकर अपनी गति एक क्षण के लिए विराम दे दें । हम कुशिक पुत्र अपनी रक्षा के लिए महती स्तुतियों द्वारा आप नदियों का भली प्रकार सम्मान करते हैं ।

हे विश्वामित्र ! वज्रधारी इन्द्रदेव ने हमें खोदकर उत्पन्न किया। नदियों के प्रवाह को रोकने वाले वृत्र को उन्होंने मारा । सबसे प्रेरक उत्तम हाथों वाले और दीप्तमान्

इन्द्रदेव ने हमें बढ़ने के लिए प्रेरित किया । उनकी आज्ञा के अनुसार ही हम जल से परिपूर्ण होकर गमन करती हैं।

इन्द्रदेव ने अहि नामक असुर को मारा, उनके वे पराक्रम और क्रम सर्वदा वर्णनीय हैं। जब इन्द्रदेव ने अपने चारों ओर स्थित असुरों को मारा, तब जल-प्रवाह समुद्र से मिलने की इच्छा करते हुए प्रवाहित हुआ ।

हे स्तोता 'विश्वामित्र' ! अपने ये स्तुति वचन कभी भूलना नहीं। भावी समय में यज्ञों में इन वचनों की उद्घोषणा द्वारा आप हमारी सेवा करें । हम दोनों नदियां आपको नमस्कार करतीं हैं। पुरुषों द्वारा सम्पादित कर्मो में कभी भी हमारी उपेक्षा न करें ।

हे भगिनी रूप दोनों नदियो ! हमारी स्तुति भली प्रकार सुनें। हम आपके पास अति दूरस्थ देश से रथ और शकट को लेकर आये हैं। आप अपने प्रवाहों के साथ इतनी झुक जायें कि रथ की धुरी से नीचे हो जायें, जिससे हम सरलता से पार हो जायें।

हे स्तोता ! हम दोनों नदियां आपकी स्तुतियां सुनती हैं। आप दूरस्थ देश से रथ और

राष्ट्रीय जल बिरादरी के सदस्य भागीरथी गंगा के तट पर

शकट के साथ आए हैं, इसलिए जैसे माता पुत्र को स्तन –पान कराने के लिए अवनत होती है अथवा धर्मपत्नी अपने पति के प्रति नम्र होती है, वैसे ही हम आपके लिए अवनत होती हैं, अपने प्रवाह को कम करके आपको जाने का मार्ग प्रदान करती हैं।

हे दोनों नदियों ! जब पोषकर्ता पुरुष आपको पार करना चाहे, तब आपको पार करने के अभिलाषी वे जन–समूह इन्द्रदेव द्वारा प्रेरित होकर आपकी अनुकम्पा से पार हो जायें। आप पूजने योग्य हैं। हम प्रतिदिन आपके वेगवान् जल–प्रवाहों की उत्तम स्तुतियां करते हैं।

हे नदियों ! भरण पोषण को लक्ष्य करके आपके पार जाने के अभिलाषीजन पार हो गए। ज्ञानीजनों ने आपके निमित्त उत्तम स्तुतियों को अभिव्यक्त किया। आप अन्नों की प्रदात्री और उत्तम ऐश्वर्यवती होकर नहरों को जल से परिपूर्ण करें और शीघ्र गमन करें । हे नदियों ! आपकी तरंगें रथ की धुरी से टकराती रहें । हे दुष्कर्महीना, पापरहिता, अनिन्दनीया नदियो! आपको कोई बाधा न हो ।

हे सरिताओं ! आप भली प्रकार से सदैव गतिशील रहने वाली हैं। मेघों का ताड़ित होने, बरसने के बाद आप जो कल–कल ध्वनि नाद कर रही हैं, इसीलिए आपका नाम 'नदी' पड़ा। वह नाम आपके अनुरूप ही है।

राष्ट्रीय नदी गंगा का जल बिरादरी द्वारा संरक्षण अभियान

तरुण भारत संघ

भीकमपुरा-किशोरी, थानागाजी, अलवर (राजस्थान)

फोन : 01465-225043

email : waternantbs@yahoo.com